खंड 2

मानव विज्ञान और पर्यटन में उभरती प्रवृत्तियां (ट्रेंड)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 6	पर्यटन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था	83
इकाई 7	पर्यटन बनाम धरोहर स्थल	96
इकाई 8	मूर्त और अमूर्त धरोहर	109
इकाई 9	पर्यावरणीय पर्यटन	123
इकाई 10	पर्यटन मानवविज्ञान की नई दिशाएँ	138
	सुझावित अध्ययन	150

इकाई 6 पर्यटन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था*

इकाई की रूपरेखा

6.0 परिचय

6.1 राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण से अध्ययन की आवश्यकता

6.2 राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण

6.2.1 पर्यटन और मूल–गंतव्य/नगरीय गतिशीलता

6.3 पर्यटन, वैश्वीकरण और 'नई' राजनीतिक अर्थव्यवस्था

6.4 राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण की सीमायें

6.5 सारांश

6.6 संदर्भ

6.7 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद शिक्षार्थी निम्न बातें समझने में सक्षम होंगेः

- पर्यटन अध्ययन में राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण;
- वैश्वीकरण के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन परिदृश्य; तथा
- मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के साथ पर्यटन उद्योग कैसे बदल गया।

6.0 परिचय

पर्यटन को अक्सर दुनिया के सबसे बड़े उद्योग के रूप में जाना जाता है। अकेले अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन से 450 अरब अमेरीकी डॉलर से अधिक का उत्पादन होता है जबकि कुल वैश्विक पर्यटन गतिविधि (अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू) का अनुमानित मूल्य 3.5 खरब अमेरीकी डॉलर के बराबर है। पर्यटन को एक विकास उद्योग के रूप में मान्यता दी गई है और ऐसी उम्मीद है कि 2020 तक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन 2 खरब अमेरीकी डॉलर प्रति वर्ष उत्पादन करेगा (शार्ले और टेल्फ़र 2002:1)। पर्यटन को सामाजिक और आर्थिक विकास के अभिन्न अंग के रूप में देखा जाने लगा है और इस कारण से कई देशों ने पर्यटन स्थलों को आकर्षित बनाने के लिए पर्यटन विकास नीतियों को अपनाया है। इस इकाई में हम राजनीतिक अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण पर चर्चा करेंगे और यह भी देखेंगे की यह कैसे पर्यटन अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हो गया ।

6.1 राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण अध्ययन की आवश्यकता

पर्यटन जो कि विदेशी मुद्रा आय, रोजगार सृजन और अर्थव्यवस्था के विविधीकरण के लाभों को शामिल करता है, की पर्यटन साहित्य में व्यापक रूप से चर्चा की गई है और

***योगदानकर्ता :** डॉ. गुंजन अरोड़ा, पोस्ट–डॉक्टोरल फैलो,सेंटर फार सोशल मेडिसिन एंड क्म्यूनिटी हेल्थ, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, जेएनयू, नई दिल्ली

इसे पर्यटन को विकास के साधन के रूप में देखा जाता है। पर्यटन के विकास का पालन करने वाले आर्थिक लाभों की चर्चा विकास साहित्य और पर्यटन पर किए गए अध्ययनों में की गई है। इसी तरह, नकारात्मक पर्यावरणीय और सामाजिक–सांस्कृतिक परिणामों पर शोध और चर्चा ने स्थायी पर्यटन विकास की आवश्यकता को चित्रित किया है। नब्बे के दशक के दौरान, पर्यटन से संबंधित नीतियों के प्रति दृष्टिकोण में समग्र परिवर्तन हुआ। तात्कालिक लक्ष्य यह था कि मेजबान समुदायों और पर्यटकों के लिए पर्यटन के लाभों को समान रूप से अधिकतम करना, जबकि मेजबान समुदाय पर सामाजिक प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, विशेष रूप से पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभावों को भी कम करना था।

उदाहरण के लिए, यहां तक कि पहाड़ों पर ट्रेकिंग और एवरेस्ट जैसी चोटियों पर चढ़ने जैसी गतिविधियों से पता चला था कि स्थानीय पर्यावरण के लिए इस तरह की गतिविधियाँ विनाशकारी हो सकती हैं। पर्यटक बड़ी मात्रा में प्लास्टिक कचरा लाते हैं, पानी और खाद्य संसाधनों का अत्यधिक उपयोग करते हैं। कई विकासशील देशों के लिए पर्यटन अक्सर विदेशी मुद्रा आय का एक प्रमुख स्रोत होता है जबकि विकसित देशों के लिए अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन से होने वाली आय भुगतान के संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान देती है। पर्यटन उद्योग के समर्थन में व्यापक रूप से उद्धृत औसत दर्जे का आर्थिक लाभ पर्यटन को सरलीकृत शब्दों में विकास के लिए एक सफल प्रतिमान के रूप में देख सकता है। दूसरे शब्दों में, यदि कोई केवल मौद्रिक लाभों को मानता है, तो सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रभावों को नजरअंदाज करने का एक बड़ा खतरा है जो ज्यादातर नकारात्मक हैं।

उद्योग के रूप में पर्यटन एक स्वस्थ विकास को दर्शाता है और इसे एक सुरक्षित विकास विकल्प माना जाता है। लेकिन स्टीफन ब्रिटन (1981,1982) और मोसेडेल (2011, 2016) जैसे विद्वानों ने एक वैकल्पिक सोच निर्मित की है, जिसके अनुसार विकास में पर्यटन के योगदान पर साहित्य को केवल लागत–लाभ विश्लेषण पर संक्षिप्त रूप से परिभाषित किया गया है और पर्यटन के सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों पर गलत टिप्पणी की गई है। पर्यटन के फायदे और नुकसान पर इस तरह की बहस देश की राजनीतिक और ऐतिहासिक स्थितियों से अलग करती है और इस प्रकार एक संकीर्ण (माओपिक) दृष्टिकोण प्रदान करती है। अधिक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण के लिए, पर्यटन परिदृश्य में होने वाले शक्ति पदानुक्रमों और असमान आदान–प्रदान की जांच करने के लिए राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर सिद्धांतों को संलग्न करने की आवश्यकता है। बिआंची (2015), क्लेंसी (1999), हज़बून (2008), मोसेडेल (2011),स्टीनर (2006) और विलियम्स (2004); जैसे विद्वानों ने पर्यटन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था के उप–विषय के विकास में योगदान दिया है। विद्वनों ने गरीबी और असमानता के मुद्दों पर राष्ट्रों के बीच और साथ ही अविकसितता के संवाद के भीतर पर्यटन की जांच करने की आवश्यकता पर विचार किया है। दूसरे शब्दों में, यह पूछा जाता है कि ,क्यों पर्यटन जो कई गरीब देशों को कई लाभ पहुंचाता है, पहले से मौजूद असमानताओं और आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को खत्म करने के रुप में भी देखा जाता है। इसलिए, यह विशेष रूप से तीसरी दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं में पर्यटन उद्योग में निहित असमानता और हाशिए के अंतर्निहित तंत्र को समझने के लिए आवश्यक है जो पर्यटन को विकास की रणनीति के रूप में बढ़ावा देते हैं। राजनीतिक अर्थव्यवस्था का दृष्टिकोण, विशेष रूप से पर्यटन के संबंध में, इस आधार पर आधारित है कि पर्यटन इस तरह से विकसित हुआ है कि यह उपनिवेशवाद और आर्थिक निर्भरता के ऐतिहासिक स्वरूप से मेल खाता है। यह देखा जाता है कि धनी राष्ट्र उन गरीब लोगों की कीमत पर विकसित होते हैं, जो पहले के उपनिवेश और उपनिवेशवादी देशों के बीच पदानुक्रम की नकल करते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

1. नब्बे के दशक के दौरान पर्यटन नीतियों का लक्ष्य क्या था?

.....

.....

.....

2. पर्यटन में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अध्ययन की क्या आवश्यकता है?

.....

.....

.....

3. पर्यटन में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अध्ययन का आधार क्या है?

.....

.....

.....

6.2 राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण

राजनीतिक अर्थव्यवस्था में सामाजिक–आर्थिक बलों और शक्ति संबंधों का अध्ययन शामिल है जिससे बाजार के लिए वस्तुओं के उत्पादन की प्रक्रिया और इससे विभाजन, संघर्ष और असमानताएं उत्पन्न होती है। इस दृष्टिकोण की जड़ें औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए बदलावों और 18 वीं और 19 वीं शताब्दियों के दौरान पश्चिमी यूरोप में पूंजीवाद के विकास से उत्पन्न होती हैं (बियांची 2018:88)। अपने शुरुआती दौर में राजनीतिक अर्थव्यवस्था का अध्ययन, जैसा कि इसके संस्थापक विचारकों जैसे एडम स्मिथ (1723–1790), डेविड रिकार्डो (1772–1823) और जे.एस. मिल (1806–1873) ने औद्योगिक समाजों के सामाजिक संगठन पर पूंजीवाद के प्रभाव पर प्रकाश डालकर किया था। वे धन के उत्पादन और संचय (यानी, अर्थव्यवस्था) और वितरण (राजनीतिक आयाम) से चिंतित थे। बाद में मार्क्स (1818–1883) और एंगेल्स (1820–1895) ने सामाजिक वर्गों में धन के वितरण (या वितरण की कमी) पर ध्यान केंद्रित करके राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित किया। राजनीतिक अर्थशास्त्री जटिल और परिवर्तनशील आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, तकनीकी और सांस्कृतिक शक्तियों का अध्ययन करते हैं, जो घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के संगठन और गतिशीलता को आकार देते हैं (गिलपिन 2001: 40)। पर्यटन विकास के संबंध में पर्यटन के विभिन्न क्षेत्रों पर किए गए अध्ययनों ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण को ध्यान में नहीं रखा। यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पर्यटन पर मूल अध्ययन सांस्कृतिक, सौंदर्य और आर्थिक आयामों पर केंद्रित है और सभी मानव स्थितियों में निहित शक्ति समीकरणों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

यह बहुत बाद में 1960 के दौरान और 1970 के दशक की शुरुआत में, दुनिया भर में असमान विकास पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें असमानताओं और अन्य सामाजिक समस्याओं को केन्द्र में रखकर प्रमुखता के साथ विकास सिद्धांत पर महत्वपूर्ण शोध किया गया था। इसके साथ ही 1970 के दौरान यंग्स का, *टूरिज्मः ब्लेसिंग या ब्लाइट* (1973) और डे कद्ट् के *टूरिज्मः पासपोर्ट टू डेवलपमेंट* (1979) ने काम के साथ पर्यटन अध्ययनों

का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण किया गया था। इन दोनों कार्यों ने विकास और निर्भरता के सिद्धांत और राजनीतिक अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से पर्यटन पर ध्यान केंद्रित करके पर्यटन के लाभ और हानि का गंभीर रूप से विश्लेषण किया है।

> *प्रतिबिंब*
>
> निर्भरता प्रतिमान, जिसे अविकसित सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है, 1960 के आधुनिकीकरण सिद्धांत की आलोचना के रूप में प्रमुखता में आया। आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार देश का सामाजिक–आर्थिक विकास एक पारंपरिक समाज से आधुनिक समाज तक बढ़ने वाले विकासवादी मार्ग का अनुसरण करता है; ग्रामीण अर्थव्यवस्था से शहरी अर्थव्यवस्था तक विकास और कृषि से औद्योगिक समाज की ओर बदलाव। यह आगे कहता है कि एक देश जो अपनी पारंपरिक संरचना को बनाए रखता है वह अविकसितता की अभिव्यक्ति है।

निर्भरता सिद्धांत का मुख्य विषय विकास और विकासशील के बीच का संबंध है। निर्भरता सिद्धांतकारों का तर्क है कि विकासशील देशों के पास एक बाहरी और आंतरिक राजनीतिक, संस्थागत और आर्थिक संरचनाएं हैं जो उन्हें विकसित देशों के सापेक्ष निर्भर स्थिति में रखती हैं। जब विकासशील और विकसित देश वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में एक साथ आते हैं, तो यह देखा जाता है कि विकासशील देश (छोटे) विकसित राष्ट्रों (मुख्य) की अर्थव्यवस्था को पोषित कर रहे हैं। इस प्रकार निर्भरता सिद्धांतकारों के अनुसार, वैश्विक पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं में परिधीय/छोटे/विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को शामिल करते हुए, न केवल केंद्र में मांगों पर संरेखित करने के लिए उत्पादन होता है बल्कि प्रमुख देशों में आर्थिक अधिशेष के लिए शोषण भी होता है। जैसा कि केंद्र में प्रमुख देश उस अधिशेष के आधार पर उसे विकसित करना जारी रखते हैं, विकासशील (परिधि) देश अविकसितता से संघर्ष करते है। निर्भरता और अविकसित सिद्धांत से उपजी राजनीतिक अर्थव्यवस्था ने पर्यटन अध्ययन अनुसंधान में बहुत कम ध्यान दिया है। यह ब्रिटान (1982) था जिसने इस दृष्टिकोण के महत्व को महसूस किया और पूंजीवादी संरचनाओं को समझने की कोशिश की, जो न केवल पर्यटन विकास को बढ़ावा देती हैं, बल्कि उनके साथ असमानताएं भी हैं जो विकास के असमान स्वरूप में दिखाई देती हैं।

दूसरी ओर निर्भरता प्रतिमान यह भी तर्क देता है कि एक समाज में यह आंतरिक कारक नहीं हैं जो अविकसितता की ओर ले जाते हैं, बल्कि यह बाहरी राजनीतिक, संस्थागत और सामाजिक आर्थिक संरचनाएं हैं जो विकासशील देशों को विकसित देशों के सापेक्ष एक निर्भर स्थिति में रखती हैं। ए. फ्रैंक (1967) ने अपने काम *कैपिटलिज़्म एंड अंडर डेवलपमेंट इन लैटिन अमेरिका* में अविकसितता ने वैश्विक आर्थिक प्रणाली को दो ध्रुव–एक विकसित 'महानगरीय केंद्र' और एक अविकसित 'परिधि' के रूप में वर्णित किया। छोटे परिधि से ली गई कच्ची सामग्री को केंद्र में निर्मित वस्तुओं में परिवर्तित किया जाता है और फिर वापस परिधि में निर्यात किया जाता है। परिधि तब अपने कच्चे माल की खरीद के लिए केंद्र पर निर्भर हो जाती है और बदले में निर्मित सामान भी खरीद लेती है, जिसके परिणामस्वरूप परिधि से केंद्र तक पूंजी का प्रवाह होता है। इसे रिसाव के रूप में जाना जाता है। निर्भरता सिद्धांतकार मूल और परिधि के बीच इस निर्भरता के बारे में चर्चा करते हैं।

6.2.1 पर्यटन और मूल–गंतव्य/नगरीय गतिशीलता

निर्भरता सिद्धांत का उपयोग पर्यटक उत्पादक केंद्र (ज्यादातर पश्चिमी) यानी मूल और विकासशील दुनिया में परिधि स्थलों के बीच संबंधों का वर्णन करने के लिए किया गया

है। सिद्धांतकारों ने तर्क दिया है कि 'केंद्र' न केवल दुनिया के पर्यटकों के लिए घर हैं, बल्कि आर्थिक, राजनीतिक और वाणिज्यिक हितों के लिए भी हैं जो उद्योग को नियंत्रित करते हैं। निर्भरता सिद्धांत जो पर्यटन अनुसंधान में अग्रणी तर्कों में से एक रहा है, का यह विचार है कि विकासशील देश आर्थिक लाभ उत्पन्न करने, रोजगार और व्यवसाय बनाने और उनके जीवन स्तर में सुधार की आशा के साथ पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। वे अंतरराष्ट्रीय पर्यटन बाजार में प्रवेश करते हैं और बाहरी ताकतों पर निर्भर हो जाते हैं।

ब्रिटान का फिजी (1981,1982) पर काम, उन प्रमुख कार्यों में से एक है जो पर्यटन उत्पादन केंद्र और गंतव्य (परिधि) और इसके परिणामों के बीच इस निर्भरता को उजागर करता है। उन्होंने विस्तार से बताया कि परिधि में पर्यटन विकास को व्यवस्थित और नियंत्रित करने वाले महानगरों द्वारा तीसरे विश्व स्थलों का किस तरह से शोषण किया जाता है। उनके पर्यटन के 'एन्क्लेव मॉडल' में गंतव्य अर्थव्यवस्था इंगित करती है की महानगरीय उद्यम गंतव्य में पेश किए जाने वाले पर्यटक अनुभव के रूप और विशेषताओं को निर्धारित करते हैं। महानगरीय फर्म सेवाओं और उत्पादों की मालिक होती है और उसे प्रदान करती है। ब्रिटान अपने शोधपत्र '*टूरिज्म, डिपेंडेंसी एंड डेवलपमेंटः ए मोड ऑफ एनालिसिस*' (1981) में कहतें है कि, *'जब तीसरी दुनिया के देश अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन में भाग लेते हैं, तो उन्हें विभिन्न व्यावसायिक प्रथाओं को स्वीकार करना पड़ता है जो आमतौर पर किसी भी गतिविधि के साथ होती हैं जो विकसित या महानगरीय देशों में इसकी ऐतिहासिक उत्पत्ति है। इसका कारण केवल यह है कि क्षेत्र में अग्रणी होने के नाते अग्रणी कंपनियों को काफी व्यावसायिक लाभ मिलते हैं, क्योंकि वे नए उद्योग को परिभाषित, निर्माण और आपूर्ति करते हैं। '*

उन्होंने आगे कहा कि विदेशी स्वामित्व की प्रबलता के कारण पर्यटन उद्योग ने विकास प्रणाली लागू की है जो गंतव्य स्थलों पर जो विकसित महानगरीय देशों पर संरचनात्मक निर्भरता को मजबूत करता है। इस संरचनात्मक निर्भरता को गंतव्य (परिधीय) क्षेत्रों के उपनिवेशवाद के साथ बराबर किया गया है जैसा कि इतिहास में हुआ है जहां प्रमुख प्रथम विश्व ने औपनिवेशिक क्षेत्रों को अधीनस्थ स्थिति में रखने के लिए शक्ति का उपयोग किया था। यह सिद्धांत भी शक्ति और विकास के स्तर के बीच असमानताओं को समझने के लिए देशों और क्षेत्रों के भीतर एक रूप रेखा प्रदान करता है।

उदाहरण के लिए, यदि हम भारत में पर्यटन स्थल राजस्थान में उपलब्ध पर्यटन सुविधाओं को देखें, तो यह कहा जा सकता है कि यह सभी पश्चिम से आने वाले पर्यटकों की ओर उन्मुख है। महाद्वीपीय नाश्ते की सेवा, पश्चिमी तरीके से प्रशिक्षित कर्मचारी, संलयन व्यंजन जो पश्चिमी स्वाद के साथ भारतीय स्वादों को संयोजित करने की कोशिश करते हैं; सभी संकेत देते हैं कि पूरा प्रदर्शन पश्चिमी और विशेष रूप से अमेरिकी पर्यटकों को खुश करने की ओर उन्मुख है। होटल के भीतर सजावट, संगीत और दुकानें, सभी यूरो–अमेरिकी पर्यटकों के लिए उन्मुख हैं। यह उन स्थानों पर अधिक है जहां विदेशी पर्यटक जयपुर और आगरा की तरह अक्सर जाते हैं।

इसी समय, मुख्य गंतव्य (परिधि) के अध्ययनों ने मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय संदर्भों पर ध्यान केंद्रित किया है और आंतरिक रूप से प्रेरित, घरेलू मूल–परिधि गतिशीलता पर विचार करने के लिए उपेक्षित किया है। वीवर (1998) ने अपने शोधपत्र '*पेरिफरीज ऑफ पेरिफरीः टूरिज्म इन टोबैगो और बरमूडा*' में त्रिनिदाद और टोबैगो के 'प्रमुख' द्वीपों और एंटीगुआ और बारबुडा के 'अधीनस्थ' द्वीपों का अध्ययन किया और यह इंगित किया कि घरेलू संदर्भ में पर्यटन एक केन्द्रप्रसारक बल के रूप में काम करता है जो दोनों मौजूदा मूल/कोर–परिधि/गंतव्य संबंधों को दर्शाता और बढ़ाता है। प्रमुख द्वीपों में पर्यटक आगमन और विदेशी निवेश को सुविधाजनक बनाने या प्रतिबंधित करने की शक्ति है और अधीनस्थ द्वीप के लिए पर्यटन नीति और विकास पर प्रभावी नियंत्रण है।

भारत में हम देखते हैं कि महानगरों के लोग प्रमुख पर्यटक हैं क्योंकि वे छोटे और अपेक्षाकृत कम समृद्ध स्थलों की यात्रा करते हैं। कई बार वे स्थानीय लोगों का शोषण करते हैं, जो शहर के निवासियों द्वारा जागृत होते हैं और उन्हें खुश करने के लिए सभी प्रयास करते हैं। हालाँकि, स्थानीय लोग आने वाले पर्यटकों के धन पर भी नज़र रखते हैं, ताकि उनके द्वारा किए जाने वाले प्रयास पूरी तरह से परोपकारी न हों। अत्यधिक निर्धारणात्मक (चैपेरन और ब्रैमवेल, 2013) और अत्यधिक सार और निराशावादी होने के लिए निर्भरता सिद्धांत की आलोचना की गई है। यह देखा गया है कि पर्यटन विकास के मूल में परिधि/गंतव्य के शोषण को दर्शाता है। यह भी दावा करता है कि विकासशील देशों में अधिकांश या सभी पर्यटन आवास विकसित देशों के स्वामित्व में हैं। ऐसे उदाहरण हैं जहां आवास स्थानीय कंपनियों के हाथों में हैं। इसके अलावा, भले ही पर्यटकों को खुश करने की कोशिश हो, यह एक व्यावहारिक लक्ष्य के साथ किया जाता है। लेकिन कोई इस बात से इंकार नहीं कर सकता है कि दुनिया के अधिक समृद्ध देशों से आने वाले पर्यटकों को प्रसन्न रखने के लिए ज्यादातर सुविधाओं की व्यवस्था की जाती हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

4. राजनीतिक अर्थव्यवस्था में अध्ययन के आरंभिक चरण के दौरान मुख्य आकर्षण क्या थे?

.....

.....

.....

5. पर्यटन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अध्ययन में प्रमुख मुद्दे क्या है?

.....

.....

.....

6. विकास और निर्भरता सिद्धांत को समझाइये।

.....

.....

.....

.....

.....

7. 'एन्क्लेव मॉडल' किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया था? मॉडल पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 पर्यटन, वैश्वीकरण और 'नई' राजनीतिक अर्थव्यवस्था

1980 तक पर्यटन अध्ययनों को प्रभावित करने वाली निर्भरता और अविकसित सिद्धांत इस निष्कर्ष पर पहुंच गई थी कि विकास अध्ययन गतिरोध पर पहुंच गया है। तीसरी दुनिया के देशों ने राज्य के नेतृत्व वाले पर्यटन विकास के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता की रणनीतियों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। यह विचार कि तीसरी दुनिया के क्षेत्र निष्क्रिय और आश्रित परिधि/गंतव्य थे, अधिक विश्वसनीय प्रतिमान नहीं थे। 1990 के उदारीकरण और मुक्त बाजार की आर्थिक नीतियों के कारण गरीबी उन्मूलन और सतत विकास के उद्देश्य से सूक्ष्म स्तर के हस्तक्षेप पर संरचनात्मक समायोजन को बढ़ावा मिला। इसके साथ ही पर्यटन विकास पर किए गए अध्ययन सामान्यीकृत अमूर्तताओं से छोटे स्तर के विकल्पों की ओर चले गए। ऐसी योजनाएं बनाई गईं जिससे पर्यटन राजस्व के द्वारा गरीबी में कमी लाई जा सके, इसी उद्देश्य से गरीब ग्रामीण समुदायों को पर्यटन के विकास के लिए तैयार किया गया था, जिन्होंने पर्यटन विकास के बहुत कम लाभ देखे थे। उदाहरण के लिए, यदि कोई हिमालय की तलहटी में जाता है, तो कई स्थानीय गांव अब बाहरी संस्थाओं के सहयोग से पर्यटकों को तम्बू आवास और स्थानीय गाइड और सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। यह स्पष्ट है कि बाहर के पर्यटन उद्यमों को स्थानीय लोगों से सहयोग के बिना इन कठिन इलाकों में काम करना लगभग असंभव होगा। अधिक पर्यटकों के आने से कई स्थानीय व्यक्ति व्यापार में प्रवेश कर चुके हैं और यहां तक कि अपने स्वयं के छोटे होटल और गेस्ट हाउस भी बना रहे हैं। भारत में तीर्थ स्थानों में स्थानीय पर्यटन लगभग हमेशा *पंडों* या वंशानुगत मंदिर के अधिकारियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इसलिए स्थानीय पदानुक्रम हैं जो पर्यटन में आते हैं। हालांकि, योजना के अंत में पर्यटन गतिविधियों को ठीक से काम करने के लिए स्थानीय भागीदारी और सहयोग आवश्यक है।

एक सफल पर्यटन के लिए आवश्यक स्थानीय समुदायों और निजी उद्यमों के बीच भागीदारी को पहचानना चाहिए। बड़े पर्यटक संगठन अक्सर स्थानीय साझेदारों की भूमिका निभाते हैं और उन्हें स्थानीय संसाधनों के शोषण में शामिल करते हैं। सामुदायिक स्तर/सूक्ष्म स्तर पर इस तरह के लक्षित हस्तक्षेपों ने विद्वानों और कार्यकर्ताओं के बीच उन चिंताओं को जन्म दिया जो पर्यटन उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में हावी हो गए (हैरिसन 2001:33)। अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के विकास ने पर्यटन और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के निगमित वैश्वीकरण का नेतृत्व किया जिसने समाजों को अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में एकीकृत किया। अनुप्रयुक्त पर्यटन का एक बड़ा निकाय अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के विशिष्ट बाजार में प्रवेश की रणनीतियों और विकासशील देशों में आर्थिक विकास पर पर्यटन में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभावों का मानचित्रण करने के लिए किया गया था। लेकिन ब्रोह्मन (1996) और मोवफर्थ और मुंट (2009) के अध्ययन ने दिखाया कि पर्यटन क्षेत्र में नवउदारवादी वैश्वीकरण और निगमित एकाग्रता के लिए यह महत्वपूर्ण था, जिसने विकासशील देशों के विकास में योगदान करने के लिए पर्यटन की क्षमता को बाधित किया।

उदाहरण के लिए, यह देखा गया है कि पर्यटन उद्योग की तीन मुख्य शाखाएँ यानि होटल, एयरलाइंस और यात्रा कराने की कंपनियां तेजी से अंतरराष्ट्रीय हो गई हैं और इन बड़े उद्यमों का वर्चस्व बढ़ गया है। अंतरराष्ट्रीय होटल शायद ही कभी तीसरी दुनिया में अपनी पूंजी की बड़ी मात्रा में निवेश करते हैं, लेकिन निजी और सरकारी स्रोतों से धन की तलाश करते हैं। दूसरे शब्दों में वे अपने लाभ को अपने पास रखते हैं और स्थानीय संसाधनों का दोहन करते हुए शायद ही कभी अपने विकास या नवीनीकरण में कुछ भी निवेश करते हैं। यहां तक कि सड़कों और बिजली की आपूर्ति जैसे जुड़े बुनियादी ढांचे को स्थानीय

स्रोतों से या विदेशी ऋण के माध्यम से वित्त पोषित किया जाता है। जबकि उदाहरण के लिए, सरकार हिमालय में सड़कों का निर्माण करने के लिए कर–दाताओं के धन का उपयोग करती है, इसका सबसे अधिक फायदा उन कॉरपोरेटों/कम्पनियों को होगा जो बाद में इन सुलभ स्थानों पर फाइव–स्टार होटल बनाएंगे। जबकि उन्होंने कोई योगदान नहीं किया है, वे अधिकतम लाभ प्राप्त करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तीसरे विश्व के देश जो अंतर्राष्ट्रीय होटलों को आकर्षित करना चाहते हैं, वे एक असमान व्यापारिक संबंध में बंद हैं (लिअ 1988:10)। उन्हें अपने स्वयं के खर्च पर सड़क, स्वच्छता सुविधाएं और पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए, लेकिन होटल इन पर कोई योगदान देने की संभावना नहीं रखते हैं। होटल की अतिरिक्त दरें स्थानीय लोगों को उनके रहने के लिए हतोत्साहित कर सकती हैं। सबसे अधिक वे स्थानीय स्तर पर कुछ रोजगार प्रदान करते हैं और इन स्थलों के लिए विदेशियों को आकर्षित करते हैं। इसलिए, अंतरराष्ट्रीय कंपनियों और गंतव्य के बीच एक असमानता बनी रहती है।

एक संबंधित उदाहरण अंतरराष्ट्रीय यात्रा संचालकों का है, जिन्होंने पर्यटन पैकेजों के विपणन (मार्केटिंग) के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन में क्रांति ला दी है, जिसके लिए वे उद्योग में आपूर्तिकर्ताओं के साथ सौदेबाजी करते हैं। ऐसी व्यवस्था का शुद्ध प्रभाव तीसरी दुनिया में महत्वपूर्ण परिणाम है।यहां यह है कि राजनीतिक अर्थव्यवस्था का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से यह दिखाने में सक्षम है कि कैसे अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन विश्व आर्थिक प्रणाली में गंभीर विकृतियों और असंतुलन से पनपता है। पूंजी और सेवाओं की सीमा पार गतिशीलता के लिए बाधाओं को ध्वस्त करने और तीसरी दुनिया में गंतव्य क्षेत्रों में निवेश और वित्तीय प्रवाह बढ़ाने के लिए नवउदारवादी नीतियों को और अधिक उत्तेजित किया है। इसके अलावा, गंतव्य क्षेत्र अधिक पर्यटक प्राप्तकर्ता क्षेत्र नहीं हैं, लेकिन सार्वजनिक–निजी साझेदारी पर ध्यान देने के साथ अपने क्षेत्रों में अधिकतम पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए आक्रामक रूप से शामिल हैं। स्थानीय समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है और पर्यावरण संरक्षण और स्थिरता की वकालत की जाती है, हालांकि व्यवहार में इसका पालन नहीं किया जा सकता है।

गंतव्य क्षेत्र अधिकतम पर्यटकों को आकर्षित करना चाहते हैं और विदेशी पर्यटकों से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए अपने भौगोलिक और सांस्कृतिक आकर्षण की पूरी क्षमता का उपयोग करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, तीस विश्व विरासत स्थलों और पच्चीस जैव–भौगोलिक क्षेत्रों के साथ भारत अपनी भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता के साथ हर साल घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है। 2028 तक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन 30.5 मिलियन तक बढ़ने की उम्मीद है और सरकार पर्यटकों को आवश्यक बुनियादी ढाँचा और अन्य सुविधाएं प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। पर्यटन मंत्रालय की रिपोर्ट 2018–19 में देश में पर्यटन बुनियादी ढांचे के विकास के लिए दो प्रमुख योजनाओं यानी स्वदेश दर्शन–थीम आधारित पर्यटक परिपथों और *प्रसाद* तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्धन अभियान का उल्लेख किया गया है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में यात्रा और पर्यटन क्षेत्र द्वारा कुल योगदान रुपये से बढ़ने की उम्मीद है। 2017 में 15.24 ट्रिलियन (यूएस $ 234.03 बिलियन) से बढ़कर 2028 में 32.05 ट्रिलियन (यूएस $ 492.21 बिलियन) हो जायेगा। यात्रा और पर्यटन भारत के लिए तीसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जक है और 2017 के अनुसार लगभग 81.1 मिलियन लोग पर्यटन क्षेत्र में कार्यरत हैं। भारत सरकार ने 2020 तक 20 मिलियन विदेशी पर्यटकों के आगमन और साथ ही विदेशी मुद्रा को दोगुना करने का लक्ष्य रखा है (इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन,2019)। हालांकि, केंद्र गंतव्य /परिधि संबंधों पर विचार करते समय, हर किसी को इस संबंध की बदलती प्रकृति को ध्यान में रखना चाहिए। पिछले कुछ

दशकों में वैश्विक शक्ति समीकरणों में काफी बदलाव आया है। जबकि पहले के प्रथम विश्व के देशों का वर्चस्व कायम है, फिर भी दुनिया के कुछ अन्य क्षेत्र नव–उदारवादी अर्थव्यवस्था की दुनिया के प्रमुख खिलाड़ियों के रूप में उभर रहे हैं। चीन वैश्विक आर्थिक दिग्गज के रूप में उभर रहा है और ऐसा ही दक्षिण कोरिया है। विभिन्न पश्चिमी गंतव्यों में कई चीनी पर्यटकों को देखा जाता है। यूरोपीय देशों में भारतीय पर्यटक भी दिखाई देने लगे हैं। पूर्वी यूरोप में, पर्यटन उद्योग के लोग हाथ जोड़ेंगे और एक भारतीय पर्यटक को नमस्ते करेंगे। शाकाहारी भारतीयों को समायोजित करने के लिए कई स्थानों पर शाकाहारी भोजन भी परोसा जाता है।

सैद्धांतिक रूप से, राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण को केंद्र और सत्ता की परिधि/गंतव्य के बीच इन गतिविधि को यह मानते हुए शामिल करना चाहिए कि वे स्थिर नहीं हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

8. "पर्यटन स्थल में सुविधाएं पर्यटक को खुश करने के लिए होती हैं "गुण–दोष की दृष्टि से कथन की समीक्षा करें।

.....

.....

.....

9 ''यात्रा और पर्यटन भारत के लिए तीसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जक है'' यह कथन सही या गलत है।

.....

.....

.....

10. एक उदाहरण द्वारा साबित करें की भारत में धार्मिक स्थलों में स्थानीय समुदायों द्वारा पर्यटन को कैसे नियंत्रित किया जा रहा है ।

.....

.....

.....

11. वैश्विक आर्थिक दिग्गजों के रूप में उभरने वाले दो देशों के नाम बताये।

.....

.....

.....

6.4 राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण की सीमाएं

पर्यटन को मुख्य रूप से आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाता है। आर्थिक गतिविधि के कई अन्य क्षेत्रों की तरह पर्यटन भी समग्र सामाजिक आर्थिक क्रम द्वारा आकार में है। अधिकांश पर्यटन जो वर्तमान में कुछ बड़ी ट्रांस–नेशनल कंपनियों (जैसे थॉमस कुक) द्वारा आयोजित किए जाते हैं, स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर बहुत प्रभाव डालते हैं। यह

तीसरी दुनिया के उन देशों को विकसित करने के लिए सही है जो बेहतर आर्थिक विकास के लिए इच्छा और प्रयास करते हैं और स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अपने उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन आधार का उपयोग कर रहे हैं। दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं के खुलने से राष्ट्रीय सीमाओं पर लोगों की आवाजाही बढ़ी है जिससे अंतरराष्ट्रीय पर्यटन में वृद्धि हुई है। संचार प्रौद्योगिकियों के उपयोग के साथ, पर्यटन आज या तो उपभोक्ताओं या पर्यटन उद्योग के प्रतिनिधियों द्वारा बड़ी तेजी के साथ योजनाबद्ध हैं। दुनिया के सबसे दूरस्थ स्थानों का अब दौरा किया जाता है और परिवहन के उन्नत साधनों के साथ, कोई भी क्षेत्र या गंतव्य दुर्गम नहीं है।

पहले की धारणा जो व्यापार के उदारीकरण को जारी रखती थी, वह यह थी कि पर्यटन व्यवसाय में प्रतिबंध और नियमों को कम करने से दुनिया भर में आर्थिक विकास होगा और गरीबी को खत्म किया जाएगा जिससे आय में वृद्धि जारी रहेगी। यह परिकल्पना हालांकि सही साबित नहीं हुई है और इस बात के प्रमाण बढ़ रहे हैं कि वैश्वीकरण का कई देशों के लिए सकारात्मक प्रभाव नहीं है जैसा कि विशेष रूप से विकासशील देशों ने वादा किया गया था। वैश्वीकरण और पर्यटन उद्योग पर इसके प्रभाव पर विद्वानों ने कहा है कि यदि लोग (पर्यटन उद्योग में अर्ध–कुशल या अकुशल श्रमिकों के रूप में काम कर रहे हैं) पूरी तरह से वैश्विक अर्थव्यवस्था में भाग लेने के लिए तैयार हैं तो मजदूरी और सामाजिक परिस्थितियों को इस तरह बनाया जाना चाहिए जिसमे वे पूर्ण रूप से काम कर सकें। बहुराष्ट्रीय कंपनियां, जो पूरी तरह से या आंशिक रूप से पर्यटन में शामिल हैं, मुनाफे का प्रमुख हिस्सा लेती हैं और अक्सर पर्यटन स्थलों के पर्यावरण संबंधी चिंताओं में भाग नहीं लेती हैं। ऐसी संभावना है कि जब गंतव्यों पर जोर दिया जाता है/उपयोग किया जाता है, तो उनका बुनियादी ढांचा पर्यटकों की बढ़ी हुई संख्या के साथ उखड़ सकता है। क्योंकि यह काम लोगों को आकर्षित कर सकता है और धीरे–धीरे किसी भी पर्यटक को आकर्षित करने में विफल भी हो सकता है। पर्यटक उद्योग में संभावना खनन उद्योग की तरह है, इसमें स्थानीय प्राकृतिक वस्तुओं जैसे, पानी और जंगल जब सूख जायेंगे तब सब चलें जायेंगे। वैश्विक उद्योगों के लिए, स्थानीय लोगों या स्थानों के साथ कोई भावनात्मक या आर्थिक लगाव नहीं है। उनके लिए हर स्थान केवल एक लाभकारी वस्तु है। उदाहरण के लिए, पर्यटन ने केरल जैसे तटीय क्षेत्रों को नष्ट कर दिया है, जहां होटल और मॉल बनाने के लिए सदाबहार मैंग्रोव काट दिए गए थे। *सुनामी* जैसी प्राकृतिक आपदा ने प्राकृतिक आवरण की कमी के भयावह परिणाम दिखाए हैं। संभावना है कि ऐसे विशेष स्थान हमेशा के लिए नष्ट हो सकते हैं। हालांकि इसका मतलब स्थानीय निवासियों के लिए उस सड़क का अंत हो सकता है जिससे वे अपनी आजीविका और पारिस्थितिक संतुलन खो सकते हैं, वहीं दूसरी ओर पांच सितारा होटल श्रृंखलाओं (चेन्स) के लिए इसका मतलब यह हो सकता है कि वे अपने स्थान को दूसरे आकर्षक गंतव्य पर स्थानांतरित कर दें।

सामाजिक अवसंरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) की उपेक्षा और निर्मित पर्यावरण का विघटन धीरे–धीरे उस धन को बनाने में विफल हो जाएगा जो इसे माना जाता था। पर्यटन जो 'नई अर्थव्यवस्था' में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में देखा जाता है, जो अपेक्षित विकास और वृद्धि नहीं कर सकता है। यह एक प्रमुख सवाल है कि, आज पूरे विश्व में पर्यटन उद्योग और समुदाय के सामने पर्यावरण एक मुख्य चिंता का विषय है, यदि अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को जीवित रखना है और पर्यटन को स्थायी व्यवसाय बनाना है तो आवश्यक रूप से पर्यावरण की ओर भी पूरा ध्यान देना होगा।

बटलर (1980) ने पर्यटन स्थलों के विकास और प्रबंधन के लिए एक 'उत्पाद जीवन–चक्र' मॉडल प्रदान किया। यह मॉडल पर्यटन उत्पादों के प्रक्षेपवक्र को विकास की संभावनाओं

के प्रारंभिक अन्वेषण से लेकर उसके अंतिम पतन तक ले जाता है। यह मॉडल, सामाजिक और पर्यावरणीय चिंताओं (रीड 2003: 39) के बिना उत्पाद की अति–उपयोगिता से होने वाले प्रभावों पर है। बाजार की अर्थव्यवस्था पर्यटन उद्योग और इसके विकास के लिए फायदेमंद हो सकती है लेकिन सामाजिक और पर्यावरण संबंधी चिंताओं का ध्यान रखा जाना चाहिए और सरकार की नीतियों को लागू किया जाना चाहिए। साथ ही, पारिस्थितिक स्थिरता पर राजनीतिक बातचीत को सघन किया जाना चाहिए। पर्यटन उद्योग को समस्या का निर्माता नहीं होना चाहिए, लेकिन समाधान और पारिस्थितिक स्थिरता के मुद्दों का हिस्सा होना चाहिए, ऊर्जा की खपत कम हो और स्थलों पर प्रदूषण कम हो।

स्थलों पर समुदायों को संगठित किया जाना चाहिए और पर्यटन विकास परियोजनाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जैसे भारत के कुछ गंतव्य स्थलों में किया जा रहा है। इसका उद्देश्य एक संतोषजनक सामुदायिक पर्यटन परियोजना विकसित करना है जहां स्थानीय समुदाय भाग लेते हैं और उद्योग से लाभान्वित होते हैं। स्थानीय स्तर पर उत्पन्न होने वाली पर्याप्त आय से न केवल पर्यटन उद्योग के विकास में मदद मिलेगी। यह भी कि क्या होना चाहिए और क्या नहीं होना चाहिए और प्रत्येक भाग को लाभ मिलना चाहिए न की उनको, जिसके पास पूंजी है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 4

12. राजनीतिक अर्थव्यवस्था के सिद्धांत की कुछ कमियों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

6.5 सारांश

पर्यटन न तो स्वाभाविक रूप से नकारात्मक है और न ही सकारात्मक है। लेकिन इसकी सफलता और असफलता क्या है, इसे कैसे नियंत्रित और प्रबंधित किया जाता है और कौन उस विकास को नियंत्रित करता है। यदि अकेले बाजार को अपने विकास को नियंत्रित करने की अनुमति दी जाती है, तो यह सामाजिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों के लिए कम से कम चिंता का विषय तो होगा, जिसमें यह स्थित है। समुदाय की भागीदारी पर वैकल्पिक बातचीत और पर्यावरण के लिए बढ़ती चिंता पर्यटन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था में बहुत योगदान देगी। पर्यटन की लागत और लाभों को न केवल आर्थिक विकास के संबंध में माना जाना चाहिए, बल्कि प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संसाधनों पर इसके प्रभाव का भी आकलन करना चाहिए जो इसी पर निर्भर करता है। विकल्पों पर विस्तृत चर्चा और शोध किया जाना चाहिए, साथ ही आगे के अध्ययनों को महत्वपूर्ण राजनीतिक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण में भी शामिल किया जाना चाहिए, जो मौजूदा पर्यटन नीतियों, पर्यटन विकास, प्रथाओं और बातचीत को चुनौती देगा।

6.6 संदर्भ

बियान्ची, आर. वी. (2015). 'टूवर्ड्स ए पॉलिटिकल ईकोनोमी ऑफ ग्लोबल टूरिज्म रिविजिटेड' इन आर शार्प्ले एंड डी टेल्फेर (संपा) *टूरिज्म एंड डेवलप्मेंट*. ब्रिस्टल : चैनल व्यू पब्लिकेशंस. पृ.सं. 287–331.

बियान्ची, आर वी (2018). द पॉलिटिकल ईकोनोमी ऑफ टूरिज्म डेवलेप्मेंट : ए क्रिटिकल रिव्यू'.*एनल्स ऑफ़ टूरिज्म रिसर्च*, वाल्यूम 70. पृ.सं. 88–102.

ब्रिटान, एस. (1981). 'टूरिज्म, डीपेंडेंसी एंड डेवलपमेंटः ए मोड ऑफ एनालिसिस'. ओकेजनल पेपर नं 23. कैनबराः ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी.

ब्रिटान, एस. (1982). 'द पोलिटिकल ईकोनोमी ऑफ द थर्ड वर्ल्ड'. *एनाल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च*. 9: 331–358.

ब्रोमैन, जे. 1996). 'न्यू डाइरेक्शन इन टूरिज्म फॉर थर्ड वर्ल्ड डेवलेप्मेंट'. *एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च*. 23 (1), 48–70.

चैपेरन, एस, एंड बी ब्रैमवेल (2013). 'डिपेंडेंसी एंड एजेंसी इन पेरिफेरल टूरिज्म डेवलपमेंट'. *एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च*. 40: 132–154.

क्लेंसी, एम. (1999). 'टूरिज्म एंड डेवलप्मेंटः एविडेंस फ्रॉम मेक्सिको *'.एनाल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च*. 26 (1), 1–20.

डी कड़ट, ई. (1979). *टूरिज्म : पासपोर्ट टू डेवलपमेंट? पर्स्पेक्टीव ऑन द सोशल एंड कल्चरल इफेक्ट्स ऑफ टूरिज्म इन डेवलपिंग कंट्रीज*. न्यूयार्क, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस.

फ्रैंक, ए (1967). *कैपटिटलिज्म एंड अंडरडेवलपमेंट इन लैटिन अमेरिका*. न्यूयॉर्कः मंथली रिव्यु प्रेस.

गिप्लिन, आर. (2001). *ग्लोबल पॉलिटिकल ईकोनोमीः अंडरस्टैन्डिंग द इन्टरनेशनल ईकोनोमिक ऑर्डर*. प्रिंसटन, ए राजनीतिक अर्थव्यवस्था के सिद्धांत की कुछ कमियों पर चर्चा करें। नजेः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

हैरिसन, डी. (2001). *टूरिज्म एंड द लैस डेवलप्ड कंट्रीज : इश्यूज़ एंड केस स्टडीज*. न्यूयॉर्कः कॉग्निजेंट.

हैज्बन,डब्ल्यू. (2008). *बिचेस,रुइंस, रिसॉर्ट्सः द पोलिटिक्स ऑफ टूरिज्म इन द अरब वर्ल्ड*. मिनियापोलिसः युनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस.

ली, जे. (1988). *टूरिज्म डेवलप्मेंट इन द थर्ड वर्ल्ड*. लंदनः रूटलेज.

मॉसडेल, जे. (2011). 'थिन्कींग आउटसाइड द बॉक्सः आल्टरनेटीव पॉलिटिकल इकोनोमीज इन टूरिज्म'. मॉसडेल (संपा) *द पॉलिटिकल ईकोनोमी ऑफ टूरिज्म : आर्टिकल पर्स्पेक्टीव*. लंदन और न्यूयॉर्कः रूटलेज. पृ.सं. 157–174.

मॉसडेल, जे. (2016). 'टूरिज्म एंड नियोलिब्रलिस्म : स्टेट,ईकोनोमी एंड सोसाइटी ' इन जे मॉसडेल (संपा) *नियोलिबरलीज़्म एंड द पोलिटिकल ईकोनोमी ऑफ टूरिज्म*. एश्गेट.

मोवर्थ, एम एंड मुंट, आई. (2009). टूरिज्म एंड सस्टेनेबिलीटी : डेवलपमेंट, ग्लोबलाईजेशन एंड न्यू टूरिज्म इन द थर्ड वर्ल्ड. (तीसरा संस्करण) लंदनः रूटलेज.

रीड, डोनाल्ड, जी (2003). *टूरिज्म, ग्लोबलाईजेशन एंड डेवलपमेंटः रिस्पोंसीबल टूरिज्म प्लानिंग*. लंदनः प्लूटो प्रेस.

शार्पली, आर एंड डेविड जे टेलीफर, (2002). *टूरिज्म एंड डेवलपमेंट : कांसेप्ट एंड इश्यूज*. क्लीवडॉनः चैनल व्यू पब्लिकेशंस.

स्टेनर, सी. (2006). 'टूरिज्म, पॉवरटी रिडकशन एंड द पॉलिटिकल ईकोनोमीः इजिप्टियन पर्स्पेक्टीव ऑन टूरिज्म ईकोनोमिक बेनीफिट्स इन ए सेमी–रेन्टीयर स्टेट'. टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलीटी प्लानिंग एंड डेवलपमेंट. 3 (3), 161–177.

वीवर, डी. (1998). पैरिफेरिज ऑफ द पेरिफेरीः टूरिज्म इन टोबैगो एंड बारबुडा'. *एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च*. 25:292–313.

विलियम्स, ए. एम. (2004). 'टूवर्ड्स ए पॉलिटिकल ईकोनोमी ऑफ टूरिज्म' इन ए लीव, सी.एम. हॉल एंड ए. एम विलियम्स (संपा) *ए कंपैनियन टू टूरिज्म*. ऑक्सफोर्डः ब्लैकवेल प्रकाशन.

यंग, जी. (1973). *टूरिज्म ब्लेसिंग ओर ब्लाइट?* बाल्टीमोरः पेंगुइन बुक्स.

6.7 आपकी प्रगति जांचने लिए उत्तर/संकेत

1. मेजबान समुदायों और पर्यटकों के लिए पर्यटन के लाभों को समान रूप से अधिकतम करना। अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 6.1 देखें।
2. अनुभाग 6.1 देखें।
3. अनुभाग 6.1 देखें।
4. उत्तर हेतु अनुभाग 6.2 देखें
5. अनुभाग 6.2 देखें।
6. अनुभाग 6.2 देखें।
7. एस. ब्रिटान, अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 6.2 देखें।
8. उत्तर हेतु अनुभाग 6.3 देखें संदर्भ लें।
9. अनुभाग 6.3 देखें।
10. अनुभाग 6.3 का संदर्भ लें।
11. अनुभाग 6.3 देखें।
12. अनुभाग 6.4 देखें।

इकाई 7 पर्यटन बनाम धरोहर स्थल*

इकाई की रूपरेखा

7.0 परिचय

7.1 धरोहर पर्यटन को परिभाषित करना

7.2 संरक्षण और पुनरुत्थान परियोजनाएं

7.2.1 केस स्टडी I

7.2.2 केस स्टडी II

7.3 पर्यटन बनाम हेरिटेज स्थलः कुछ मुद्दे

7.4 सारांश

7.5 संदर्भ

7.6 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद शिक्षार्थी निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगेः

- पर्यटन और धरोहर (हेरिटेज) स्थलों के बीच संबंध;
- धरोहर स्थलों की परिभाषा; तथा
- धरोहर स्थलों के संरक्षण और पुनरुत्थान का महत्व।

7.0 परिचय

इससे पहले की इकाइयों ने मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से पर्यटन से जुड़ी परिभाषा और मुद्दों पर चर्चा की है। इन्हें पुनः संक्षेप में दोहराएं तो, पर्यटन ऐतिहासिक स्थलों, कलात्मक जीवन शैली, धरोहर, अनुभव, सांस्कृतिक वातावरण, प्रदर्शन और दृश्य कला, संग्रहालय, संगीत और थिएटर पर केंद्रित है। सांस्कृतिक पर्यटन में स्वदेशी वातावरण का आनंद लेना, ऐतिहासिक और धार्मिक स्मारकों और अवशेषों और यहां तक कि गाँव और ग्रामीण इलाकों में जाना भी शामिल है।

हेरिटेज(धरोहर) पर्यटन में शामिल एक महत्वपूर्ण आयाम है। सामान्य तौर पर, धरोहर/विरासत संस्कृति के उन पहलुओं को संदर्भित करती है जो अतीत से विरासत में मिली है और जिसका ऐतिहासिक मूल्य है। इस संबंध में धरोहर पिछली पीढ़ियों से भावी पीढ़ियों के लिए एक उपहार है। परिवारों के लिए, धरोहर एक पुराने और ऐतिहासिक घर के रूप में संपत्ति हो सकती है। संपत्ति जैसे कि खानदानी फर्नीचर, गहने और परंपराएं; या फिर कोई विशेष अनुष्ठान या समारोह। देश की धरोहर की बात करते हुए, हम इसके इतिहास, संस्कृति और उपलब्धियों का उल्लेख कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, भारत की धरोहर में पूजा स्थल, जामा मस्जिद और ताजमहल जैसे स्मारक; मंदिरों में कोणार्क, अजंता,एलोरा जैसे स्थल शामिल हैं। महान धार्मिक संग्रहालय कुरुक्षेत्र और पानीपत जैसे ऐतिहासिक युद्धक्षेत्र

***योगदानकर्ता:** डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव, पूर्व एसोशियट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जानकी देवी मेमोरियल कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली.

और सामाजिक और राजनीतिक नेताओं के सम्मान में बने संग्रहालय और राजघाट जैसे संग्रहालय भी हमारी धरोहर का एक हिस्सा हैं। भारत आने वाला कोई भी पर्यटक इनमें से कम से कम कुछ स्थलों को देखने की इच्छा रखता है। इस इकाई में हम पर्यटन और धरोहर स्थलों के बीच संबंधों पर चर्चा करेंगे।

7.1 धरोहर पर्यटन को परिभाषित करना

वास्तव में, पर्यटन में धरोहर (हेरिटेज) शब्द का अर्थ होता है भू–दृश्य, प्राकृतिक इतिहास की इमारतें, कलाकृतियाँ और सांस्कृतिक परंपराएँ जो या तो वस्तुतः या रूपक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चली जाती हैं।

धरोहर समरूप नहीं है। यह विभिन्न–वैश्विक, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तरों पर मौजूद है।

धरोहर में व्यक्तिपरक, व्यक्तिगत और भावनात्मक और एक ही समय में उद्देश्यपूर्ण और कार्यात्मक होने का दोहरा चरित्र है। उदाहरण के लिए, जगन्नाथ पुरी मंदिर एक विदेशी पर्यटक के लिए एक धरोहर स्थल है जो इसे एक प्राचीन संस्कृति के अवशेष के रूप में देखता है, हिंदू भक्तों के लिए यह भक्ति या भक्ति का स्थान है और एक व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत स्तर पर एक विशेष देवता के भक्तों के लिए यह भावनात्मक जरूरतों और इच्छाओं की पूर्ति के लिए एक जगह है। इस तरह से धरोहर या धरोहर का अर्थ पर्यटन उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों के लिए अलग–अलग चीजें भी हैं। धरोहर स्थल मुख्य उत्पाद हैं और आकर्षण के केंद्र में बने हुए है हालांकि, विभिन्न लोग अलग–अलग धारणाओं और इरादों के साथ आ सकते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पर्यटक का धरोहर स्थल के साथ कोई व्यक्तिपरक और भावनात्मक संबंध है या नहीं, पर्यटन व्यवसाय और पर्यटन संचालकों के लिए यह एक उत्पाद है जिसे बेचा जाना है। यहां उत्पाद और उसके मूल्य में घनिष्ट सम्बंध होता है।

एक वस्तु के रूप में धरोहर के आकर्षण के कारण, क्षेत्रों की बढ़ती संख्या को धरोहर स्थलों के रूप में बढ़ावा दिया जा रहा है (हर्बर्ट 1997)। विभिन्न विद्वानों ने धरोहर पर्यटन के आकर्षण और इसकी लोकप्रियता के कारणों की पहचान करने की कोशिश की है। तिघे (1986) का सुझाव है कि हेरिटेज पर्यटन सभी सांस्कृतिक परंपराओं, स्थानों और लोगों के मूल्यों के बारे में है। वेलर और हेल (1992) के अनुसार हेरिटेज पर्यटन में स्मारक, संग्रहालय, युद्ध क्षेत्र, ऐतिहासिक संरचनाएं और भूमि चिह्न शामिल हैं। बृजन (1977) और टेसेल (1990) के अनुसार हेरिटेज पर्यटन में प्राकृतिक उद्यान और प्राकृतिक सुंदरता के जंगल शामिल हैं। हरग्रोव (1995) का तर्क है कि हेरिटेज पर्यटन किसी ऐसी चीज की खोज करने के बारे में है जो अतीत को जोड़ता है और यह अभिन्न रूप से अतीत के सुखद प्रसंगों से जुड़ा हुआ है। अधिक गहराई में धरोहर के अर्थ को समझने के लिए इसे संस्कृति की अवधारणा से जोड़ना महत्वपूर्ण है।

सांस्कृतिक धरोहर एक समुदाय द्वारा विकसित जीवन जीने के तरीकों की अभिव्यक्ति है। यह रीति रिवाजों, प्रथाओं, स्थानों, वस्तुओं, कलात्मक विस्तार और मूल्यों सहित पीढ़ी दर पीढ़ी तक पारित की जाती है। सांस्कृतिक रूप लोगों के मूल्यों, विश्वासों और आकांक्षाओं को दर्शाते हैं। प्रतिष्ठित सांस्कृतिक वस्तु और सामूहिक समारोह अक्सर देश की पहचान को परिभाषित करते हैं और उसके प्रतीक हैं। सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण उन तरीकों में से एक है जिसमें सामूहिक स्मृतियों को जीवित रखा जाता है और सामूहिक पहचान जैसे कि एक राष्ट्र में दोनों को बनाए रखा जाता है और इसका निर्माण भी किया जाता है। वारसॉ में, यहूदी संग्रहालय न केवल यहूदी पहचान का बल्कि उनके इतिहास और

उनके सामूहिक दुख का भी एक निरंतर प्रतीक है। इसी तरह, लाल किला अतीत के इतिहास का प्रतीक होने के साथ–साथ वर्तमान में राष्ट्र का प्रतीक भी है। सांस्कृतिक समारोह सामाजिक एकजुटता और संबंधों को एक समुदाय, समूह और राष्ट्र जैसी बड़ी संस्थाओं के माध्यम से लोगों में अपनेपन की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

यूनेस्को और विश्व धरोहर स्थल

विश्व धरोहर और प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण, जिसे आमतौर पर विश्व धरोहर सम्मेलन (यूनेस्को 1972) के रूप में जाना जाता है, यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थलों की सुरक्षा का उद्घाटन किया गया, जिसने राष्ट्रीय प्रतीकों को 'उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य और सभी की संपत्ति' के रूप में प्रतिष्ठित किया और मानव जाति, जो अतीत के एक आवश्यक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है का पता चलता है (मैरी ग्रिफिथ्स, किम बारबोर 2016 द्वारा उद्धृत पागनोनी 2015)। सम्मेलन के दिशा–निर्देशों के अनुसार, दृष्टिकोण में बदलाव आया, जिसमें "ऐतिहासिक इमारतों और स्मारकों के संरक्षण से धरोहर के अर्थ का विस्तार और व्यापक संदर्भ की अधिक सामान्य समझ और मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक रूपों का संरक्षण " शामिल था (मैरी ग्रिफिथ्स, किम बारबोर 2016)। इस प्रकार, विश्व धरोहर समिति (वर्ल्ड हेरिटेज कमिटी) ने विश्व हेरिटेज सूची (यूनेस्को 1992) में सांस्कृतिक परिदृश्यों को शामिल करने और फिर उनसे जुड़ी अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों (यूनेस्को 2003) की सुरक्षा के लिए सम्मेलन द्वारा निर्णय भी लिया गया। इसने विशेष रूप से विश्व धरोहर स्थलों की समझ में 'सांस्कृतिक परिदृश्य' की धारणा को शामिल करने की अनुमति दी, जिससे लोगों और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच विविध सभांवित बातचीत हो सके। **स्रोतः** https://ich.unesco.org

सांस्कृतिक परिदृश्य की अवधारणा संस्कृति का एक समग्र दृष्टिकोण लेती है जिसमें न केवल स्मारक या भवन शामिल है, बल्कि संपूर्ण वर्णात्मक आख्यान भी शामिल है। उदाहरण के लिए, ऐसे पर्यटन स्थल हैं जिन्हें 'हेरिटेज वॉक 'के नाम से जाना जाता है जो कि सिल्क रूट जैसे प्राचीन मार्गों को फिर से बनाते हैं, या पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक जैसे एक पुराने शहर की गलियों और उपनगरों के माध्यम से लोगों को ले जाएं, जहां हर कदम एक कहानी कहता है। अक्सर इनमें न केवल जगहें शामिल होती हैं, बल्कि गंध और भोजन भी शामिल है।

सांस्कृतिक हेरिटेज पर्यटन और क्षेत्रीय विकास (1991) सम्मेलन ने इस बात पर जोर दिया कि सांस्कृतिक हेरिटेज पर्यटन का अर्थ है, जीवन गुणवत्ता की सुंदरता और प्रभावी अनुभवों का संवर्धन (7–8 नवंबर, 1991 को सांस्कृतिक–विरासत पर्यटन और क्षेत्रीय विकास पर रिपोर्ट से संदर्भित)। हेरिटेज पर्यटन को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों द्वारा–स्थानीय क्षेत्रों के संसाधनों में वृद्धि हो सकती है, कुल भौतिक व्यवस्था और संबंधित अनुष्ठानों के संरक्षण एवं सांस्कृतिक महत्व की गतिविधियों द्वारा स्थानीय संगीतकारों और कलाकारों को समर्थन और प्रोत्साहन दिया जाता है जिससे धरोहर (हेरिटेज) का विकास होता है, संग्रहालयों ,दीर्घाओं और भौतिक संस्कृति का संवर्धन होता है, जो उनका समर्थन करता है। स्थानीय संगीत, नृत्य और त्योहारों का पुनरोद्धार भी हेरिटेज विकास का एक हिस्सा है। अप्रैल 2020 तक, 167 देशों में कुल 1,121 विश्व धरोहर स्थल (869 सांस्कृतिक, 213 प्राकृतिक, और 39 मिश्रित गुणों वाले) स्थल मौजूद हैं। चीन और इटली दोनों देशों में 55 साइटों के साथ किसी भी देश में सबसे अधिक हैं, इसके बाद स्पेन (48), जर्मनी (46), फ्रांस (45), भारत (38) और मैक्सिको (35) है (सटेंर, 2020).। **स्रोतः** UNESCO WORLD HERITAGE sites (https://whc.unesco.org/en/newproperties/date=2004&mode=list)

विश्व धरोहर स्थलः एक संक्षिप्त इतिहास

विश्व धरोहर स्थल शब्द का तात्पर्य प्रकृति के अतीत और अजूबों के उन ख़ज़ानों से है, जो इतने अनोखे हैं कि दुनिया के सभी देशों का कर्तव्य है कि वे देश की परवाह किए बिना, चाहे वे जिस भी देश में हों उनकी रक्षा करें। विश्व धरोहर स्थल संस्कृति और हमारे ग्रह की प्राकृतिक संपदा और विविधता को दर्शाते हैं। यूनेस्को –विश्व धरोहर केंद्र का जन्म दो अलग–अलग आंदोलनों के विलय से हुआ था। पहला सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण के लिए था। दूसरा प्रकृति के संरक्षण से जुड़ा एक आंदोलन था। पहला आंदोलन मिस्र में असवान हाई डैम के निर्माण के निर्णय के साथ शुरू हुआ। यह डैम उस घाटी में बह गया होगा जहां अबू सिंबल मंदिर स्थित था। 1959 में, यूनेस्को ने इन मंदिरों की सुरक्षा के लिए एक अभियान चलाया। अभियान को पचास (50) देशों का साथ मिला और इस संगठन का जन्म हुआ। 1972 में विश्व धरोहर स्थलों की पहचान, संरक्षण और संवर्धन में राष्ट्रों की सहायता के लिए विश्व धरोहर निधि बनाई गई। योगदान अनिवार्य होने के साथ–साथ स्वैच्छिक भी हैं। एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक क्षेत्र विश्व धरोहर स्थल बन जाता है। एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित की जाने वाली जगह के लिए, इसे इन देशों की सीमाओं के भीतर स्थित होना चाहिए जिन्होंने विश्व धरोहर सम्मेलन पर हस्ताक्षर किए हैं। **स्रोतः** https://www.quora.com/How-are-World-Heritage-sites-selected

भारत और विश्व धरोहर स्थल

भारत का प्रत्येक प्राचीन, ऐतिहासिक स्मारक अपने अतीत की समृद्ध धरोहर के लिए एक खिड़की है। हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने इस तरह के महान स्थलों के बारे में यह राय व्यक्त की, "बनारस के पास सारनाथ में, मैं बुद्ध को लगभग अपना पहला उपदेश देते हुए देख सकता था और उनके कुछ रिकॉर्ड किए शब्द 2500 साल बाद मेरे लिए अविनाशी गूंज की तरह आएंगे। अशोक के पत्थर के खंभे, उनके शिलालेखों के साथ उनकी शानदार भाषा में मुझसे बात करेंगे और मुझे एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताएंगे, जो एक सम्राट था, जो किसी भी राजा या सम्राट से बड़ा था "(डिस्कवरी ऑफ इंडिया 1946: 52)। नेहरू के भारत और पर्यटन के संदर्भ में, एक अन्य क्षेत्र भी है जो पर्यटकों को आकर्षित करता है। कार्ल मार्क्स ने इसे "हमारी भाषाओं का स्रोत, हमारा धर्म (अपूर्ण रेखा) कहा है। 'भारत सभ्यता और धर्म और दर्शन के कार्य प्रमुखों में से एक है। इस भौतिक दुनिया में आध्यात्मिक और मानसिक कायाकल्प के माध्यम से इसे पेश करने के लिए बहुत कुछ है। दार्शनिक ध्यान, योग, आयुर्वेद, शारीरिक और मानसिक उपचार और प्राचीन परंपराओं और प्रणालियों के साथ संपर्क भारत को एक उत्कृष्ट आकर्षक गंतव्य बनाते हैं, रहस्यवाद और इतिहास हमेशा एश्वर्य या अवकाश यात्रा के बजाय गंभीर संशोधित पर्यटकों को मोहित करेंगे '(वर्ल्ड ट्रैवल एंड टूरिज्म काउंसिल [डब्ल्यूटीटीसी]) रिपोर्ट 2001)। महाराष्ट्र की अजंता और एलोरा गुफाएं, उत्तर प्रदेश के आगरा का ताजमहल और किला, कोणार्क का सूर्य मंदिर, असम का काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और मानस वन्यजीव अभयारण्य, भीमबेटका के रॉक आश्रय स्थल, छत्रपति शिवाजी टर्मिनल मुंबई आदि, कुछ ऐसे स्थल हैं जो यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं। भारत में वर्ष 2020 तक यूनेस्को द्वारा कुल सैंतीस स्थलों को विश्व धरोहर स्थलों के रूप में मान्यता दी गई है (सेंटर, 2020)। यहां ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि स्मारकों, इमारतों और राष्ट्रीय उद्यानों की विभिन्न किस्में हैं जिन्हें सूचीबद्ध किया गया है।

भारत में सांस्कृतिक हेरिटेज पर्यटन प्रबंधन और उसकी विशेषता

यूनेस्को के महानिदेशक ने कहा है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि विश्व धरोहर स्थल पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं और पर्यटन उद्योग की रीढ़ होते है। सांस्कृतिक धरोहर के बिना कोई पर्यटन नहीं होगा क्योंकि यह आंतरिक रूप से मानवता की धरोहर से जुड़ा हुआ है और प्रत्येक का भविष्य अन्य पर निर्भर करता है '(जौरा 2000)। आज, पर्यटन के क्षेत्र में भी अधिकांश देशों ने पर्यटन से बड़ा राजस्व हासिल करने के लिए अपने पड़ोसियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के बजाय एक दूसरे के पूरक के रूप में निर्णय लिया और विकसित किया है। उदाहरण के लिए, सिंगापुर और मलेशिया ने पर्यटकों के लिए एक व्यापक पैकेज की पेशकश करने के लिए हाथ मिलाया है। सांस्कृतिक धरोहर पर्यटन और संस्कृति हेरिटेज पर्यटन प्रबंधन (CHTM) की अवधारणा के रूप में संस्कृति हेरिटेज पर्यटन प्रबंधन इन के एकीकरण का प्रयास करता है और भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना करता है। सांस्कृतिक पर्यटन के अंतर्राष्ट्रीय चार्टर (18 वीं ड्राफ्ट ICOMOS] अक्टूबर 1999) ने अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक पर्यटन को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों को सुसंस्कृत किया है। सांस्कृतिक हेरिटेज पर्यटन के सिद्धांत पर्याप्त रूप से सांस्कृतिक धरोहर, मेजबान समुदाय, आगंतुकों की अपेक्षाओं और उनकी आचार संहिता, यात्रा और पर्यटन एजेंसियों की जिम्मेदारियों को गंतव्यों के सामाजिक–सांस्कृतिक संवेदनशीलता के भीतर संचालित करने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। अब हम इन पहलुओं को अगले अनुभाग में देखते हैं कि मानवशास्त्रियों ने कैसे प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी) के साथ धरोहर स्थलों के बचाव और संरक्षण का अध्ययन किया है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

1. धरोहर (हेरिटेज) को परिभाषित करें।

   .....

   .....

   .....

2. सांस्कृतिक धरोहर क्या है?

   .....

   .....

   .....

3. वर्तमान में विश्व धरोहर सम्मेलन का हिस्सा कितने देश हैं?

   .....

   .....

   .....

4. कुछ वस्तुओं की सूची दें जो धरोहर का हिस्सा हो सकती हैं?

   .....

   .....

   .....

7.2 संरक्षण और पुनरुत्थान परियोजनाएं

7.2.1 केस स्टडी I

ताज महल

भारतीय संदर्भ में जब हम धरोहर स्थलों की चर्चा करते हैं, तो ताजमहल सबसे अधिक देखी जाने वाली और सार्वभौमिक रूप से जानी जाने वाली जगह है। बेगले, 1979 ने कहा था कि नोबेल पुरस्कार विजेता कवि रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा ताजमहल को "समय के गाल पर आंसू" के रूप में वर्णित किया गया है, जबकि विश्व यात्री एलेनोर रूजवेल्ट ने महसूस किया कि इसका सफेद संगमरमर "वास्तविक प्रेम की पवित्रता का प्रतीक" है। इन दोनों कथनों ने उस मकबरे के रूमानियत की ओर संकेत किया है जो माना जाता है कि मुगल सम्राट शाहजहाँ (1592–1666) ने अपनी प्रिय पत्नी मुमताज़ महल (1593–1631) की याद में बनवाया था। कोच 2005 बताती हैं कि शाहजहाँ के प्रारंभिक इतिहासकार मुहम्मद अमीन काजिनी ने 1630 के दशक में मुगल साम्राज्य की शक्ति के निशान के रूप में स्मारक का एक सुंदर विवरण दिया था। मकबरा न केवल शाहजहाँ की प्रिय पत्नी मुमताज महल के लिए एक शानदार दफन स्थान है, बल्कि सम्राट के मुख्य इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहोरी द्वारा उनके काम में बताए गए पद के लिए सम्राट की शक्ति और महिमा का भी प्रमाण है। आज भी, यह पर्यटन के संदर्भ में दुनिया में सबसे अधिक देखी जाने वाले स्मारकों में से एक है जो अधिक राजस्व कमाती है।

हालांकि, स्थानीय लोगों के लिए इसका कोई महत्व नहीं होता अगर बाहरी लोगों द्वारा इसकी प्रशंसा और महत्व नहीं होता। स्वदेशी आबादी के लिए यह एक मकबरा है और इसके अंदर केवल मस्जिद का धार्मिक महत्व था। पश्चिमी दुनिया के लिए इसकी सुंदरता ने इसे एक प्रमुख आकर्षण और पर्यटन उद्योग के लिए एक पैसा बनाने वाली मशीन के रूप में तब्दील कर दिया। ताज इस बात का उदाहरण है कि एक ही सांस्कृतिक वस्तु को विभिन्न दृष्टिकोणों से कैसे देखा जा सकता है। पर्यटन उद्योग के लिए, यह एक पैसा बनाने वाला उत्पाद है। स्थानीय ग्रामीणों और कस्बों के लोगों के लिए यह एक मकबरा है। भारतीय उपमहाद्वीप के भीतर कुछ लोगों के लिए यह एक खुरदरा अंगूठा है, जो शानदार इस्लामिक अतीत का एक निरंतर अनुस्मारक है, वफादार मुसलमानों के लिए यह एक पूजा स्थल है। फिर कुछ शायर, इसे गरीब लोगों के 'प्यार का मजाक' उड़ाना मानते हैं जो अपने प्रिय के लिए इस तरह के शानदार स्मारकों का निर्माण नहीं कर सकते। इसलिए, अधिकांश ऐतिहासिक स्मारकों में दर्शक के मंच के आधार पर इसके अनेक अर्थ हो सकते हैं। इस प्रकार, जब एक स्मारक को वैश्विक धरोहर माना जाता है, तो उसे कुछ सार्वभौमिक मूल्य का प्रतीक बनाने की भी आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए ताज को एक स्मारक के रूप में पेश किया जाता है जो रोमांटिक प्रेम का प्रतीक है, जिसे एक सार्वभौमिक मूल्य के रूप में देखा जाता है। यह इस कारण से है कि ऐतिहासिक महत्व के स्थानों को ज्यादातर संबंधित राज्यों द्वारा या यूनेस्को जैसे वैश्विक निकाय द्वारा लिया जाता है, ताकि वे अब किसी विशेष मूल्य प्रणाली से जुड़े नहीं। उदाहरण के लिए, ताजमहल के अंदर मस्जिद की मौजूदगी आमतौर पर पर्यटकों को निराश करती है। ताज को उसी तरह एक राष्ट्रीय धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है, जो इसे अपनी इस्लामी जड़ों से दूर करता है।

ताजमहल का संरक्षण और पुनरुत्थान

वर्तमान में ताजमहल भारत की एक राष्ट्रीय संपत्ति है और इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई),संस्कृति विभाग द्वारा अनुरक्षित किया जा रहा है। स्मारक का संरक्षण और

पुनरुत्थान एएसआई द्वारा किया जा रहा है। स्मारक को बनाए रखने के लिए एएसआई द्वारा कुछ खास आचार संहिता निर्धारित की गई हैं ताकि लगभग 350 साल पुराने स्मारक को संरक्षित किया जा सके। पिछले दशकों में अंतरराष्ट्रीय ख्याति के स्मारक को उच्च प्रदूषण स्तर के कारण नुकसान हुआ, इसने संगमरमर की खुबसूरती को कम कर दिया था इस प्रकार, ताज के 2 किलोमीटर के दायरे में एक बफर जोन बनाया गया था, जहां किसी भी वाहन के संचालन की अनुमति नहीं है। इस प्रकार राज्य धरोहर की इस कृति के रखरखाव में अत्यधिक शामिल है। दूसरे शब्दों में, धरोहर स्थल जैसे कि ताज, या नियाग्रा फॉल्स या स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी, अपने वास्तविक और स्थानीय मूल्यों को पार करते हैं, जो कि एक राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में जाना जाता है या जिसे शेरी ऑर्टनर ने एक मुख्य प्रतीक के रूप में संदर्भित किया है।

> *ध्यानार्थ*
>
> एक मुख्य प्रतीक एक संस्कृति, समाज, समुदाय या देश का प्रतिनिधि है। उदाहरण के लिए, एफिल टॉवर को फ्रांस के मुख्य प्रतीक, स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी अमेरिका का मुख्य प्रतीक और ताजमहल को भारत के मुख्य प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है।

7.2.2 केस स्टडी II

भीमबेटका

मैककेचर और ड्यू क्रोस (2002:1) ने बताया था कि पिछले तीन दशकों के दौरान रॉक आर्ट टूरिज्म ने सांस्कृतिक पर्यटन के तौर पर सार्वजनिक रुचि में विश्वव्यापी वृद्धि की है, जिसका अनुमान है कि एक वर्ष में 240 मिलियन से अधिक अंतर्राष्ट्रीय यात्री इससे जुड़ें हैं। दुनिया भर में चट्टान कला पर्यटन में यह उछाल स्थलों के संरक्षण और पुनरुत्थान के सवाल उठाता है। डीकन 2006: 379, कहते है कि "सांस्कृतिक धरोहर और सांस्कृतिक पर्यटन के लिए नीतियां और दिशानिर्देश विकसित किए गए हैं और सिद्धांतों को व्यापक रूप से स्वीकार करने की सीमा है, लेकिन स्थायी रॉक आर्ट टूरिज्म का सिद्धांत अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है"। पर्यटक की अंतःक्रिया और आवाजाही से रॉक पेंटिंग पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभावों और उसकी मूल अवस्था के उत्थान पर शोध की आवश्यकता पर जोर देता है, साथ ही रॉक आर्ट पर्यटन को चलाने वाले सामाजिक और आर्थिक कारकों पर भी विचार करने और सार्वजनिक हितों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इस संबंध में, डिकॉन ने टिप्पणी थी कि पर्यटक की शिक्षा चट्टान कला संरक्षण और पुनरुत्थान के संबंध में एक कदम है। यह पहलू महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि स्मारकों को कोई क्षति होती है तो उसकी मरम्मत नहीं की जा सकती। इसलिए, एक व्यक्ति को ऐसे क्षेत्र जैसे गुफा पेंटिंग जो वैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण हैं और इसका पैसे कमाने के लिए बाजारीकरण के बीच विरोधाभास के मुद्दों का सामना करना पड़ता है। यह विडंबना है कि पर्यटकों से अर्जित धन का उपयोग ज्यादातर धरोहर स्थलों के संरक्षण और पुनरुत्थान के लिए किया जाता है, फिर भी कुछ मामलों में स्थलों की नाजुक प्रकृति, मुख्य रूप से चट्टान कला स्थलों को, पर्यटन की इन गतिविधियों से नुकसान हो सकता है।

अकादमिक कार्यों में विज्ञान के तौर पर धरोहर स्थलों का संरक्षण और पुनरुत्थान सर्वोपरि है। भारत के मध्य प्रदेश में भीमबेटका शैल आश्रय गृह पहले व्यक्ति के घर थे। गुफाओं की दीवारों पर उकेरी गई कला और चित्रों के माध्यम से चट्टान आश्रयों में प्रागैतिहासिक मानव के जीवन को दर्शाया गया है। यह समय अवधि पुरापाषण काल से मध्य पाषाण काल तक फैली हुई है। आज, यह स्थल प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में से एक है और हर साल हजारों पर्यटकों द्वारा इसे देखा जाता है। अब जो सवाल उठता है वह अतीत से

इन अवशेषों को रखने की आवश्यकता या महत्व के बारे में है। इन चट्टान आश्रयों में कई पर्यटक आते हैं और इसका एक प्रभाव यह हो सकता है कि इन चट्टान आश्रयों में टूट–फूट हो सकती है। यदि कला को पर्यटकों द्वारा छुआ जा रहा है, तो इससे कीमती कला का नुकसान होगा और साथ ही वर्तमान में अतीत को देखने के इस साधन का भी नुकसान होगा। जगह की पवित्रता को बनाए रखने और कला को नष्ट होने से बचाने के लिए, सांस्कृतिक पर्यटन प्रबंधन के सिद्धांतों का पालन करने की आवश्यकता है, जो कि अंतर्राष्ट्रीय समझौते के परिणामस्वरूप विश्व धरोहर स्थलों (यूनेस्को, 2001) के लिए दिशानिर्देशों के तौर पर है। भारतीय संदर्भ में जिन धरोहर स्थलों को विश्व धरोहर स्थलों के रूप में पहचाना और स्वीकृत किया गया है, उनकी देखभाल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा की जा रही है। धरोहर स्थलों की मरम्मत, संरक्षण और पुनरुत्थान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा सीधे प्रबंधित किया जा रहा है। एएसआई दिशानिर्देश जारी करता है जो धरोहर स्थलों के आसपास व्यापक रूप से प्रसारित होते हैं। जैसा कि हमने क्षेत्र की आवश्यकता के आधार पर ताजमहल के मामले में देखा था, एएसआई द्वारा उपायों का विकास किया जाता है। भीमबेटका क्षेत्र के अवरोध के मामले में उन क्षेत्रों के आस–पास अवरोधक लगाए जाते हैं जहां गुफा कला पाई जाती है। कुछ दूरी के बाद पर्यटकों को जाने की अनुमति नहीं होती। चट्टान कला और पर्यटकों के बीच एक सुरक्षित दूरी बनाए रखी जाती है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

5. विभिन्न श्रेणियों के लोगों द्वारा ताज को प्रतीक कैसे बनाया गया है? संक्षेप में लिखें।

.....

.....

.....

.....

6. भारत में स्मारकों के संरक्षण और पुनरुत्थान के लिए कौन सा सरकारी संगठन जिम्मेदार है?

.....

.....

.....

.....

.....

7. एक मुख्य प्रतीक क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

8. पर्यटन के दृष्टिकोण से भीमबेटका चट्टान आश्रयों की चुनौतियों पर चर्चा करें?

.....

.....

.....

7.3 पर्यटन बनाम हेरिटेज स्थलः कुछ मुद्दे

प्राकृतिक बनाम धरोहर

पर्यटन और धरोहर स्थलों पर कई अध्ययनों ने इस तथ्य पर विचार किया है कि यूनेस्को के अनुसार धरोहर स्थलों की दी गई अनेक परिभाषाओं में, प्राकृतिक और हेरिटेज के रूप में घोषित स्थलों के संरक्षण और पुनरुत्थान के मुद्दे ही प्रमुख हैं। मिशेल–रोल्फ ट्रिलियट अपने काम *साइलेंसिंग द पास्ट* में देखते हैं कि 'कोई भी ऐतिहासिक कथा मौन का एक पुलिंदा है' (1995: 27)। यह कथन ऐतिहासिक तथ्यों की प्रतिलिपि में सक्रिय रूप से निर्मित अनुपस्थिति को दर्शाता है। डिलेन्सी (2020: 37) ने कहा है "धरोहर, वर्तमान में एक अतीत का धरोहर होने के नाते, ऐतिहासिक उत्पादन के समान ही आकार ले चुका है। सत्ता के पदों पर आसीन व्यक्तियों ने कथाओ (आख्यानों) के मूर्त और अमूर्त निरूपण को महत्व दिया है जो उनकी स्थिति को बढ़ाता है और आधिपत्य स्थापित करता है। इस संबंध में वह ऑथराइज्ड हेरिटेज डिस्कोर्स (अधिकृत धरोहर विमर्श AHD) को उद्धृत करते हैं, जैसा कि ऑस्ट्रेलियाई लेखक और हेरिटेज वर्कर लॉरजेन स्मिथ (2006: 4) द्वारा लिखा गया है, यह प्रमुख समाजों की महामारियों को श्रेय देता है, जो शीर्ष स्तर पर शीर्ष स्थान पर हैं। डिलेन्सी, अपने काम *'हिस्ट्री टू हेरिटेजः एन एस्सेस्मेंट ऑफ तरपम बे, एलेउथेरा, द बहामास'* में तारपम खाड़ी के बहामियन समुदाय की आवाज उठाई थी। डिलेन्सी, स्थानीय लोगों के इतिहास और धरोहर का वर्णन करते हैं क्योंकि वे चाहते थे कि इसे समझा और संरक्षित किया जाए। उनका कार्य ग्रेट ब्रिटेन के औपनिवेशिक रिकॉर्ड से प्राप्त बहामास के प्रमुख आख्यानों और निकट के संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रभाव से निर्मित था। उनके कार्य ने तारपम खाड़ी के बहामियन समुदाय के सदस्यों से उनके इतिहास और धरोहर को समझने के लिए उनका अनुकरण किया, इस प्रकार, पर्यटन गतिविधियों के एक हिस्से के बजाय धरोहर को 'स्थानीय ' लोगों के रोजमर्रा के जीवन के रूप में संरक्षित किया।

धरोहर (हेरिटेज) बनाम स्थानीय संस्कृति

क्रिस्टीना और स्वेन्सन (2018), मेइली स्नो पर्वत में तिब्बती गांव के अपने अध्ययन में, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल का हिस्सा है, तीन समानांतर नदियों ने यूनेस्को के काम में प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर के बीच अंतर और कृत्रिम अंतर में जटिलता को दिखाया था और इसके स्थानीय तिब्बती समुदाय पर पड़े प्रभावों को चिन्हित किया। पहाड़ों को केवल एक प्राकृतिक धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, हालांकि वे तिब्बतियों के लिए पवित्र हैं। नए धरोहर की स्थिति स्थानीय समुदाय के लिए पहाड़ों के लंबे समय तक सांस्कृतिक महत्व और अर्थ की अनदेखी करती है। सूचीकरण और प्राकृतिक उद्यान की स्थिति भी समस्याग्रस्त है क्योंकि यह क्षेत्र के स्थानीय समुदायों की भागीदारी और प्रबंधन की कीमत पर पर्यटकों के अनुभवों का पक्ष लेती है (लौक्कनेन 2018:195)। प्राकृतिक धरोहर के हिस्से के रूप में, पहाड़ के स्थल को यूनेस्को द्वारा मान्यता दी गई है, हालांकि, उस स्थान पर रहने वाले स्थानीय तिब्बती लोगों की संस्कृति यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची का हिस्सा नहीं है। इसने तिब्बती लोगों की संस्कृति के

लिए खतरा पैदा कर दिया है, क्योंकि स्थानीय लोगों की संस्कृति को संरक्षित करने के बजाय पर्यटकों के हित में इस क्षेत्र को विकसित किया जा रहा है, एक तथ्य यह है कि कई विद्वानों, कार्यकर्ताओं और दलाई लामा के विरोध के बावजूद भी इस क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है (बारनेट 2001; लोपेज़ 1998; आनंद 2000 लौक्कनेन 2018 में उद्धृत)। इस क्षेत्र में पर्यटन के विकास ने यहां तक कि झोंगडियान शहर का नाम बदलकर शांगरी–ला और विश्व प्राकृतिक धरोहर के हिस्से के रूप में मीली स्नो पर्वत का नामकरण किया है। हेरिटेज पर्यटन के विकास से संबंधित नीतियों ने ग्रामीणों की अपनी धरोहर और पहचान को प्रभावित किया। हालांकि, हेरिटेज पर्यटन ने स्थानीय लोगों के लिए कई लाभ (ज्यादातर आर्थिक और बुनियादी ढाँचे) लाए हैं, फिर भी इसने स्थानीय लोगों की संस्कृति को नष्ट कर दिया है (लौक्कनेन 2018: 196)।

स्थानीय पर्यावरण बनाम पर्यटक

पर्यटन राजस्व लाता है, लेकिन साथ ही बहुत सारी समस्याएँ भी लाता है। अन्य प्रकार के प्रदूषणों के साथ, भारत अब अपनी प्रदूषण चिंताओं में एक और श्रेणी, समुद्र तट प्रदूषण को भी जोड़ सकता है। नेशनल सेंटर फॉर कोस्टल रिसर्च (एनसीसीआर) द्वारा किए एक अध्ययन के अनुसार, समुद्र तटों पर प्लास्टिक के कूड़े में योगदान देने के लिए पर्यटन सबसे बड़ा कारक है (सिंह,2018)। जैसा कि हमने पहले के उदाहरणों में भी देखा था कि ताजमहल जैसे धरोहर स्थलों की बात करें तो वायु प्रदूषण एक बड़ी चिंता है। लेकिन ताज के मामले में, पर्यटन ने वास्तव में इसे बचा लिया, क्योंकि आस–पास के कारखानों से वायु प्रदूषण संगमरमर के रंग पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा था, लेकिन पर्यटन की चिंता और इस तथ्य को अब एक राष्ट्रीय खजाना माना जाता है, जिसके कारण प्रदूषण को स्मारक तक पहुंचने से रोकने के लिए कार्रवाई की गई। दूसरी ओर, भीमबेटका के शैल आश्रयों को भी खतरा है क्योंकि कई पर्यटक दौरे गुफा की दीवारों पर कला को खतरे में डाल रहे हैं। समुद्र तटों पर अपशिष्ट पदार्थों को डाला जा रहा है, जिससे होने वाले जल प्रदूषण के कारण मूल्यवान जल जीवन (समुद्र और महासागर) का नुकसान हो सकता है।

यहां यह ध्यान देने योग्य है कि पर्यटन ने मानव समाजों की सांस्कृतिक धरोहर को भी प्रभावित किया है, जिससे स्थानीय समुदायों का विस्थापन और पुनर्वास हो रहा है। वासन (2018: 483) ने कहा है जबकि "इंटरनेशनल यूनियन फॉर कन्वर्सेशन ऑफ नेचर (IUCN) ने घोषणा की है कि संरक्षित क्षेत्रों के निर्माण से दक्षिण एशिया जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में स्थानीय समुदायों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए, सदियों से मनुष्यों द्वारा बसे हुए परिदृश्य में अधिकांश संरक्षित क्षेत्र सन्निहित हैं"। वन्यजीव अभयारण्य, प्रकृति की सैर, वन भंडार कुछ ऐसे स्थान हैं जो पर्यटन के प्रभाव में आए हैं। ये क्षेत्र, पहले कई मानव समुदायों के लिए घर थे जो अब प्रतिबंधित क्षेत्र बन गए हैं, जिसके कारण स्थानीय लोगों को अपनी जीवन शैली से अलग रहना पड़ा, जो पहले जंगल के आस पास केंद्रित था। उदाहरण के लिए, बाघों के संरक्षण और पुनरुत्थान के लिए सरिस्का टाइगर रिजर्व का निर्माण किया गया, जिसकी वजह से कई स्थानीय गांवों को वहाँ से हटा कर दूसरी जगह बसाया गया है। इन विस्थापित समुदायों में से अधिकांश को स्थानांतरित कर दिया गया है इससे उनकी स्वदेशी संस्कृति और लोकरीति खो गयी हैं। भारत में, कई राष्ट्रीय पार्क , मनुष्यों और वन्यजीवों के बीच और तथाकथित अतिक्रमणकारियों और प्रवर्तकों दोनों के बीच हिंसक टकराव के स्थल बने हुए हैं (वासन 2018)। मैक रिय (2003) का तर्क है कि बहुत से पर्यटक अन्य लोगों के जीवन और संस्कृतियों का अनुभव करने के लिए यात्रा करते हैं, इसलिए यात्रियों को इस बात का पूर्वाभास हो जाता है कि वे क्या उम्मीद कर रहे हैं। पर्यटकों को संतुष्ट करने के लिए ,गन्तव्य देशों की संस्कृति में परिवर्तन किया जाता है (टूमैन,1997)। परिवर्तन के लगातार दबावों से व्यक्तियों की आदतों, दिनचर्या, सामाजिक जीवन, विश्वास और मूल्यों पर नाकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है (डोगन 1989)।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

9. "एक धरोहर स्थल को विकसित करने से स्थानीय संस्कृति पर प्रभाव पड़ सकता है"। बताएं कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

10. पर्यटन के विकास के कारण स्थानीय संस्कृति पर पड़ने वाले कुछ प्रभावों की जाँच करें।

.....

.....

.....

11. ''पर्यटन स्थानीय पर्यावरण को प्रभावित करता है।" बताएं कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

12. पर्यटन के कारण स्थानीय पर्यावरण और समुदायों में परिवर्तन पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

7.4 सारांश

पर्यटन में मूल रूप से अन्य संस्कृतियों और कभी–कभी हमारी अपनी संस्कृतियों की विरासत को भी समझना शामिल है। इसलिए, पर्यटन धरोहरों के संरक्षण और पुनरुत्थान की लिए कहता है। इस संबंध में यूनेस्को दुनिया भर में कुछ प्रसिद्ध और कुछ कम ज्ञात धरोहर स्थलों को पहचानने और उन्हें संरक्षित करने के लिए कदम उठा रहा है। हालांकि, जब पर्यटन की बात आती है, तो कई बार धरोहर (हेरिटेज) स्थलों से समझौता किया जाता है। समुदायों के स्थानीय हित यानी, मेजबान को बाहरी हितधारकों के व्यावसायिक हितों पर प्राथमिकता नहीं मिलती है। वास्तविकता में स्थानीय संस्कृति और धरोहर को दरकिनार कर दिया जाता है, जबकि केवल कुछ पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है, जो कि पर्यटकों की अपेक्षाओं के अनुरूप होता है। पर्यटन के लिए धरोहर मूल्यों; उनके संरक्षण और पुनरुत्थान को संकट में डाल कर प्रमाणिक जानकारी के बजाय पर्यटन को आकर्षित करने के लिए कुछ अप्रमाणिक चित्र पर्यटकों के सामने प्रस्तुत किये जाते है जिसकी वह परिकल्पना करते हैं। इस प्रकार, हम पर्यटक की नजरों से आपकी अपनी धरोहर को देखना शुरू करते हैं।

7.5 संदर्भ

बेगले, डब्ल्यू. (1979). द मिथ ऑफ द ताजमहल एंड ए न्यू थ्योरी ऑफ इट्स मिनिंग. *द आर्ट बुलेटिन*, 61 (1), 7–37. डोईः 10.2307 / 3,049,862.

बेलाफियोर, वी, हरकनेस, टी, सिन्हा, ए, एंड वेस्कोट, जे. (2003). द रोमांस एंड द रियेलीटी .*लैंडस्केप आर्किटेक्चर*, 93 (9), 50–104. 5 अप्रैल, 2020 को www.jstor.org/stable/44673783 से लिया गया.

डेकोन, जेनेट. (2006). "रॉक आर्ट कन्जर्वेशन एंड टूरिज्म " इन *जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजीकल मेथड एंड थ्यौरी*, वॉल्यूम 13, नंबर 4, एडवांसेस इन स्टडी ऑफ प्लीस्टोसीन इमेजरी एंड सिंबल यूज (पार्ट I) (दिसम्बर, 2006), पृ.स. 379–399. स्प्रिंगर- https://www.jstor.org/stable/20177546

डिलेंसी, केली. (2020). "हिस्ट्री टू हेरिटेजः एन असेसमेंट ऑफ तरपम बे, एलेउथेरा, द बहामास" इन *मेमोरी, माइग्रेशन एंड (डी) कॉलोनाइजेशन इन द कैरेबियन एंड बियॉन्ड.* (संपा) जैक वेब, रॉड वेस्टमास, मारिया डेल पिलर कलाडीन, विलियम टैंटम. लंदनः युनिवर्सिटी ऑफ लंदन प्रेस , इंस्टीट्यूट ऑफ लैटिन अमेरिकन स्टडीज़. (2020) पृ.स. 37–55. https://www.jstor.org/stable/j.ctvwh8cwp.8

ग्रिफिथ्स, मैरी एंड किम बारबोर.(संपा) (2016) "रिक्लेमिंग हेरिटेज फॉर यूनेस्को : डिसकर्सिव प्रैक्टिस एंड कम्युनिटी बिल्डिंग इन नॉर्दर्न इटली " *इन मेकिंग पब्लिक्स, मेकिंग प्लेसेस.* युनिवर्सिटी ऑफ एडिलेड प्रेस. https://www.jstor.org/stable/10.20851/j.ctt1t304qd.10

कोच, ई. (2005). द ताज महलः आर्किटेक्चर, सिम्बोलिस्म, एंड अर्बन सिग्निफीकेंस. *मुकर्नस*, 22, 128–149. 5 अप्रैल, 2020 को www.jstor.org/stable/25482427 से लिया गया.

लौक्कनेन, सोनजा (2018). "होली हेरिटेजः आइडेंटिटी एंड औथेंटिसीटी इन ए तिब्बतियन विल्लेज". माग्स, क्रिस्टीना एंड मरीना स्वेन्सन (संपा), चाइनीज हेरिटेज इन द मेकिंग : एक्सपीरियेंसेस, नेगोशियेशंस एंड कंटेस्टेंस . एम्स्टर्डमः एम्स्टर्डम यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ.स. 195–https://www.jstor.org/stable/j.ctt2204rz8.11

मैककेर्चर, बी., एंड ड्यू क्रॉस, एच. (2002). *कल्चरल टूरिज्म : द पार्टनरशिप बिटवीन टूरिज्म एंड कल्चरल.* हेरिटेज मैनेजमेंट, हॉवर्थ हॉस्पिटैलिटी प्रेस, न्यूयॉर्क

नेहरू, जवाहरलाल. (1946). डिस्कवरी ऑफ इंडिया.द सिग्नेट प्रेस.

सिंह, शिव सहाय. (2008)."टूरिस्ट ब्रिंग अ वेव आफ ट्रैस टू बीचेज" द हिंदू.7 दिसंबर https://www.thehindu.com/todays-paper/tp-national/touristsbring-a-wave-of-trash-to-beaches/article25684336.ece

द ताजमहल, आगरा, इंडिया.(2014). *हिस्टोरिक गार्डन्स रिव्यू* , (30), 42–43. 5 अप्रैल, 2020 को www.jstor.org/stable/44790048 से लिया गया.

ट्रयूलॉट, एम. आर. (1995). *साइलेंसिंगिंग द पास्टः पॉवर एंड द प्रोडक्शन ऑफ हिस्ट्री.* बोस्टन, एमएः बीकन प्रेस.

वासन, एस. (2018). "कन्ज्युमींग द टाइगर एक्सपिरियेंसींग नियोलिबरल नेचर" इन *कन्जर्वेशन एंड सोसाइटी*. वोल्यूम 16, नंबर 4 (2018), पृ.स. 481–492. अशोका ट्रस्ट फॉर रिसर्च इन इकोलॉजी एंड द एनवायरनमेंट एंड वोल्टर्सक्लूवर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड. https://www.jstor.org/stable/26500661

7.6 आपकी प्रगति जांचने के लिए उत्तर/संकेत

1. कृपया उत्तर हेतु अनुभाग 7.1 का संदर्भ लें।
2. कृपया उत्तर हेतु अनुभाग 7.1 देखें।
3. अनुभाग 7.1 देखें।
4. अनुभाग 7.1 देखें।
5. अनुभाग 7.2 देखें।
6. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण।
7. कृपया उत्तर हेतु अनुभाग 7.2 का संदर्भ लें।
8. कृपया उत्तर हेतु अनुभाग 7.2 देखें।
9. सही।
10. कृपया उत्तर हेतु अनुभाग 7.3 देखें।
11. हां।
12. कृपया उत्तर हेतु अनुभाग 7.3 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 8 मूर्त और अमूर्त धरोहर*

इकाई की रूपरेखा

8.0 परिचय

8.1 सांस्कृतिक धरोहर

8.1.1 सांस्कृतिक धरोहर के रूप में कला

8.1.2 उत्सव

8.1.3 खाद्य पहचान

8.2 हेरिटेज : संरक्षण और पुनरुत्थान

8.3 सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संग्रहालय

8.5 सारांश

8.6 संदर्भ

8.7 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर/संकेत

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित बातों को समझने में सक्षम होंगे:

- मूर्त और अमूर्त धरोहर को परिभाषित करना;
- उत्सवों, भोजन, संग्रहालयों और कला के महत्व को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में समझना; तथा
- यह चर्चा करना कि हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए कैसे योगदान कर सकते हैं।

8.0 परिचय

पहले की इकाई में हमने पर्यटन और हेरिटेज स्थलों के बीच संबंधों पर चर्चा की थी। इन स्थलों के संरक्षण और पुनरुत्थान की चुनौतियां और लाभ के पक्ष में संस्कृतियों का समझौता, प्रमुख विषय थे। इस इकाई में हम सांस्कृतिक धरोहर को परिभाषित करने के साथ–साथ मूर्त और अमूर्त धरोहर के बीच के अंतर को विस्तार से बताने का प्रयत्न करेंगे। प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी) का उपयोग इन दोनों के बीच के अंतर को समझने के लिए उदाहरण के रूप में किया जाएगा।

8.1 सांस्कृतिक धरोहर

वर्तमान में, धरोहर या हेरिटेज शब्द में सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर दोनों शामिल हैं। अगर हम दुनिया में मौजूद सांस्कृतिक विविधताओं को समझना चाहते हैं, तो हम संस्कृति को प्रकृति से अलग नहीं कर सकते, क्योंकि पूरी तरह से तो नहीं, पर कुछ हद तक मानव संस्कृति प्राकृतिक पर्यावरण से अनुकूलित है। हालाँकि, जैसा कि डेरिल फोर्ड जैसे

***योगदानकर्ता:** डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव, पूर्व एसोशियट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जानकी देवी मेमोरियल कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

मानवविज्ञानी द्वारा बताया गया है, पर्यावरण या प्रकृति संस्कृति पर एक निर्धारित भूमिका के बजाय एक सीमित भूमिका निभाता है। सांस्कृतिक धरोहर के अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

- सांस्कृतिक धरोहर के महत्व और इसे संरक्षित करने की आवश्यकता को प्रतिबिंबित करना।
- सांस्कृतिक धरोहर के प्रकारों की व्याख्या करना।
- भारत में पर्यटन के लिए सांस्कृतिक धरोहर के योगदान को समझना।
- सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और पुनरुत्थान में संस्थानों की भूमिका को समझाना।

सांस्कृतिक धरोहर लोगों को उनके मूल्यों, मानदंडों, विश्वासों, रीति–रिवाजों और पवित्र संसाधनों से जुड़ने की स्वीकृति देता है और साथ ही समुदायों को अपने पूर्वजों और उनके अतीत को बेहतर ढंग से समझने की भी अनुमति देती है। एक पूरे राष्ट्र के मामले में, ये मूल्य अपनी सीमाओं के भीतर सांस्कृतिक संपत्ति की उपस्थिति से पहचान और एकता की भावना को बढ़ाते हैं। इन धरोहर स्थलों की उपस्थिति कलाकृतियों और इसके भौगोलिक और ऐतिहासिक परिवेश के बीच की कड़ी को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, भारत के लिए, ताजमहल और कोणार्क मंदिर जैसे धरोहर स्थलों की उपस्थिति गर्व की भावना पैदा करती है और अतीत और वर्तमान को एकजुट करते हुए सामान्य धरोहर के माध्यम से जुड़ी हुई है। ऐसे धरोहर स्थल एक राष्ट्र के रूप में सामान्य स्वामित्व जिम्मेदारी की भावना पैदा करते हैं जो उन्हें संरक्षित और बढ़ावा देते हैं। जैसा कि बेनेडिक्ट एंडरसन (2006) जैसे सामाजिक वैज्ञानिकों ने राष्ट्र को एक निर्माण के रूप में परिभाषित किया है, सांस्कृतिक धरोहर एक ऐसा तंत्र है जो इस तरह के निर्माण के लिए योगदान देता है, क्योंकि यह कुछ वस्तुओं को सामान्य संपत्ति के रूप में पहचानता है, एक वस्तु जिसका एक सामूहिक स्वामित्व है जो एक अस्तित्व से संबंधित है राष्ट्र कहलाता है। जब हम कहते हैं कि ताजमहल भारत का है, तो हम इस कथन के माध्यम से भारत बनाने में मदद कर रहे हैं।

इस पहचान को बनाए रखने के लिए एक राष्ट्र के लिए यह अनिवार्य है कि ऐसी सामूहिक स्वामित्व वाली वस्तुओं के बारे में ज्ञान का संरक्षण और प्रसार एक राज्य उद्यम के रूप में होना चाहिए और व्यक्तियों के ऊपर नहीं छोड़ा जाना चाहिए। राज्य अपने औपचारिक संस्थानों जैसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के माध्यम से काम करता है। इसके अलावा, स्थानीय स्वयंसेवक और सामुदायिक निवासी धरोहर स्थलों के संरक्षण और पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे सामान्य जिम्मेदारी और आत्म–जागरूकता की भावना पैदा करते हैं जो स्थानीय आबादी की कार्रवाई में अनुवादित हो जाते हैं, जो बदले में एक राष्ट्र के नागरिकों के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं, जिससे उन्हें लगता है कि वे राष्ट्र से संबंधित हैं। स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना राष्ट्र के साथ पहचान की भावना के सीधे आनुपातिक है। स्थानीय लोगों की शक्ति का उपयोग करने के लिए, सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों (एनजीओ) को स्थानीय लोगों के सांस्कृतिक अधिकारों और विकास की उनकी धारणा का सम्मान करना चाहिए ताकि धरोहर को प्रभावी ढंग से संरक्षित किया जा सके, साथ ही साथ स्थानीय लोगों के हित और वैध अधिकारों और सुरक्षा को खतरे में न डालें। यदि लोग अधिकारविहीन महसूस करते हैं, तो वे अपनी जिम्मेदारी की भावना उसी अनुपात में खो देंगे, जैसा कि वे असंतुष्ट महसूस करते हैं। यदि स्थानीय लोगों को बताया जाता है कि किसी निश्चित वस्तु या

क्षेत्र पर उनका कोई अधिकार नहीं है, तो उन्हें इसकी देखभाल करने की कोई मजबूरी महसूस नहीं होगी।

इस ओर, विशेषज्ञों की भूमिका लोगों को सलाह देने और धीरे–धीरे रास्ता दिखाने की होनी चाहिये, जिससे लोगों को यह महसूस ना हो की उनपर यह कार्य ज़बरदस्ती थोपा गया है ।

धरोहर चक्र आरेख

यह एक विचार देता है कि इसे हमारे भविष्य का हिस्सा कैसे बनाया जाए (साइमन थर्ले, 2005)। आरेख को घड़ी की दिशा के अनुसार इंगित चिन्हों की सहायता से पढ़ें :

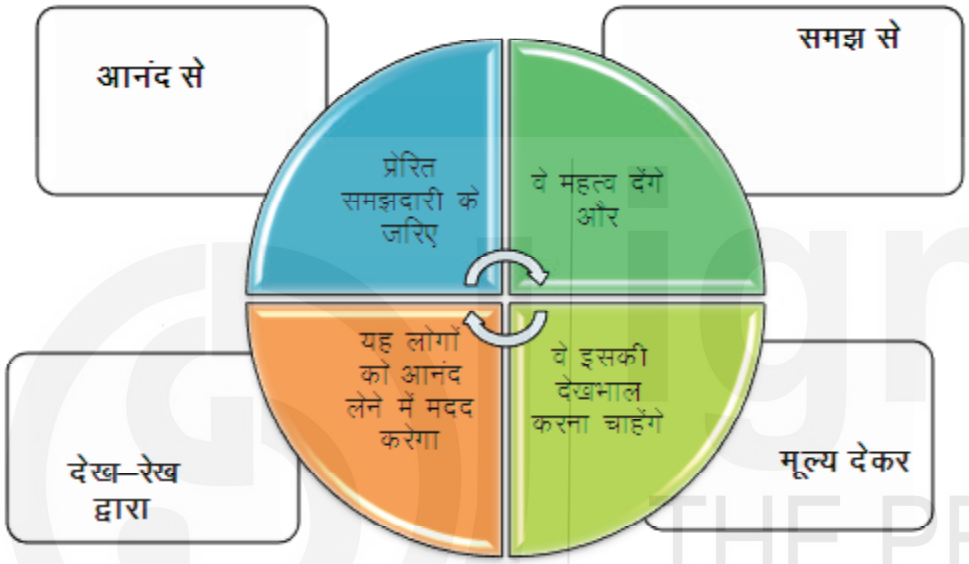

हेरिटेज(धरोहर) चक्र आरेख

स्रोत https://www.researchgate.net/figure/Heritage-cycle-diagram-gives-us-an-idea-how-we-can-make-the-past-part-of-our-future_fig1_319482751-

आइए अब सांस्कृतिक धरोहर के अंतर्गत आने वाले कुछ पहलुओं को समझें। बेहतर समझ के लिए, हम भारतीय संदर्भ में उनमें से कुछ उदाहरणों के साथ समझने का प्रयत्न करेंगे।

8.1.1 सांस्कृतिक धरोहर के रूप में कला

स्पिक मैके के संस्थापक डॉ किरण सेठ को स्कूलों, कॉलेजों और अन्य संस्थानों में युवा लोगों को शास्त्रीय कलाएं ग्रहण कराने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने पिछले 42 वर्षों तक अथक परिश्रम किया। वह इसे कला और विज्ञान के बीच संबंधों एवं कला को एक अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में दर्शाते है। सरोद के महान उस्ताद अमजद अली खान की राय है कि "हमारे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में हाथी की चाल धीमी–स्थिर और गरिमामय है, यह घोड़े की दौड़ नहीं है"। इसका अर्थ यह है कि शास्त्रीय कलाओं को सीखने में लंबा समय लगता है और यहां तक कि उनकी सराहना करने के लिए, किसी को समय समर्पित करना पड़ता है और समर्पण दिखाना पड़ता है। इसलिए धरोहर की प्रशंसा युवा आयु में शुरू होनी चाहिए।

ध्यानार्थ

स्पिक मैके मंच हर साल भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य, लोक प्रदर्शन, प्रमुख कलाकारों और चित्रकारों द्वारा वार्ता, उत्कृष्ट सिनेमा, विरासत सैर, शिल्प कार्यशालाओं और योग अभ्यास ध्यान(मेडीटेशन) तकनीकों के प्रमुख प्रदर्शनियों द्वारा संगीत कार्यक्रमों की विशेषता प्रदान करता है। ये स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों जैसे शैक्षिक संस्थानों में आयोजित होते हैं, युवा पीढ़ी को लक्षित करते हैं ताकि उन्हें हमारे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानकारी दी जा सके।

भारत में, इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज, (INTACH) कला रूपों के संरक्षण, पुनरुत्थान और रखरखाव का काम करता है। इसमें एक संरक्षण प्रयोगशाला और एक ज्ञान केंद्र है जिसमें किताबें और विभिन्न कला एवं शिल्प उत्पाद शामिल हैं। यह धरोहर शिक्षा और संचार सेवा भी प्रदान करता है तथा हेरिटेज पर्यटन पर पाठ्यक्रम संचालित करता है। इसमें हेरिटेज अकादमी भी है जहां अमूर्त सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। सांस्कृतिक मामलों का प्रभाग छात्रवृत्ति प्रदान करता है और संबंधित क्षेत्रों में प्रतिष्ठित लोगों द्वारा सेमिनार, कार्यशालाओं, चर्चाओं को आयोजित करता है।

मीडिया एवं इंटरनेट कला, साहित्य और संस्कृति से जुड़े अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कई कला ब्लॉगों ने कला और व्यवसाय, कला और स्वास्थ्य लाभ, कला शिक्षा, कला व्यवसाय, सामुदायिक कार्य, सार्वजनिक कला, कला और सामाजिक तकनीकी परिवर्तन में कला की विशेषताओं को शामिल किया है। इस तरह के ब्लॉग और संगठन दुनिया भर में कला धरोहर को बढ़ावा देते हैं, प्रोत्साहित करते हैं, बनाए रखते हैं और समर्थन करते हैं। समय के साथ भारत के कई अमूर्त धरोहर के "गायब होने" के बारे में चिंतित, संयुक्त राष्ट्र ने अपने यूनेस्को कार्यक्रम के तहत देश के कला रूपों और शिल्प कौशल की एक सूची बनाने पर एक परियोजना शुरू की है ।

भारत में यूनेस्को के परियोजना निदेशक के अनुसार, एक छोटे शहर में हाथ से तैयार की गई साड़ियों के उत्पादन की एक सरल परंपरा, देश के एक कोने में किसी गाँव में एक लोक गीत, किसी की माँ या दादी द्वारा गढ़ी गई विधि (नुस्खा) जो समाप्त होने की कगार पर है क्योंकि अगली पीढ़ी दूसरे बड़े शहरों में चली गई है; इस परियोजना ने भावी पीढ़ी के लिए एक प्रकार के संपुस्तिका (कैप्सूल) में समाहित करने का प्रयत्न किया है। इस दिशा में ध्वनियों, स्थलों, तकनीकों, शैलियों के माध्यम से फोटोग्राफी और अन्य श्रव्य–दृश्य माध्यमों की तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है।

मानवविज्ञान के दृष्टिकोण से, सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण बहुलता में एकता की भावना, पहचान की भावना और एक राष्ट्र के लोगों के लिए अपनेपन की भावना को जीवित रखता है। चूँकि राष्ट्र एक निर्मित पहचान (एंडरसन, 2008) है, इसलिए इस तरह की आम धरोहर एक ऐसी पहचान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिसका एक सार है। सांस्कृतिक हस्तांतरण पहचान के रखरखाव और अप्रतिमानता को रोकने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसलिए, हस्तांतरण धरोहर की सुरक्षा का एक अभिन्न पहलू है। न केवल सामग्री कलाकृतियों बल्कि कौशल, ज्ञान और अर्थ को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करने की आवश्यकता है।

भारत सरकार का संस्कृति विभाग, महत्वपूर्ण घटनाओं को स्मरण करने और महान कलाकारों के शताब्दी का अभिनंदन करने के लिए एक केंद्रक अभिकरण (नोडल एजेंसी)

है। बहुल कला, व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से मूल्य के उत्पादों, रचनात्मक गतिविधि और चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य, थिएटर, फिल्मों और ग्राफिक कला जैसे रचनात्मक गतिविधियों की विभिन्न शाखाओं में अभिव्यक्ति को संदर्भित करती है। कला, 'आर्ट' की तुलना में एक व्यापक शब्द है जिसका अर्थ केवल दृश्य कला है, कला शब्द '*आर्स (ते)*'से आया है जिसका अर्थ है व्यवस्था–निर्माण कार्य या कलाकृतियां, जो मानव रचनात्मक आवेग का उपयोग करती हैं और जिनका अर्थ सरल विवरण से परे है। गद्य लेखन, कविता नृत्य, अभिनय या नाटक फिल्म, संगीत, मूर्तिकला, फोटोग्राफी, चित्रांकन वास्तुकला, सामूहिक पेंटिंग, शिल्प और फैशन कला को रचनात्मकता, सौंदर्यशास्त्र और भावनाओं की उत्पत्ति से संबंधित भी समझा जा सकता है।

मानवविज्ञान ने कला को संस्कृति का एक उपखंड माना है, जो कई रचनात्मक प्रयासों और मानव मन के भौतिक और गैर–भौतिक उत्पादों से बना है। मानवविज्ञान के शुरुआती समय में, कला एक ऐसा विषय था जिस पर ध्यान दिया गया था, जैसे कि फ्रांज़ बोआस द्वारा भारत में आदिम कला *(प्रिमिटिव आर्ट)* और वेरियर एलविन के कार्य *भारतीय जनजातियों की कला और शिल्प* ।

8.1.2 उत्सव

होलीः अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का एक प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

होली का उत्सव इस दुनिया और दूसरी दुनिया के अंतरात्मा की दशा का वर्णन करता है, जो हिंदू पौराणिक कथा के अनुसार ,दैत्यराजा हिरण्यकश्यप जो अमरता के निकटता को प्राप्त करता है, और अपनी इस शक्ति के नशे में है, उसने आदेश दिया कि उसे भगवान के रूप में पूजा जाए। भगवान विष्णु के भक्त, दानव राजा के बेटे, प्रह्लाद ने अपने पिता को भगवान के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया तो उसे बहुत यातनाएं दी गईं। हालांकि, कुछ भी प्रह्लाद के दृढ़ संकल्प को नहीं बदल सका। अपने प्रति प्रह्लाद की भक्ति को परिवर्तित करने में असमर्थ होने के कारण, राजा ने अपनी बहन होलिका (जिसके नाम पर त्योहार का नाम रखा गया) से बेटे से छुटकारा पाने के लिए मदद मांगी और गैर–भक्तों के लिए एक उदाहरण भी प्रस्तुत किया। जनता को एक मजबूत संदेश भेजने की कोशिश में और राजा को टालने की हिम्मत रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक उदाहरण स्थापित करने के लिए होलिका ने प्रह्लाद को मारने की योजना बनाई। उसने उसे चिता पर अपनी गोद में बैठा लिया। हालाँकि, दूसरी दुनिया के देवता, प्रह्लाद की भक्ति को देखकर, उनके बचाव में आ गए, जबकि होलिका जलकर राख हो गई थी, भले ही उसे आग से प्रतिरक्षा का वरदान मिला था। परंपरागत रूप से, *होली* उत्सव त्योहार की पूर्व संध्या पर चिता को जलाने के साथ शुरू होता है, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है (भंडारी 2017)।

हालांकि, भारत के विभिन्न हिस्सों में होली के उत्सव के साथ अलग–अलग अर्थ और मान्यताएँ जुड़ी हुई हैं। होली को कुछ स्थानों पर *लठ* के साथ *लठ मार* (लाठी से पीटना) होली के रूप में भी जाना जाता है। किंवदंती के आधार पर माना जाता है कि एक बार कृष्ण होली के दिन राधा को रंगों में सराबोर करने की कोशिश कर रहे थे और उनके मित्र उनकी रक्षा करने के लिए लाठी लेकर आए थे और इस प्रकार उत्तर प्रदेश में राधा की जन्म स्थली बरसाना में हर जगह इसी तरह से होली मनाई जाती है (मुखर्जी , 2018)। जबकि अन्य लोग इसे भूमिका परिवर्तन की एक गतिविधि के रूप में देखते हैं, जहां महिलाएं खुद को अभिव्यक्त करती हैं, अन्यथा पितृसत्तात्मक समाज में उनके रोजमर्रा के जीवन में दमन और अधीनता होती है। भंडारी (2017) अपने कार्य के लिए भारत के उत्तराखंड में हिमालय की तलहटी में एक गांव चिलकिया में रंगों के त्योहार *होली* का

जश्न मनाते हैं। वह उस महत्व को प्रस्तुत करते है जो होली में शामिल : पौराणिक, लोक, सांस्कृतिक, सामाजिक और होली के संदर्भ में लिंग संबंधों के बारे में जानकारी देता है। इस प्रकार, जो पर्यटक लोगों के इतिहास और संस्कृति में रुचि रखते हैं, उन्हें होली का यह पहलू बहुत ही आकर्षक लगता है। रंगों की विशिष्टता इसे पर्यटन के लिए सबसे आकर्षक अवसरों में से एक बनाती है। पूरे भारत में मनाए जाने वाले रंगों का त्योहार पर्यटन के लिए एक वरदान है, क्योंकि कई पर्यटक उत्सव में शामिल होना पसंद करते हैं। दुनिया भर के पर्यटक इस त्योहार और कई अन्य त्योहार जैसे कोणार्क नृत्य महोत्सव आदि का हिस्सा बनने के लिए अग्रिम बुकिंग करते हैं ।

छाऊ नृत्यः जिसे *पैकु नृत्य* (युद्ध नृत्य) भी कहा जाता है। छाऊ नाम *छावनी* (सैन्य शिविर) से लिया गया है। यह लोक नृत्य पारंपरिक रूप से एक विजय नृत्य के रूप में उभरा, जो ओडिशा, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल सहित भारत के पूर्वी भाग के योद्धाओं द्वारा किया गया था। परंपरागत रूप से, बिहार में महाकाव्यों – महाभारत और रामायण, लोक कथाओं आदि से नृत्य का चित्रण किया गया था। इसकी तीन अलग–अलग शैलियाँ पूर्वी भारत के सरायकेला, पुरुलिया और मयूरभंज के क्षेत्रों से आती हैं। *"छाऊ भारत में नृत्य के शुरुआती देशी रूपों में से एक है। इन प्रथाओं से पता चलता है कि भारत में अतीत के साथ निरंतर सम्पर्क में रहना अपनी धरोहर के लिए एक महत्वपूर्ण मापदंड है "*(मुखर्जी 2015)।

8.1.3 खाद्य पहचान

धरोहर के रूप में भोजन

धरोहर के रूप में भोजन को सामाजिक–सांस्कृतिक दोनों के निर्माण के रूप में माना जाता है – जो प्रतीकात्मक रूप से एक पहचान और एक मूल्य वर्धित उद्योग का प्रतिनिधित्व कर सकता है। यह कहा जा सकता है कि एक क्षेत्र या समुदाय के भीतर पीढ़ियों से प्रसारित होने वाले भोजन के परिवर्तन, वितरण और खपत से संबंधित सभी ज्ञान और व्यवहार एक सामूहिक धरोहर बनाते हैं। मानवविज्ञानियों ने भोजन के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया है जो पर्यटन से संबंधित है। बेलास्को और स्क्रैंटन, 2002 ने राष्ट्रीय पहचान बनाने के उद्देश्य से उपभोक्ता स्वाद और व्यंजन के उपयोग का विश्लेषण किया है। जबकि कुछ ने खाद्य पहचान के निर्माण में बाहरी ताकतों की ऐतिहासिक भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया था। कोलकाता बिरयानी का इतिहास जो कि अवधी, लखनवी और हैदराबादी संस्करणों से अलग है, एक अच्छा उदाहरण है। कोलकाता बिरयानी को नवाब वाजिद अली शाह (1856) और उनके रसोईये द्वारा इसमें आलू और उबले हुए अंडो के प्रयोग करने के लिए जाना जाता है , जो उस समय के ब्रिटिश शासकों द्वारा नवाब के घटते धन के मामले के रूप में दिखाया गया था, जिससे उन्होंने अपने रसोईये को मीट के बदले आलू का उपयोग करने के लिए मजबूर किया (भंडारी 2020 हिंदुस्तान टाइम्स)।

भोजन किसी संस्कृति के लोकाचार को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। एक धरोहर अस्तित्व के रूप में भोजन की अवधारणा ने पर्यटन उद्योग में कई हितधारकों के प्रवेश की अनुमति दी थी। मानवशास्त्रीय अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि "भोजन सामाजिक सीमाओं को कैसे सीमांकित करता है, खासकर तब जब वे बौद्धिक संपदा या अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में वस्तुगत हो जाते हैं" (पलमी 2009:54)। भारतीय संदर्भ में किसी एक मामले में भौगोलिक संकेत (जी आई) के रूप में मिठाई *'रसगुल्ला'* को पहचान के लिए माना जा सकता है। जीआई टैग पश्चिम बंगाल राज्य को दिया गया था क्योंकि उन्होंने दावा किया था कि यह नब्बे के दशक में एक प्रसिद्ध मिठाई निर्माता नबीन चंद्र दास द्वारा नजाकत से बनाई गई मिठाई है। हालांकि यह, ओडिशा राज्य द्वारा

चुनौती दी गई थी, जिसने इसे पुरी में भगवान जगन्नाथ को दिए गए पारंपरिक अनुष्ठान प्रसाद के एक भाग के रूप में माना था, जो एक मंदिर है जो कि 12वीं शताब्दी में बनाया गया था, वे अपने दावे के आधार पर मिठाई का नाम '*बंगलार रसगुल्ला*' से बदलकर '*जगन्नाथ रसगुल्ला*' चाहते थे। दोनों राज्य जीआई पहचान के लिए एक कड़ी लड़ाई में थे जो लगभग दो साल तक चला था और यह फैसला पश्चिम बंगाल के पक्ष में गया, इस प्रकार पश्चिम बंगाल की सरकार ने 30 जुलाई को अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए '*रसगुल्ला दिवस*' घोषित किया (नाथ 2019): न्यूज 18 इंडिया)। भोजन से जुड़ी ऐतिहासिक धारणाएं इसे पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाती हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

1. राष्ट्रीय धरोहर क्या है? अपने क्षेत्र में राष्ट्रीय धरोहर स्थलों (यदि कोई हो) को सूचीबद्ध करें।

   .....

   .....

   .....

2. भारत के कुछ अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के नाम बताइए।

   .....

   .....

   .....

3. भोजन सांस्कृतिक धरोहर का एक हिस्सा है '। बताइए की यह कथन सही है या गलत।

   .....

   .....

   .....

8.2 हेरिटेज : संरक्षण और पुनरुत्थान

आज, जब हम धरोहर की बात करते हैं, तो यह माना जाता है कि इसमें पुरानी इमारतें और स्मारक, पैतृक संपत्ति और ऐतिहासिक स्थल शामिल हैं। लेकिन धरोहर कोई वस्तु नहीं है जो केवल "ईंट और पत्थर " तक सीमित है और ना ही यह एक इमारत कैसे दिखती है और यह कितनी पुरानी है पर निर्भर है। धरोहर उन स्थानों, वस्तुओं और विचारों को संदर्भित करता है जो सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से मूल्यवान हैं और जिन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया गया है(प्रैंटिस 1994)। यूनेस्को की धरोहर सूची में धरोहर के मूर्त और अमूर्त दोनों रूप शामिल हैं। इमारतों, स्मारकों और भौतिक वस्तुओं को मूर्त सूची में शामिल किया गया है; जबकि त्योहारों, भाषाओं, संगीत, हस्तशिल्प, एक विशेष पाक विशेषज्ञता (व्यंजनों), वस्त्र, एक विशेष जीवन शैली (आदिवासी, खानाबदोश) और प्रदर्शन कला को भी अमूर्त धरोहर के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। 2003 के यूनेस्को सम्मेलन ने "अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षित रख–रखाव" के समर्थन को चिह्नित किया, जो गैर–भौतिक सांस्कृतिक धरोहर पर केंद्रित है। सम्मेलन का मुख्य विषय 'सुरक्षा' था, जिसे अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की व्यवहार्यता सुनिश्चित करने

के उद्देश्य से परिभाषित किया गया है, जिसमें पहचान, प्रलेखन, अनुसंधान, संरक्षण, पुनरुत्थान, प्रोत्साहन, वृद्धि, प्रसारण, विशेष रूप से औपचारिक और गैर–औपचारिक शिक्षा, साथ ही साथ इस तरह की धरोहर के विभिन्न पहलुओं का पुनरोद्धार शामिल है (अनुच्छेद 2.3 केटुमेस्टे द्वारा उद्धत 2006: 166)।

यूनेस्को द्वारा अमूर्त धरोहर की परिभाषा इस प्रकार है: "प्रथाओं, प्रतिनिधित्व, अभिव्यक्ति, ज्ञान, कौशल के साथ–साथ वहां से जुड़े उपकरण, वस्तुएं, कलाकृतियां और सांस्कृतिक रिक्त स्थान– जो समुदायों, समूहों से सम्बंधित हैं और कुछ मामलों में, व्यक्तियों को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता दी गई हैं। "(अनुच्छेद 2, यूनेस्को सम्मेलन 2003)। अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर, जैसा कि शब्द से ही पता चलता है, संस्कृति का वह हिस्सा है जो भौतिक नहीं है, उदाहरण के लिए मूल्यों, मानदंड, विश्वास, लोककथाएं, नृत्य और संगीत, जिनका कोई निश्चित आकार नहीं है, लेकिन हमारी सांस्कृतिक प्रथाओं का हिस्सा हैं। ये तत्व अपने दम पर जीवित नहीं रहते हैं, लेकिन समाज में लोगों के दिन–प्रतिदिन के प्रथाओं को जीवित रखा जाता है। उदाहरण के लिए, कला के रूप में नृत्य का मूल समाज और उसकी संरचनाओं में है, जैसा कि भारत की मंदिर संस्कृति में है। स्मारकों और सांस्कृतिक प्रथाओं के बीच एक संबंध है जो सांस्कृतिक स्थान बनाते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में अधिकांश भारतीय मंदिरों का हिस्सा रही मंदिर नृत्य परंपराओं को मद्रास देवदासी अधिनियम, 1947 द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था। इसके कारण कला का स्वरूप घटता चला गया और यह लगभग गुम हो गया। हालांकि, आज मंदिर नृत्य रूपों को आधुनिक विद्वानों और रुक्मिणी देवी अरुंडेल, केलुचरण महापात्रा, पद्मा सुब्रह्मण्यम और कई अन्य विद्वानों और नर्तकियों द्वारा आधुनिक दुनिया की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संशोधित और पुनर्निर्मित किया गया है। नृत्यों को अब केवल मंदिर परंपरा के हिस्से के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि हमारे देश की शास्त्रीय धरोहर के रूप में भी देखा जाता है और इन्हें प्रतिष्ठित लोगों के रूप में दर्जा दिया गया है। उन्होंने इस परंपरा को मंदिरों से हस्तांतरित करके सार्वजनिक संस्कृति का एक पहलू बनाया। इस तरह उन्होंने वैधता और मान्यता को भी मध्यवर्गीय जीवन शैली का सम्मानजनक और स्वीकृत हिस्सा मान लिया है।

इसी तरह, कई लोककथाएँ और परंपराएँ हैं, जो विलुप्त होने के कगार पर हैं, इस प्रकार, इस तरह की सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने और संरक्षित करने की आवश्यकता है। युनेस्को की अमूर्त धरोहर की सूची पर्यटन उद्योग के लिए एक वरदान रही है; 2003 में अमूर्त धरोहरों के संरक्षण और उनकी सुरक्षा को अपनाने के कारण, दुनिया भर में कला के कुछ रूप जो समाप्त होने की कगार पर थे,उन्हें एक नया जीवन मिला है।

भारतीय संदर्भ में, राजस्थान की कालबेलिया नृत्य और कालबेलिया जनजाति के गीत, जो पहले सपेरे थे, 2010 में यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में सूचीबद्ध हुए। कालबेलिया नृत्य नागों और उनकी गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करता है। महिलाओं ने काले कपड़े पहनकर और भारी कढ़ाई के काम, टैटू और गहने के साथ, अपने सपेरे पूर्वजों की पौराणिक कहानियों को पेश किया। पुरुष समूह में खंजरी (वाद्ययंत्र) और पूंगी बजाया जाता है, जिसका इस्तेमाल सांपों को आकर्षित करने के लिए किया जाता है। यूनेस्को द्वारा इसकी सूचीबद्धता के बाद कला रूप की लोकप्रियता बढ़ी है। जनजातीय समूह को अपनी प्रदर्शन कला में नई मिली दिलचस्पी ने अपनी परंपराओं को जारी रखने के लिए भी प्रोत्साहित किया। इसलिए, जो आदिवासी समूह तेजी से बदलती दुनिया को अपनाने के लिए अपना पेशा बदल रहा था, उन्हें अपनी कला और संस्कृति को जीवित रखने के लिए राजी भी किया गया था। हालांकि अब अधिक वाणिज्यिक रूप में, यह वास्तव में जीवन शैली को बनाए रखने वाले पर्यटन का एक सकारात्मक उदाहरण

है। ये नृत्य अब औपचारिक रूप से नहीं किए जाते हैं जैसा कि वे करते थे लेकिन मंचन और आदिवासी लोगों के लिए नृत्य के रूप में अब यह आजीविका कमाने का एक साधन है और जीवन का एक तरीका नहीं है। लेकिन कम से कम नृत्यों को जारी रखकर वे अपने पौराणिक कथाओं और पैतृक कथाओं को पुनः जीवित कर रहे हैं।

पर्यटन पुस्तिका और प्रचार सामग्री में यूनेस्को के विश्व धरोहर सम्मानों का प्रमुख उल्लेख करके उन्हें आर्थिक लाभ में परिवर्तित किया जा सकता है। धरोहर संरक्षण को स्कूल और कॉलेज के पाठ्यक्रम का हिस्सा होने की आवश्यकता है, वित्तपोषण को जनसहयोग और सामुदायिक समूहों के माध्यम से उत्पन्न किया जा सकता है।

जुलाई 2018 में, बहरीन के मनामा में यूनेस्को सम्मेलन में विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको शैलियों में निर्मित, भारत के दक्षिण मुम्बई में 94 इमारतों के एक समूह को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। अजंता और एलोरा (औरंगाबाद), एलीफेंटा (मुंबई) और छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस बिल्डिंग (मुंबई) के बाद यह तीसरा स्थल है, जिसे यूनेस्को द्वारा प्रमाणित विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी गई है। इमारतों के इन समूहों को शामिल करने के साथ, भारत में यूनेस्को द्वारा प्रमाणित विश्व धरोहर स्थलों की संख्या सैंतीस तक हो जाती है (बेन,,2018)। चूंकि हम अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के बारे में बात कर रहे हैं, इसलिए यह समझा जाना चाहिए कि यह अकेले भौतिक भवन नहीं है जो एक धरोहर स्थल है, बल्कि शैली और वास्तुकला जो इसमें अंतर्निहित है, यही वास्तविक धरोहर है।

2013–2014 में एक योजना का उद्घाटन किया गया था, जिसका नाम 'स्कीम फॉर सेफगार्डींग द इनटैन्जेबल कल्चरल हेरिटेज एंड डाइवर्स कल्चरल ट्रेडिशन ऑफ इंडिया' है, जिसका मुख्य उद्देश्य अमूर्त धरोहर की सुरक्षा, प्रोत्साहन और इसे व्यवस्थित रूप से प्रसारित करना था। मूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विभिन्न सांस्कृतिक उत्पादों जैसे नृत्य रूपों, वास्तुकला और संगीत की मान्यता के साथ, इस तरह की योजनाएं अधिक समावेशी तरीके से काम कर सकते हैं और अपने कार्य की सीमाओं का विस्तार कर सकते हैं। यह समझा जाना चाहिए कि इन कला रूपों, प्रदर्शनों और सामग्रियों में प्रकट होने वाले विचार, अवधारणाएं और प्रतीक अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के मूल का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह धरोहर उन भौतिक और वस्तुगत पहलुओं के बजाय मानव मन और कल्पनाओं के उत्पादों पर जोर देती है, जिनमें वे सन्निहित हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

4. 'नृत्य अमूर्त धरोहर का हिस्सा है' बताइए कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5. 'भौतिक इमारतों के संदर्भ में शैली और वास्तुकला जो इसमें अंतर्निहित है वह सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा नहीं है '। बताइए कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

6. 'कालबेलिया नृत्य यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची का एक हिस्सा है।' बताइए कि यह कथन सही है या गलत ।

.....

.....

.....

8.3 सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संग्रहालय

पर्यटन, मानवविज्ञान और संग्रहालय निकटता से अंतर्संबंधित हैं। उर्री, (1990: 1,3 से उद्धृत किया गया टीग्यू 1995) ने कहा है कि, क) पर्यटन, मानवविज्ञान और संग्रहालय "यात्राएँ" हैं जिसका उद्देश्य कथित छवियों और प्रतीकों को बदलना है, ख) जो एक आम "अवलोकन" (gaze) साझा करते हैं। इस कथन को समझने के लिए आइए देखें कि एक विशेष समुदाय एक पर्यटक, मानवविज्ञानी और संग्रहालय के माध्यम से कैसे परिलक्षित होता है। एक पर्यटक एक संस्कृति और इसकी प्रथाओं को देखता है, कुछ तस्वीरें खींचता है जो एक जगह की यादों का एक हिस्सा बन जाएगा, दूसरी ओर मानवविज्ञानी संस्कृति में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की कोशिश करते होंगे– एक विस्तृत नृवंशविज्ञान विवरण (एथनोग्राफी) के माध्यम से इसकी मान्यताओं और प्रथाओं, निष्कर्षों को अंकित करेगा, जबकि एक संग्रहालय अनंत काल के लिए भौतिक संस्कृति को संरक्षित करेगा। संग्रहालयों के माध्यम से सांस्कृतिक अवशेषों का संरक्षण होता है। हालांकि, प्रामाणिकता का सवाल बहुत बड़ा है कि जिसे संरक्षित किया गया है वह वास्तव में संस्कृति का हिस्सा है या पर्यटन को आकर्षित करने के लिए सिर्फ एक प्रतिमान है।

इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूजियम (आईसीओएम) का मानना है कि संग्रहालय अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इस संवेदनशील धरोहर –जीवित अभिव्यक्तियों की परंपराओं की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है। इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूजियम की संग्रहालय की परिभाषा में 'मानवता की मूर्त और अमूर्त धरोहर 'के संरक्षण और पुनरुत्थान में संग्रहालयों की भूमिका को अहम माना गया है; वे इसके संरक्षण के बारे में रचनात्मक पहल विकसित करने के लिए अपने अधिकार, अवसंरचना और संसाधनों का महत्वपूर्ण रूप से उपयोग कर सकते हैं।

निकोलस क्रॉफ़ेट्स (2004) सवाल करते हैं कि संग्रहालयों को अमूर्त धरोहर को कैसे दस्तावेजित करना चाहिए? एक संग्रहालय समाज की सेवा और उसके विकास में एक गैर–लाभकारी, स्थायी संस्थान है, जो जनता के लिए खुला है, जो शिक्षा, अध्ययन और आनंद के उद्देश्यों के लिए मानवता और उसके पर्यावरण की मूर्त और अमूर्त धरोहर का अधिग्रहण, संरक्षण, अनुसंधान, संचार और प्रदर्शन करता है।

पिछले दो दशकों में संग्रहालय की प्राथमिकताओं को संग्रह के संरक्षण से हटाकर दर्शकों की संतुष्टि पर स्थानांतरित किया गया है (कीने 2005: 2)। नया संग्रहालय विज्ञान (वर्गो

1989) संग्रहालयों के कभी–कभी अनन्य चरित्र को स्वीकार करता है और अधिक समावेशी संग्रहालय अभ्यास की आवश्यकता पर जोर देता है। संग्रहालय अब उनके दर्शकों के प्रति एक सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारी है और इस कारण से दर्शकों की शैक्षिक , सांस्कृतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की संतुष्टि पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। हूपर ग्रीनहिल (2000) ने ' उत्तर संग्रहालय (पोस्ट म्यूजियम)' के आयोजन की घोषणा की। यह पारंपरिक 'आधुनिकतावादी संग्रहालय' के विपरीत है, जिसमें पिछली शताब्दियों में पश्चिमी संग्रहालय प्रथा हावी है। 'आधुनिकतावादी संग्रहालय'मुख्य रूप से उन वस्तुओं के संचय पर केंद्रित था जिन्हें "सामंजस्यपूर्ण, एकीकृत और पूर्ण " कहानियों के रुप में प्रदर्शित किया गया था (पृष्ठ.151)। परिणामस्वरूप, इसका उदय प्रमुख और उच्च वर्ग की विचारधारा के लिए होना शुरू हुआ। उत्तर आधुनिकतावादी संग्रहालय भव्य आख्यानों की निरंतरता और सच्चाई पर सवाल उठाते हैं। स्थिर और अखंड ज्ञान को अब सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता सीखने को बढ़ावा देने के निर्माण और खोज की जीवंतता से बदल दिया गया है। विटकोम्ब (2003) का कहना है कि यह संग्रहालयों पर विचार करने का यह एक नया तरीका है, उन्हें "समाधि से परे" स्थानांतरित करने और समकालीन विषम समाजों में विविधता और संवाद के लिए नए विचारों जैसे 'संग्रहालयों का स्त्रीकरण' या 'आवाजों के कटु स्वरों' को पुनर्जीवित करने के लिए कहा गया। लेकिन कीने द्वारा यह चिंता भी व्यक्त की गई है कि उत्तर आधुनिक संग्रहालय मुख्य रूप से घटनाओं और हद से आगे निकलने वाले कार्यक्रमों पर केंद्रित है जो संग्रहालय संग्रहों के लिए बहुत कम रुचि दिखाता है।

पिना (2003: 3) भौतिक रूपों और संबंधित वस्तुओं में सन्निहित भावों के अमूर्त धरोहर का पता लगाते है, जैसे नाटकीय प्रदर्शन, मुखौटे, वेशभूषा या गैर–भौतिक या मूर्त रूप में उदाहरण के लिए नृत्य और गीत या वस्तुओं के प्रतीकात्मक अर्थों में, स्मृति और पहचान की अभिव्यक्ति के रूप में या मौखिक इतिहास के एक अतिरिक्त आयाम के रूप में। इस प्रकार, संग्रहालयों में अमूर्त धरोहर की धारणा एक व्यापक और गहरी व्याख्या कलाकृतियों की प्रासंगिकता को सक्षम करती है। संग्रहालय संग्रह में सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और प्रथाओं की वीडियो और ध्वनि रिकॉर्डिंग शामिल हो सकती है। इस तरह से वस्तुओं के निर्माण और उपयोग की ओर ले जाने वाली प्रक्रियाओं और स्थितियों को संग्रहालयों के संदर्भ में प्रस्तुत किया जा सकता है। फ्रांज बोस की शिकायत है कि नृवंशविज्ञान (एथनोग्राफी) संबंधी वस्तुएं जिसमें नई तकनीकों का उपयोग होता है– जैसे मौखिक इतिहास कार्यक्रम,कहानियों का संग्रह, प्रदर्शन कला के संग्रहालय, मनोवैज्ञानिकों के साथ –साथ सस्कृतियों के ऐतिहासिक सबंधों को प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं (1907:928)। लंदन थिएटर संग्रहालय अपनी नाटकीय धरोहर, रिकॉडिंग, दस्मावेज़ों को सुरक्षित रखता है और सास्कृतिक अभिव्यक्तियों को भविष्य के लिए सरंक्षित करके नई सग्रंहालय वस्तुओं में बदल देता है।

प्रदर्शनियाँ संग्रहालय के दिनचर्या का मुख्य पहलू हैं। प्रदर्शनी प्रतिमान संगीत, विशेष प्रकाश, प्रभाव और सीधा प्रसारण जैसी विशेषताओं से सम्बंधित है। यह वस्तुओं को अनेक अर्थ प्रदान करता है (गार्टन स्मिथ, 2000: 58)।

समुदाय अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की अवधारणा का एक मौलिक घटक है। सामुदायिक भागीदारी कार्यक्रम अमूर्त धरोहर की सुरक्षा और सुरक्षित अभिव्यक्ति की पहचान करने में सहायता कर सकते हैं (वान्टूइ 2003: 28) जैसे न्यूजीलैंड में पापा टोंगेरेवा संग्रहालय और अमेरिका में अमेरिकन भारतीय राष्ट्रीय संग्रहालय।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

7. 'पर्यटन, मानवविज्ञान और संग्रहालय निकटता से अंतरसंबंधित हैं'। बताइए की यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

8. 'पिछले दो दशकों में संग्रहालय का ध्यान संग्रह के संरक्षण से दर्शकों की संतुष्टि पर स्थानांतरित हो गए हैं' इस कथन की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

8.4 सारांश

इस इकाई धरोहर / हेरिटेज के अर्थ का विस्तार है जो आज न केवल स्मारकों, इमारतों और पैतृक गुणों को शामिल करता है बल्कि मूल्यों, मानदंडों, लोककथाओं, कला, नृत्य, संगीत और सांस्कृतिक मान्यताओं को भी शामिल करता है। यह मूर्त और अमूर्त धरोहर और इसके अर्थ पर परिलक्षित होता है। इस इकाई ने हमें हमारे कुछ मूर्त और अमूर्त धरोहरों / धरोहर जैसे उत्सवों, भोजन, संग्रहालयों आदि के महत्व और यह कैसे पर्यटन को प्रभावित करता है, को समझने में सहायता करता है। पर्यटक आज एक दर्शक के बजाय मेजबान की जीवित धरोहर और संस्कृतियों का एक हिस्सा बनना पसंद करते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण होली के त्योहार में पर्यटकों की भागीदारी या नृत्य है। इस इकाई ने लोकप्रिय पर्यटन स्थलों के संरक्षण और पुनरुत्थान के पहलू को देखा है। अगली इकाई में हम पर्यावरणीय पर्यटन या इकोटूरिज्म को एक नई अवधारणा के रूप में देखेंगे जो पर्यटन के मानवशास्त्रीय अध्ययन में नवीनता से उभरा है। उसमें हम यह चर्चा करेंगे कि प्राकृतिक पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए पर्यावरणीय पर्यटन स्थायी विकास में कैसे सहायता करता है और पर्यटन को आगे बढ़ाता है।

8.5 संदर्भ

एंडरसन, बी. (1983). *इमेजिंज कम्यूनिटीज: रिफलेक्शन्स आन द ओरजिन एंड स्प्रेड ऑफ नेशनलिज्म.* लंदन: वर्सो बुक्स.

भंडारी, के. सिंह. (2020). द क्युरियस केस ऑफ पोटेटो इन कोलकाता बिरयानी एंड हॉव द ब्रिटिश फेड अस ए लाइ. 21 अप्रैल को प्रकाशित https://www.hindustantimes.com/more-lifestyle/the-curious-case-of-potato-in-kolkata-biriyani-and-how-the-british-fed-us-a-lieèstory-k1smJjNz1QhxyyVZVdNyKN.html

भंडारी, एस. (2017). "होलीः जेंडर डायनामिक्स एंड द फेस्टिवल ऑफ कलर्स इन नॉर्दर्न इंडिया". *बर्कले जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी*, 60, पृ.सं. एंड रिट्रिव्ड 4 अप्रैल 2020 को प्रकाशित http://berkeleyjournal.org/2017/02/holi-gender-dynamics-and-the-festival-of-colors-in-northern-india/

बोआस, एफ.(1907)-"सम प्रिंसिपल ऑफ म्यूजियम एडमिनेस्ट्रेशन". *साइंस* 25, 921–933.

फोर्डे,डी.(1934). *हैबिटेट, ईकोनॉमी एंड सोसाइटी: ए जियोग्राफीकल इंट्रोडक्शन टू इथनोलॉजी.*लंदन : मैथ्यून एंड कंपनी.

गार्टन–स्मिथ, जे. (2000). "द इंपैक्ट ऑफ क्यूरेशन आन इंटेन्जिबल हेरिटेज: द केस ऑफ ओराडौर–सर–ग्लेन". इन वियरेग, एच. के. एंड हेरिटेज. म्यूनिख एंड ब्रनो: *आईकाम इंटरनेशनल कमेटी फार म्यूजिओलजी* (ICOFOM), 58–65.

हूपर–ग्रीनहिल, ई. (2000*). म्यूजियम एंड द इंटरप्रिटेशन आफ विजुअल कल्चर.* लंदन: राउटलेज.

कीने, एस. (2005). *फ्रैग्मेंट्स आफ द वर्ड यूजेस आफ म्यूजियम कलेक्शन्स.* बर्लिंग्टन, एमए; ऑक्सफोर्ड एल्सेवियर बटरवर्थ–हेननेमैन.

मुखर्जी, अदिति (2018). *लठ मार होलीः एन इंडियन फेस्टिवल व्हेयर वीमेन बीट मेन विद स्टिक्स.*

https://theculturetrip.com/asia/india/articles/lath-mar-holi-an-indian-festival-where-women-beat-up-men-with-sticks/

मुखर्जी, भसवती (2015). "इंडियाज इंटेन्जिबल कल्चर हेरिटेज ए सिविलाइजेशनल लिगेसी टू द वर्ल्ड " https://www.cgihamburg.gov.in/pdf/2015_07_INDIA_S_INTANGIBLE_CULTURAL_HERITAGE_A_CIVILISATIONAL_LEGACY_TO_THE_WORLD.pdf

नाथ, सुजीत, (2019), *बैटल ओवर ओरिजिन ऑफ 'रसगुल्ला' कंटीन्युअस, आफ्टर ओडिशा फाइल्स पीटीशन डिमांडिंग चेंज ऑफ जीआई टैग,* 5 मार्च 2019 को प्रकाशित https://www.news18.com/news/india/battle-over-origin-of-rasgulla-contines-after odisha-files-petition-demanding-change-of-gi-tag-2056055.html

पलमी, स्टीफेंस.(2009)." इंटेन्जिबल कल्चरल प्रॉपर्टी, सेमियोटिक आइडियोलोजी, एंड द वैगेरिज ऑफ एथनौक्युलिनरी रिकोग्निशन ".*अफ्रीकन आर्ट्स.* 42 (4): 54–61.

पिन्ना, जी. (2003). .इन्टैन्जबल हेरिटेज एंड म्यूजियम. आईकाम न्यूज, 56(4), 3.

प्रेंटिस, आर. (1993). "हेरिटेजः अ की सेक्टर ऑफ द "न्यू" टूरिज्म. *प्रोग्रेस इन टूरिज्म,*" *रीक्रियेशन एंड हॉस्पिटैलीटि मैनेजमेंट,* 5: पृ.सं. 309–324.

टीग, के. (1988), "द नेपलीज कलेक्शंस एट द हॉर्निमन म्यूज़ियम* म्यूजियम एथ्नोग्राफर्स ग्रुप न्यूजलेटर न.22.

टीग, के. (1995). टूरिज्म, एंथ्रोपोलॉजी एंड म्यूजियम : रिप्रेजेन्टेशन ऑफ नेपलीस रियेलीटी. *जर्नल ऑफ म्यूजियम एथ्नोग्राफी,*(7),41–62. 25 अप्रैल 2020 को प्रकाशित www.jstor.org/stable/40793564

उर्री, जे. (1990). *द टूरिस्ट गेज़, लेजर एंड ट्रैवल इन कंटेम्परेरी सोसाइटीज,* लंदनः सेज.

वेर्गो, पी. (1990). *द न्यू म्यूजोलॉजी.*(संपा).लंदन: रिक्टन बुक्स.

विटकोम्ब, ए. (2003). *री–इमेजिंग द म्यूजियम: बियांड द मॉसलीअम.* लंदन: राउटलेज प्रेस.

8.6 आपकी प्रगति जांचने के लिए उत्तर/संकेत

1. अपने उत्तर के पहले भाग के लिए अनुभाग 8.1 भाग देखें। दूसरे भाग के लिए आप अपने शहर में पता लगाइए कि वहां क्या कोई राष्ट्रीय धरोहर है।
2. कृपया अनुभाग 8.1 देखें।
3. सही।
4. सही।
5. गलत।
6. सही।
7. सही।
8. उत्तर के लिए कृपया अनुभाग 8.3 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 9 पर्यावरणीय पर्यटन*

इकाई की रूपरेखा

9.0 परिचय

9.1 पर्यावरणीय पर्यटन की परिभाषा

9.2 सशक्तिकरण और असशक्तिकरण

- 9.2.1 आर्थिक
- 9.2.2 राजनीतिक
- 9.2.3 मनोवैज्ञानिक
- 9.2.4 समुदाय आधारित पर्यावरणीय पर्यटन

9.3 पर्यावरणीय पर्यटन और सतत विकास

9.4 भारत में पर्यावरणीय पर्यटन : केस स्टडी

- 9.4.1 नागालैंडः सामुदायिक भागीदारी
- 9.4.2 केरलः पारिस्थितिक सतत पर्यटन
- 9.4.3 गुजरातः पर्यावरणीय पर्यटन परिपथ का विकास
- 9.4.4 असमः पर्यावरणीय पर्यटन

9.5 पर्यावरणीय पर्यटन का प्रभाव

9.6 सारांश

9.7 संदर्भ

9.8 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी निम्न बातें समझने में सक्षम होंगेः

- पर्यावरणीय पर्यटन को परिभाषित करना;
- पर्यावरणीय पर्यटन और सतत विकास के बीच संबंध निर्धारित करना; तथा
- इकाई में केस स्टडी के आधार पर पर्यावरणीय पर्यटन के प्रभाव पर चर्चा करना।

9.0 परिचय

पहले की इकाई में हमने मूर्त और अमूर्त धरोहर के बारे में चर्चा की थी, जिसमें हमने हेरिटेज (धरोहर) का अर्थ, परिभाषा ,संरक्षण और इसका पुनरुत्थान जाना है। पर्यटन की दुनिया में समय के साथ संरक्षण और पुनरुत्थान के अलावा एक नया पहलू जुड़ गया है। यह अवधारणा पर्यटन के साथ न केवल वर्तमान पीढ़ी को उपलब्ध कराई जा रही है, बल्कि एक विरासत और संस्कार को भी निर्मित कर रही है जो आने वाली पीढ़ियों को खुद को बनाए रखने के लिए सक्षम बनाएगी।

***योगदानकर्ता:** डॉ. अविटोली जिमो, सहायक प्रोफेसर,मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य यह है कि हम जिस पर्यावरण में रह रहे हैं उसके और अपनी प्राकृतिक विरासत के संरक्षण और पुनरुत्थान के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को समझे। यह इकाई पर्यावरणीय पर्यटन और उसकी अवधारणाओं की परिभाषाओं से सम्बंधित है। इस इकाई में भारतीय उपमहाद्वीप के चार प्रकरण अध्ययनों (केस स्टडी) से युवाओं को यह समझाने की कोशिश की जाएगी कि राष्ट्र की पहले से मौजूद धरोहरों में पर्यावरणीय पर्यटन को कैसे विकसित किया जा सकता है।

9.1 पर्यावरणीय पर्यटन की परिभाषा

'पर्यावरणीय पर्यटन' या इको टूरिज्म की पहली औपचारिक परिभाषा संभवतः मैक्सिकन वास्तुकार हेक्टर सेबलोस–लास्कुरैन द्वारा दी गई थी। पर्यावरणीय पर्यटन को "पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार, ज्ञानवर्धक यात्रा और प्रकृति का आनंद लेने और उसकी प्रशंसा करने के लिए, प्रायः बाधा रहित प्राकृतिक क्षेत्रों में सम्बंधित यात्रा करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है (और अतीत और वर्तमान दोनों में सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ) जो संरक्षण को बढ़ावा देता है, जिसमें कम आगंतुक प्रभाव है, और जो स्थानीय आबादी की सामाजिक–आर्थिक भागीदारी को सक्रिय रूप से लाभ प्रदान करता है" (सेबलोस–लस्कुरैन 1996)। इस परिभाषा के अनुसार, इको टूरिज्म सांस्कृतिक और पर्यावरणीय पर्यटन दोनों को शामिल कर सकता है और स्थानीय आबादी को लाभ पहुंचा सकता है जो गतिविधि का एक अभिन्न अंग भी है। तभी से पर्यावरणीय पर्यटन पर विभिन्न परिभाषाएँ उभर कर सामने आई। अधिकांश परिभाषाएँ पर्यावरणीय पर्यटन को पर्यटन के एक विशेष रूप में अनुभव करती हैं जिसके तीन महत्वपूर्ण मानदंड हैं:

क) पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रावधान जिसमें सार्थक तरीके से समुदाय की भागीदारी शामिल है;

ख) मेजबान समुदाय के लिए लाभदायक; तथा

ग) आत्मनिर्भर।

कैरियर (2005) ने कहा था कि पर्यावरणीय पर्यटन उल्लेखनीय है क्योंकि यह पर्यटन उद्योग में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्र में से एक है। 'पर्यावरणीय पर्यटन' को कभी–कभी पर्यटन के विकल्प रूप में जाना जाता है; इसका उपयोग सांस्कृतिक पर्यटन के साथ समानार्थी रूप से भी किया जाता है। इसे औपचारिक रूप से, "प्राकृतिक, सामाजिक और सामुदायिक मूल्यों के अनुरूप पर्यटन के एक रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है। यह मेजबान और मेहमानों दोनों को सकारात्मक और सार्थक बातचीत एवं साझा अनुभवों का आनंद लेने की अनुमति देता है। स्थानीय समुदायों पर पर्यटन के प्रभाव की निंदा करने के बजाय, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों की एक विस्तृत श्रृंखला को प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम उपाय के रूप में पर्यावरणीय पर्यटन की सराहना करने की प्रवृत्ति है" (स्ट्रॉन्ज़ा 2001: 274)। समकालीन समय में, मानवविज्ञानी पर्यटन के रूपों जैसे पर्यावरणीय पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, समुदाय–आधारित–पर्यटन या सामान्य वैकल्पिक पर्यटन पर ध्यान दे रहे हैं।

इकोटूरिज्म एक विशेष क्षेत्र की संस्कृति और प्राकृतिक इतिहास से प्रेरित है। प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों का संयोजन राज्य के लिए राजस्व उत्पन्न करने में योगदान कर सकता है और एक ही समय में स्थानीय निवासियों को आर्थिक अवसर प्रदान करता है। चूँकि मानवविज्ञान एक ऐसा अध्ययन है जो विशेष रूप से संस्कृतियों और स्थानीय समुदायों के अध्ययन और समझ के साथ संबद्ध है, जहाँ तक पर्यटन परियोजनाओं की

योजना और कार्यान्वयन का संबंध है, यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मानवविज्ञानी स्थानीय जरूरतों, आजीविका की संभावनाओं, सांस्कृतिक तत्वों की पहचान कर सकते हैं जो पर्यटन के लिए सहायक हैं और जो बाधाएं पैदा करने की संभावना रखते हैं। वे पर्यटन के रूपों का खाका तैयार कर सकते हैं जो स्थानीय जीवन और उन कार्यों के लिए बहुत अधिक व्यवधान पैदा नहीं करते हैं और जो स्थानीय समुदायों के लिए सकारात्मक रूप से हानिकारक हो सकते हैं। इसलिए पेशेवर मानवविज्ञानी पर्यटन क्षेत्र में शामिल हो सकते हैं और अध्ययन की प्रासंगिकता और क्षमता का विस्तार कर सकते हैं।

कैरियर और मैकलेओड (2005: 315) का कहना है कि "पर्यावरणीय पर्यटन में आकर्षक और दिलचस्प परिवेश के साथ आनंद लेने और संलग्न करने के लिए यात्रा शामिल है जिसे अक्सर प्राकृतिक रूप में पहचाना जाता है। इसमें अपने मनपसंद लोगों के साथ आनंद लेने और संलग्न रहने के लिए यात्रा भी शामिल है और उनकी गतिविधियों को अक्सर विदेशी या स्वदेशी, एक तरह से "आदर और सहयोग" के रूप में पहचाना जाता है। इस तरह वे विदेशी और अज्ञात की तलाश करने की मानवीय इच्छा पर जोर दे रहा है। मानवविज्ञानियों को भी ऐसा ही करने के लिए कहा गया था, लेकिन उन्होंने मानव व्यवहार के बारे में गहरी तुलनात्मक समझ रखने के लिए, जीवन के मानवीय तरीकों के बारे में अधिक से अधिक जानने और विभिन्न विश्वदृष्टि की किस्मों के बारे में जानने के लिए ऐसा पेशेवर रूप से किया है। हालांकि, पर्यटकों को स्थानीय संस्कृतियों में केवल सतही रुचि है। मानवविज्ञानी वास्तव में स्थानीय समुदायों में रुचि रखते हैं और अक्सर लोगों की भलाई के लिए अपने ज्ञान का उपयोग करते हैं। लेकिन पर्यटक स्थानीय समुदायों के बारे में इतनी गहराई से नहीं सोचते हैं। उनमें से बहुत से लोग इस बात से बेपरवाह हैं कि स्थानीय समुदायों के साथ क्या होता है और यही पर्यावरणीय/सांस्कृतिक पर्यटन का एक वास्तविक दोष है।

हाल के दिनों में, पर्यावरणीय पर्यटन की मांग बढ़ी है; यह पुराने और अक्सर पर्यटन स्थलों का दौरा करने और नए अनुभवों की इच्छा के कारण हो सकता है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि विश्व के कई भागों में, जंगल और ऐसे क्षेत्र हैं जो स्वदेशी लोगों के कब्जे में हैं, लेकिन अब उसे भी पर्यटन उद्योग के लिए खोल दिया गया है। हालांकि यह चिंता का विषय है कि; ये क्षेत्र अधिक सुदूर और कम विकसित हैं, जिसे पर्यावरणीय पर्यटक देखना चाहते हैं, जिससे वहाँ सांस्कृतिक व्यवधान और पर्यावरणीय नुकसान हो सकता है (काटर 1993, 85)।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

1. पर्यावरणीय पर्यटन को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

9.2 सशक्तिकरण और असशक्तिकरण

पर्यावरणीय पर्यटकों द्वारा उन सेवाओं और आवास का उपयोग करने की अधिक संभावना है जो स्थानीय निवासियों के स्वामित्व में हैं। यह सुनिश्चित करता है कि स्थानीय अर्थव्यवस्था लाभान्वित हो। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पर्यावरणीय पर्यटन निम्नलिखित को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए:

क) पर्यावरण की सुरक्षा करना;

ख) स्थानीय सांस्कृतिक वस्तुओं का लाभप्रद संरक्षण;

ग) स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ;

घ) स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना;

यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्थानीय लोगों को पर्यावरणीय पर्यटन से उनके उचित लाभ मिलते हैं, पर्यावरणीय पर्यटन पर कुछ नियंत्रण स्थानीय लोगों को सौंप दिया जाना चाहिए।

अगर उनकी मांगों को ध्यान में रखा जाए तो स्थानीय लोगों का सशक्तिकरण होगा। उन्हें यह तय करने में सक्षम होना चाहिए कि उनके क्षेत्रों में पर्यटन सुविधाओं और वन्यजीव संरक्षण कार्यक्रमों के कौन से रूप विकसित किए जाएं। स्थानीय समुदाय को निर्णय लेने और लाभों में हिस्सेदारी के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

9.2.1 राजनीतिक सशक्तीकरण

स्थानीय समुदाय की आवाज और चिंताओं को वैचारिक मंच से इसके कार्यान्वयन के लिए किसी भी पर्यावरणीय पर्यटन परियोजना के विकास का मार्गदर्शन करने में सक्षम होना चाहिए। यह एक समुदाय के भीतर विविध हित समूहों को आवाज और निर्णय लेने की शक्ति देने के लिए उचित है और उम्र, लिंग और वर्ग के आधार पर विभाजित सभी विविध समूहों के बीच वितरित की गई शक्ति है। एक समुदाय के भीतर सभी हितधारकों को समुदाय के व्यापक निर्णय लेने वाले निकायों पर प्रतिनिधित्व करने की आवश्यकता है। स्थानीय समुदायों के लिए इकोटूरिज्म पर कुछ नियंत्रण लगाने के लिए, शक्ति को समुदाय के स्तर पर सौंपने की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि समुदाय के भीतर सबसे अधिक लाभ उन लोगों को मिले जो हाशिए पर हैं।

9.2.2 सामाजिक सशक्तिकरण

सामाजिक सशक्तीकरण से तात्पर्य ऐसी स्थिति से है, जिसमें किसी सामूहिक गतिविधि से समुदाय का सामंजस्य और अखंडता की पुष्टि या मजबूती होती है, जिसका लाभ समूह के सदस्यों के बीच वितरित किया जाता है। सशक्त समुदाय समूह, जिनमें युवा समूह और महिला समूह शामिल हैं, सशक्त समुदाय के संकेत हो सकते हैं। सामाजिक सशक्तिकरण शायद सबसे स्पष्ट रूप से पर्यावरणीय पर्यटन का परिणाम है जब पर्यटन गतिविधि से लाभ का उपयोग सामाजिक विकास परियोजनाओं, जैसे कि पानी की आपूर्ति प्रणाली या स्वास्थ्य केंद्र को स्थानीय क्षेत्र में करने के लिए किया जाता है।

आईये अब अगर पर्यावरणीय पर्यटन (इको टूरिज्म) के कोई नुकसान हैं तो उसकी जाँच करें। यह परिलक्षित हुआ है कि सामाजिक असशक्तिकरण तब हो सकता है यदि पर्यावरणीय पर्यटन की गतिविधियों के परिणामस्वरूप अपराध, भीख मांगना, भीड़भाड़, पारंपरिक भूमि से विस्थापन, स्थानीय संस्कृति की प्रामाणिकता का नुकसान, और वेश्यावृत्ति का उदय हो (मैनस्पर्गर, 1993)। पर्यावरणीय पर्यटन सहित किसी भी प्रकार के पर्यटन की स्थिति में इन परिणामों के होने की काफी सम्भावना है। स्थानीय समुदाय के भीतर कुछ आंतरिक शक्ति के अंतर जो पर्यावरणीय पर्यटन के लाभों के वितरण में असमानता का कारण बनते हैं,उससे कुछ क्षेत्रों के लिए सामाजिक असशक्तिकरण और दूसरों के लिए असंगत लाभ हो सकते हैं। आर्थिक लाभ और अवसरों के वितरण की असमानताओं के परिणामस्वरूप ईर्ष्या और द्वेष की भावनाओं के कारण संघर्ष और असंतोष पैदा हो सकता है।

9.2.3 मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण

एक समुदाय को मनोवैज्ञानिक रूप से मजबूत तब कहा जाता है, जब उसके सदस्य भविष्य के बारे में सकारात्मक होते हैं, अपने निवासियों की क्षमता और योग्यताओं में मजबूत विश्वास रखते हैं, आत्मनिर्भर होते हैं, स्वतंत्र होते हैं, और अपनी परंपराओं और संस्कृति पर गर्व करते हैं (सिवेंस, 1999 : 248)। यह समझने की आवश्यकता है कि कई छोटे पैमाने के समाजों में, समूह की भावना, आत्मसम्मान और भलाई को बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है। यह बचाव उनकी परंपरा के संरक्षण द्वारा सुनिश्चित किया जाता है। पर्यावरणीय पर्यटन की प्रमुख विशेषताओं में से एक सांस्कृतिक मानदंडों के प्रति संवेदनशीलता और स्थानीय परंपराओं के प्रति सम्मान है। यह संवेदनशीलता और सम्मान स्थानीय लोगों के लिए सशक्त हो सकता है।

दूसरी ओर, अगर यह स्थानीय लोगों के सांस्कृतिक मानदंडों में हस्तक्षेप करता है तो पर्यावरणीय पर्यटन अप्रभावी हो सकता है। उदाहरण के लिए, स्थानीय लोगों और उनकी भूमि के बीच महत्वपूर्ण संबंधों में दखल देने से मनोबल पर प्रभाव पड़ सकता है। पेरुवियन और कोलम्बियाई अमेज़ॅन के यागुआ इंडियंस एक ऐसा उदहारण है जिसे यहां उद्धृत किया जा सकता है जिन्हें उनके पर्यटन संचालकों द्वारा उन जगहों पर स्थानांतरित किया गया था जो पर्यटकों के लिए अधिक सुविधाजनक और अधिक सुलभ थे। अंततः सांस्कृतिक प्रदर्शनों से प्राप्त धन पर यगुआ अधिक निर्भर हो गया। सांस्कृतिक प्रदर्शन के लिए संचालकों के दौरे के कारण वे अपने पारंपरिक दायित्वों जैसे खेती, शिकार और मछली पकड़ना आदि कार्यों को पर्याप्त समय नहीं दे पाए, साथ ही कटाई और दाह (काटना और जलाना) कृषि की खेती के लिए भूमि की अनुपलब्धता को भी नहीं भूलना चाहिए। यह कहा जाता है कि यगुआ अब गंभीर रूप से अस्वस्थता के विभिन्न रूपों से पीड़ित है, इस प्रकार उदासीनता और अवसाद के लिए आगे है जो अब काफी सामान्य है। ये भावनाएं, मोहभंग और भ्रम, एक समुदाय के मनोवैज्ञानिक असशक्तिकरण के संकेतक हैं (सिवेंस 1999: 248)।

हम आर्थिक सशक्तिकरण या असशक्तिकरण का निर्धारण करने के लिए पर्यावरणीय पर्यटन के प्रस्तावित क्षेत्र में संसाधनों की स्थानीय समुदाय की पहुंच पर भी नज़र डाल सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि भूमि के कुछ क्षेत्रों को पर्यावरणीय पर्यटन के लिए संरक्षित क्षेत्रों के रूप में पहचाना जाता है, तो यह अंततः कृषि भूमि के साथ–साथ शिकार के मैदानों तक पहुंच को कम करता है। वन्यजीव प्रजातियों के संरक्षण से फसलों का विनाश भी हो सकता है और इससे पशुधन और लोगों को नुकसान हो सकता है। स्थानीय लोगों को समान रूप से लाभ का वितरण होना चाहिए, हालांकि यह एक चिंता का विषय है कि, स्थानीय लोग स्वेच्छा से संरक्षित क्षेत्रों के संरक्षण का समर्थन करेंगे, अगर यह उनके स्वयं के विकास के साथ हो।

9.2.4 समुदाय–आधारित पर्यावरणीय पर्यटन

प्रायः 'पर्यावरणीय पर्यटन' शब्द का इस्तेमाल विभिन्न लेखकों द्वारा किया जाता है, इसलिए कुछ लेखकों ने सुझाव दिया है कि 'समुदाय–आधारित पर्यावरणीय पर्यटन उद्यम' शब्द का इस्तेमाल उन उपक्रमों को अलग करने के लिए किया जाना चाहिए जो पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हैं, और स्थानीय समुदाय के पास पर्यावरणीय पर्यटन गतिविधियों पर अधिक नियंत्रण है (लियू 1994; केबेलोस–लस्कुरैन 1996)। यह पर्यावरणीय पर्यटन उद्यम से पूरी तरह से अलग है जो बाहरी संचालकों द्वारा नियंत्रित किया जाता है, और यह उन संदर्भों से भी अलग है जिसमें सरकार पर्यावरणीय पर्यटन के माध्यम से उत्पन्न अधिकांश राजस्व का दावा करती है (अकामा 1996)।

समुदाय आधारित दृष्टिकोण के लिए लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ावा देने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता महत्वपूर्ण है। आर्थिक और सामाजिक रूप से स्थायी बनाने के लिए यह जरूरी है कि स्थानीय मेजबान समुदाय के सदस्यों को प्रशिक्षित किया जाए। एक समुदाय–आधारित दृष्टिकोण परंपराओं के प्रति सम्मान को पुनर्जीवित करना चाहता है, साथ ही स्थानीय मेजबान समुदाय के बेरोजगार सदस्यों के लिए आय का स्रोत प्रदान करके स्थानीय आजीविका को बढ़ावा देता है।

जिम्मेदार समुदाय–आधारित पर्यावरणीय पर्यटन को स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण तरीका यह है कि इसे एक सतत विकास के दृष्टिकोण से देखा जाए, जो सामाजिक, पर्यावरणीय और आर्थिक लक्ष्यों को ध्यान में रखता है। समुदाय–आधारित दृष्टिकोण के केवल आर्थिक या पर्यावरणीय प्रभावों को प्राथमिकता देने के बजाय, पर्यटन के अनुभव के सामाजिक आयामों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

2. "समुदाय को पर्यावरणीय पर्यटन में एक महत्वपूर्ण हिस्सेदार बनना चाहिए"। बताइए कि यह कथन सही है या गलत।

   .....

   .....

   .....

3. "पर्यावरणीय पर्यटन असशक्त हो सकता है अगर यह समुदाय के सांस्कृतिक मानदंडों में हस्तक्षेप करता है"। बताइए कि यह कथन सही है या गलत।

   .....

   .....

   .....

   .....

4. पर्यावरणीय पर्यटन में समुदाय आधारित दृष्टिकोण क्या है?

   .....

   .....

   .....

   .....

9.3 पर्यावरणीय पर्यटन और सतत विकास

सतत विकास विशेष रूप से विकासशील देशों में अंतरराष्ट्रीय और गैर सरकारी संगठनों के लिए ध्यान केंद्रित करने का एक महत्वपूर्ण विषय बनता जा रहा है। यह पर्यावरण को संरक्षित करने की आवश्यकता के बारे में बढ़ती जागरूकता का परिणाम है (ग्रीव्स एट अल, 2014)। विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (डब्ल्यूसीईडी) ने 'अवर कॉमन फ्यूचर' नाम से ब्रांटलैंड रिपोर्ट प्रकाशित की। ब्रांटलैंड रिपोर्ट ने स्थायी विकास को "विकास के रूप में परिभाषित किया है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है" (1987: 43)।

जैसा कि रिपोर्ट हाशिए के स्वदेशी समुदायों के संबंध में है, जिसमें निर्दिष्ट दिशानिर्देश स्थायी विकास नीतियों को लागू करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। पर्यावरण का संरक्षण और गरीबी उन्मूलन सतत विकास के महत्वपूर्ण क्षेत्र बने हुए हैं, फिर भी स्थानीय समुदाय की भागीदारी और सतत विकास के प्रयासों में उनके नियंत्रण पर भी जोर दिया गया है। स्वदेशी समुदायों के प्राकृतिक संसाधनों को बनाए रखने के लिए, कभी–कभी स्थायी पर्यटन के रूप में जाना जाने वाला इकोटूरिज्म पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। ये पर्यावरणीय पर्यटन प्रयास ऐसे तंत्र को अपनाने की कोशिश करते हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि पर्यावरणीय पर्यटन द्वारा उत्पन्न लाभ बाहरी एजेंसियों के बजाय स्वदेशी स्थानीय समुदाय को लाभान्वित करें (ग्रीव्स, एवं अन्य, 2014)। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि स्वदेशी समुदायों और बाहरी एजेंसियों के बीच इस तरह की साझेदारी, हालांकि यह कागज पर अच्छी दिखाई दे सकती है, लेकिन इस तरह की साझेदारी में अक्सर संघर्ष और शक्ति के असंतुलन का सामना करना पड़ता है।

सुब्रमण्यम (2008:245) के अनुसार भारत के सतत विकास में पर्यावरणीय पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका है। गैर–शहरी समुदायों को शामिल करने के लिए एजेंडा विकसित करने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है, जिन्हें विकास के अधिकांश कार्यक्रमों में कुछ हद तक बाहर और हाशिए पर रखा गया है। इसे प्राप्त करने के लिए दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है; विनियमन नियंत्रण से सशक्तीकरण, संरक्षण से भागीदारी तक, और विविध हितधारकों के साथ गठजोड़ के लिए रैखिक सरकार के नेतृत्व वाली संरचनाओं से एक बदलाव होना चाहिए। सुब्रमण्यम (2008: 246) ने यह भी तर्क दिया कि भारत के संदर्भ में, स्थानीय समुदायों की भलाई में सुधार के पहलू पर जोर देने की आवश्यकता को पर्यावरणीय पर्यटन उद्यम के माध्यम से संबोधित किया जाना चाहिए। पर्यावरणीय पर्यटन के लाभों के मूल्य को पुनः प्राप्त करने के लिए देश में सभी गैर–शहरी समुदायों को भी अपनाने की आवश्यकता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

5. सतत विकास को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

9.4 भारत में पर्यावरणीय पर्यटन : केस स्टडी

9.4.1 नागालैंडः सामुदायिक भागीदारी

नागा समाज अधिकतर समुदाय आधारित है। अधिकांश नागा गांवों में, खेती से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय, वन के संरक्षण और अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक मुद्दों को ध्यान में रखते हुए सामूहिक रूप से किया जाता है। अगर नागालैंड में पर्यावरणीय पर्यटन को सफल होना है, तो स्थानीय भागीदारी का रणनीतिक रूप से उपयोग करना होगा। द नागालैंड कम्युनिटाईजेशन ऑफ पब्लिक इंस्टीटयूशन एंड सर्विस ऐक्ट 2002 (2002 के अधिनियम संख्या 2 के अनुसार) "स्थानीय सार्वजनिक उपयोगिताओं, सार्वजनिक सेवाओं, शिक्षा, जल आपूर्ति, सड़क, वन, बिजली, स्वच्छता, स्वास्थ्य और अन्य कल्याणकारी और विकास योजनाओं से जुड़े राज्य सरकार की गतिविधियों के प्रबंधन के साथ जुड़े मुद्दों में समुदाय की भागीदारी के माध्यम से स्थानीय अधिकारियों को राज्य सरकार की शक्तियों

और कार्यों को प्रतिनिधिमंडल और समुदाय को सशक्तिकरण प्रदान करता हैं और समुदाय आधारित योजनाओं को भी बढ़ावा देता हैं।"

राज्य पर्यटन विभाग पर्यावरणीय पर्यटन और सतत पर्यटन विकास में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा दे रहा है; हालाँकि, यह कुछ सुविधाएं प्रदान करता है, लेकिन विदेशी और घरेलू दोनों, पर्यटकों की मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसलिए, ग्रामीणों ने पेइंग गेस्ट को खोलना शुरू कर दिया है, जिन्हें 'होमस्टे' के नाम से भी जाना जाता है। नागालैंड में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य के हित को भी लोगों को खेती से दूर रखने के लिए निर्देशित किया जाता है, क्योंकि यह राज्य के लिए उतने राजस्व का उत्पादन नहीं करता जितना कि पर्यटन करता है।

9.4.1.1 खोनोमा गाँव में पर्यावरणीय पर्यटन

खोनोमा गाँव में पर्यावरणीय पर्यटन की पहल एक बड़ी सफलता है। ग्राम परिषद ने इस तथ्य पर विचार करते हुए लकड़ी काटने और शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया कि ये गतिविधियाँ पर्यावरणीय गिरावट में योगदान कर रही थीं। इसलिए पर्यावरण के संरक्षण की आवश्यकता पहला कदम था जिसे शुरू किया गया था। सरकारी योजना से आरम्भ हुई और वित्त पोषित होने के बावजूद, गाँव में पर्यावरणीय पर्यटन की पहचान अभी भी एक सामुदायिक पहल के रूप में की जाती है क्योंकि यह उस समुदाय के सदस्य हैं जिन्होंने पर्यावरणीय पर्यटन उपक्रमों की योजना और कार्यान्वयन का नेतृत्व किया। समुदाय में स्वामित्व की भावना अधिक है; यह इसलिए है कि भूमि का स्वामित्व पूरी तरह से लोगों के साथ है न कि सरकार के साथ (किन्नी और लानूसोसंग 1996:158)।

9.4.1.2 अमूर फाल्कन संरक्षण

हर साल साइबेरिया से अमूर फाल्कन (बाज की एक प्रजाति) की भारी संख्या अफ्रीका जाने के लिए निकलती है जो रास्ते में नागालैंड राज्य में ही रुक जाती है (किन्नी और लानूसोसंग 1996:158)। इसे दुनिया के सबसे बड़े बाज़ में से एक माना जाता है। प्रवासी पक्षी अमूर फाल्कन का संरक्षण कार्यक्रम मुख्य रूप से एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन—नैचुरल नागा, नागालैंड वाइल्ड लाइफ एंड बायो डाइवर्सिटी कन्जर्वेशन ट्रस्ट द्वारा कार्यान्वित किया जाता है, जो नागालैंड वन विभाग के साथ मिलकर वाघा जिले में तीन ग्राम परिषदों के साथ काम करता है। वोखा जिले की ग्राम सभाओं ने अमूर फाल्कन्स के शिकार और हत्या पर रोक लगा दी और इसे अवैध और दंडनीय बना दिया। इस निषेध ने ग्राम समुदाय में सदस्यों के समर्थन के साथ नागालैंड में प्रवासी पक्षियों के संरक्षण में मदद की। यह सैकड़ों पर्यटकों और जिज्ञासु वैज्ञानिकों को भी आकर्षित करने लगा है। इस तरह की पहल की सफलता ने अन्य गांवों को स्थायी आजीविका के लिए प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के महत्व का एहसास कराया है।

9.4.1.3 वन्यजीव और पक्षी अभयारण्य

नागालैंड में कई वन्यजीव/पक्षी अभयारण्य हैं जो राज्य के विभिन्न हिस्सों में स्थित हैं। इसमें कुछ प्रमुख है : पेरेन जिले में इंतांकी राष्ट्रीय उद्यान, तुएनसांग जिले में फकीम वन्यजीव अभयारण्य और जुन्होटो जिले में घोसू पक्षी अभयारण्य।

राज्य में स्थायी पर्यटन के लिए अपार संभावनाएं होने के बावजूद, कई कारक हैं जो वांछित विकास के रास्ते में बाधाओं के रूप में उभरे हैं। शांति और सुरक्षा किसी भी तरह के विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक हैं। भारत के पूरे उत्तर पूर्व क्षेत्र में उग्रवाद की समस्या है। 1997 में युद्धविराम समझौते पर हस्ताक्षर करने और 2015 में शांति समझौते के साथ,

नागालैंड में कुछ हद तक स्थिति में सुधार हुआ है। बहरहाल, पर्यटकों के मन में अभी भी भय और असुरक्षा विद्यमान है। राज्य में खराब संयोजकता (कनेक्टिविटी), संचार सुविधाओं की कमी, खराब विकसित बुनियादी ढांचे और इनर लाइन प्रवेश पत्र और प्रतिबंधित क्षेत्र प्रवेश पत्र जैसी प्रवेश औपचारिकताओं के रूप में बहुत सारी बाधाएं हैं। वर्तमान में, राज्य पूरी तरह से पर्यावरणीय पर्यटन उद्यमों के विकास के लिए केंद्रीय सहायता पर निर्भर है। इस क्षेत्र में पर्यटन के भविष्य के लिए निरंतर शांति और सुरक्षा आवश्यक है।

9.4.2 केरलः पारिस्थितिक सतत पर्यटन

केरल में पर्यावरणीय पर्यटन

केरल राज्य को भगवान के अपने देश के रूप में भी जाना जाता है जो भारत में सबसे प्रसिद्ध पर्यावरणीय–गन्तव्यों में से एक है। यह अपने प्राकृतिक सौंदर्य और उत्तम परिदृश्य के लिए जाना जाता है। केरल के पश्चिमी घाट क्षेत्र में एक संरक्षित क्षेत्र है जिसमें दो राष्ट्रीय उद्यान और 12 वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं। ये अभयारण्य और पार्क पर्यावरणीय पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण गंतव्य हैं। उनकी सुंदरता और जंगलों और जंगली जीवन के घनत्व के कारण केरल के पश्चिमी घाटों का प्राकृतिक लाभ है। केरल में प्रमुख पर्यावरणीय पर्यटन उद्यमों को मोटे तौर पर बांधों (बैकवाटर्स), समुद्र तटों, पहाड़ी क्षेत्रों और वन्यजीव अभयारण्यों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। केरल सदाबहार वनों से समृद्ध है और इसकी समृद्ध जैविक विविधता पर्यावरणीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अतिरिक्त लाभ का क्षेत्र है। बांधों और अन्य संबंधित परियोजनाओं के निर्माण के कारण, जंगल के भीतर जल निकायों का गठन हुआ है। इनका उपयोग मनोरंजक सुविधाओं के लिए किया जा रहा है। केरल सरकार द्वारा विपणन अभियान के तहत पर्वतारोहण, पहाड़ों की चढ़ाई (ट्रेकिंग), पक्षी देखना (बर्ड वॉचिंग आदि विभिन्न गतिविधियाँ शुरू की जा रही हैं। केरल में, पर्यावरणीय पर्यटन स्थलों के पास कई विकल्प हैं।

9.4.2.1 परम्बिकुलम टाइगर रिज़र्व

परम्बिकुलम शब्द दो शब्दों से लिया गया है; 'परम्बु '(गन्ना) और 'कुलम' (जल गर्तिका)। इस रिजर्व में एक सागौन बागान है जिसका वैज्ञानिक रूप से प्रबंधन किया जाता है। इस वृक्षारोपण के भीतर महान कनिमारा वृक्ष समय के साथ खड़ा है। इस पेड़ को अपनी तरह का सबसे पुराना और सबसे बड़ा माना जाता है और आदिवासियों द्वारा इसकी पूजा की जाती है। उनका मानना है कि यह देवताओं का प्रतीक है और इसकी विशालता इसके आकार और पहुंच के विशाल परिमाण द्वारा प्रवर्धित है। परम्बिकुलम टाइगर रिज़र्व देश में उभरते हुए पर्यावरणीय पर्यटन गंतव्यों में से एक है, जिसमें आकर्षक पर्यटन पैकेज जैसे पर्यावरणीय योग (मेडीटेशन), हाथी गीत परिक्षण, भालू पथ परिक्षण, कैंप, ट्री–टॉप हट, आइलैंड हट, ट्रेकिंग, फुल मून सेंसस(पूर्णिमा रात की गणना), बैम्बू राफ्टिंग आदि सभी शामिल हैं। ये गतिविधियाँ स्थानीय आदिवासी समुदायों द्वारा आयोजित की जाती हैं। पर्यावरणीय पर्यटन से आर्थिक लाभ स्थानीय लोगों को मिलता है। आय के कुछ महत्वपूर्ण स्रोत बांस हस्तशिल्प, मधुमक्खी मोम बाम, पेपर बैग, शहद प्रसंस्करण और अन्य स्मृति चिन्ह हैं। रिजर्व को प्लास्टिक मुक्त बनाने के इरादे से स्थानीय लोग पर्यावरण के अनुकूल स्मृति चिन्ह बनाते हैं। समुदायों के पास पर्यावरणीय पर्यटन उद्यमों का स्वामित्व है और वे अपने संसाधनों का ध्यान रखते हैं। (विनोदान और मैनलेल, 2011: 103)

9.4.2.2 अरलम वन्यजीव अभयारण्य

कन्नूर में अरलम एकमात्र वन्यजीव अभयारण्य है, जो पश्चिमी घाट में जंगलों के 55 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। जंगल सुखद ट्रैकिंग विकल्प प्रदान करता है। अरलम तितली

प्रवास की उल्लेखनीय प्राकृतिक घटना का गवाह है। परम्बिकुलम की तरह, अरलम में पर्यावरणीय पर्यटन के प्रयास भी समुदाय आधारित हैं। अरलम में बच्चों के लिए नियमित प्रकृति के शिविर आयोजित किए जाते हैं। भविष्य में युवा पीढ़ी को विरासत में क्या मिलेगा ,इस बात को विशेष ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर अधिक महत्त्व दिया जाता है।

9.4.3 गुजरात : पर्यावरणीय पर्यटन परिपथ का विकास

गुजरात में वन्यजीवों की अच्छी संख्या है और इसे वन्यजीवों के पलायन के लिए एक आदर्श स्थान माना जाता है (गुजरात सरकार, 2017)। गुजरात में एशियाई शेर, भारतीय जंगली गधा, लुप्तप्राय मृग और विभिन्न प्रकार के हिरण सहित वन्यजीवों की एक विस्तृत श्रृंखला को देखने के अवसर मिलते हैं। यह पक्षी पर नजर रखने वालों के लिए भारत के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है क्योंकि इसमें प्रवासी पक्षियों के वन्यजीव अभयारण्यों की कई दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियां हैं। इसमें भारत का पहला समुद्री राष्ट्रीय उद्यान भी है। प्रकृति के प्रति उत्साही लोगों के लिए, घने जंगलों के बीच वन विभाग के पास विभिन्न पर्यावरणीय पर्यटन स्थल हैं।

राज्य, बालासोर में अपने ऐतिहासिक डायनासोर घोंसलें व शिकार स्थलों, धोलावीरा और लोथल में सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों, विरासत और सांस्कृतिक स्मारकों एवं कलाकृतियों के लिए पर्यावरणीय–पर्यटकों के बीच एक विशेष दर्जा रखता है। गुजरात की अपनी विशिष्टता है क्योंकि यह एशियाई शेरों और जंगली गधा जैसी प्रजातियों के लिए एकमात्र शेष निवास स्थान है। (https://www.ecotourismgujarat.com)

9.4.3.1 कच्छ का महान रण

रण का प्राकृतिक इतिहास अद्वितीय है और इसका अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण महत्व है। विभिन्न अवधियों के जीवाश्म–पूर्व–जुरासिक, जुरासिक और क्रेटेशियस पाए जाते हैं। यह लकड़ी और समुद्री जीवाश्मों से समृद्ध एक क्षेत्र है, और इसे जीवाश्म पार्क के रूप में प्रबंधित किया जाता है। आगंतुकों को बड़े आकार के पेड़ों के जीवाश्म दिलचस्प लगते हैं। सर्दियों के दौरान विभिन्न जल निकायों में प्रवास करने वाले पक्षियों को देखा जा सकता है।

9.4.3.2 गिर वन राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य

गुजरात में यह वन्यजीव अभयारण्य 1965 में स्थापित किया गया था। यह शुद्ध एशियाई शेरों का एकमात्र घर है (*पैंथेरा लियो पर्सीका*) और इसे एशिया के सबसे प्रभावी क्षेत्रों में से एक माना जाता है। गिर के पारिस्थितिकी तंत्र में विविध वनस्पतियों और जीवों का समावेश है।

9.4.3.3 डांग जिले में पर्यावरणीय पर्यटन

डांग एक आदिवासी बहुल जिला है जो गुजरात के दक्षिण में स्थित है। इसमें पर्वत श्रृंखलाएं और घने जंगल हैं। भील, कोंकणी, वरली, कोतवालिया, कथोड़ी और गामित डांग जिले की कुछ प्रमुख जनजातियाँ हैं। राज्य द्वारा डांग जिले को पर्यावरणीय पर्यटन स्थल घोषित किया गया है। जिला समृद्ध वनों, छोटे और बड़े झरनों, सुंदर परिदृश्य और आदिवासी संस्कृति से सुसज्जित है। सापुतारा, डांग के दक्षिणी भाग में है, वह नागों के निवास के रूप में जाना जाता है, जो पारिस्थितिकी के लिए समृद्ध वन्यजीव प्रदान करता है। सापुतारा संग्रहालय डैंग्स की स्थलाकृति और मानवविज्ञान के बारे में दिलचस्प जानकारी देता है(नसिया और महिडा 2012)।

9.4.4 असमः पर्यावरणीय पर्यटन

असम को अपनी प्राकृतिक सुंदरता और अनुकूल जलवायु स्थिति के कारण पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र माना जाता है। राज्य वनस्पतियों और जीवों की किस्मों के लिए प्रसिद्ध है। असम को ऐतिहासिक स्मारकों, तीर्थ स्थलों, चाय बागानों और रंगीन सांस्कृतिक त्योहारों के पर्यटन स्थल के रूप में माना जाता है। असम में विभिन्न राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव और पक्षी अभयारण्य और जीवमंडल भंडार हैं, जो पर्यटन के लिए संभावित संसाधन हैं।

(i) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान : काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में बड़ी संख्या में पहाड़ी इलाके, दलदल, मैदान, और जल निकाय हैं जहाँ अद्वितीय वनस्पतियों और जीवों की कई प्रजातियाँ निवास करती हैं। ग्रेट इंडियन वन–हॉर्न गैंडे से लेकर छोटे कछुए तक देखे जाते हैं जहां रोमांच का एक शानदार अनुभव भी जुटा सकते हैं।

(ii) मानस राष्ट्रीय उद्यान : मानस नदी के तट पर स्थित मानस राष्ट्रीय उद्यान एक विश्व धरोहर स्थल है और भारत का एक महत्वपूर्ण बाघ अभयारण्य है। यह हाइलैंड सवाना, नम पर्णपाती और उष्णकटिबंधीय अर्धवृक्ष पेड़ों द्वारा चिह्नित है। ये उद्यान लुप्तप्राय और दुर्लभ वनस्पतियों और जीवों का जंगल भी है। दुर्लभ प्रजातियों का अस्तित्व राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पर्यटकों को आकर्षित करता है।

(iii) नामेरी राष्ट्रीय उद्यान : नामेरी राष्ट्रीय उद्यान पूर्वी हिमालय की तलहटी में स्थित है। इस उद्यान में मुख्य गतिविधियों में बर्ड वॉचिंग(पक्षी देखना), ट्रेकिंग(पहाड़ पर चढ़ना), एंगलिंग (मछली पकड़ना), जिहराबाली (नदी) आदि शामिल हैं। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि गोल्डन माहेसेर के लिए मछली पकड़ना औपनिवेशिक शासन के बाद से नामेरी की मुख्य पहचान है। हर साल, जीभाराली दुनिया भर के मछली पकड़ने वालों को आकर्षित करता है। 'मछली पकड़ने और छोड़ने ' के आधार पर मछली पकड़ने के कार्य को विनियमित किया जाता है।

(iv) मजुलीः एक समय में यह दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप था, जो असम के ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित है। आज भारी कटाव के कारण लुप्तप्राय सूची के अंतर्गत आता है। मजुली विभिन्न जातीय समुदायों जैसे अहोम, कचारिस, ब्राह्मण, कोच राजबोंगशी, बोनाईस, कोइबार्टस, नेपाली आदि का निवास स्थान है। इसे असम की सांस्कृतिक राजधानी और *सतरस* (मठों) के लिए ज्ञात असमिया सभ्यता का पालना माना जाता है जो की पिछले पाँच सौ वर्षों से सीखने का स्थल है। मजुली में बनाए गए मिट्टी के बर्तन प्राचीन हड़प्पा सभ्यता में पाए गए लोगों के बर्तनों से मिलते जुलते हैं। मिट्टी के बर्तनों को कुटी हुई मिट्टी से बनाया जाता है और बहाव वाले भट्टों में जलाया जाता है(देवी, 2012)। मजुली द्वीप पर रहने वाले विभिन्न जातीय समूहों की अनूठी संस्कृति का संरक्षण पर्यावरणीय पर्यटन उद्यमों के लिए उचित है। मुखौटा बनाने का शिल्प; बेहतरीन नौकाएँ द्वीप की गतिविधियों का एक हिस्सा हैं। एक आर्द्रभूमि के रूप में , मजुली वनस्पतियों और जीवों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है, जो सर्दियों के मौसम में आने वाले प्रवासी पक्षियों सहित कई दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों को शरण देती है। पुरातनता के कई पवित्र स्थल हैं जो धार्मिक, शैक्षणिक और पर्यटक हित दोनों हैं। संस्कृतियां, प्रवासी पक्षी, अली–आए–लिगंग त्योहार, मिट्टी के बर्तन बनाना, मुखौटा बनाना, पाल नाम और रास लीला उत्सव, मुखौटों का शिल्पांकन, कुछ ऐसे प्रमुख आकर्षण हैं जो पर्यावरणीय पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। असम में अन्य

स्थानों जैसे हैंफलांग, माईबांग, उमरंगसो, पानिमूर, चंदूबी झील, रानी रिजर्व वन क्षेत्र, हाजो, मंयोग, बारदोवा ऐसे स्थान हैं जहाँ पर्यावरणीय पयर्टन उद्यमों के लिए बहुत अधिक सभांवनाए हैं (देवी, 2012)। पयार्वरणीय पर्यटन उद्यम के संबधं में असम राज्य में बड़ी संभावनाएं हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 4

6. "नागा समाज अधिकतर समुदाय आधारित है"। बताइए कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

7. किस राज्य को भगवान के अपने देश के रूप में जाना जाता है?

.....

.....

.....

8. गुजरात को इको पर्यटकों के बीच एक विशेष दर्जा क्यों प्राप्त है?

.....

.....

.....

9. असम का कौन सा राष्ट्रीय उद्यान विश्व धरोहर स्थलों का एक हिस्सा है?

.....

.....

.....

9.5 पर्यावरणीय पर्यटन का प्रभाव

एक स्थानीय समुदाय को स्थायी आर्थिक लाभ के लिए पर्यावरणीय पर्यटन की उम्मीद रहती है। एक समुदाय के कई घर पर्यावरणीय पर्यटन के माध्यम से नकद कमाते हैं। दास और हुसैन (2016: 241) ने तर्क दिया कि पर्यावरणीय पर्यटन घरेलू बजट को सकारात्मक और महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करके आर्थिक कल्याण उत्पन्न करता है। काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान असम (केएनपी) के परिधि गांवों में गरीबी और पिछड़ेपन की सीमा को ध्यान में रखते हुए, पर्यावरणीय पर्यटन उद्यम व्यवहार्य और वांछनीय लगता है। दास और हुसैन (2016: 255) के अनुसार, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की परिधि वाले गांवों में रहने वाले लोग कम मुनाफे वाली कृषि या इसी तरह की गतिविधियों के लिए प्रयासरत रहते यदि वहाँ पर्यावरणीय पर्यटन नहीं होते। परंपरागत आजीविका से उत्पन्न आय निवेश के निम्न स्तर, कृषि भूमि जोत के छोटे आकार, जानवरों के हमले और बाढ़ आदि के कारण पर्याप्त नहीं हो सकती है। काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की संभावना है। पर्यावरणीय पर्यटन काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की परिधि वाले गाँवों के लिए रोजगार की संभावनाएँ प्रदान करता है, जैसे कि रेस्तरां खोलने, हस्तशिल्प को

बनाने, स्थानीय संरक्षित भोजन बनाने, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, स्मारिका की बिक्री और उत्पादन, पर्यावरणीय–लॉज, रहने के लिए आवास, पर्यटन और परिवहन, और मार्गदर्शक सेवाएं (दास और हुसैन, 2016)।

नागालैंड राज्य के नागा गाँव समुदाय आधारित हैं। खेती से संबंधित निर्णय, जंगल का संरक्षण और महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक मुद्दे सामूहिक रूप से किये जाते हैं। अगर नागालैंड में पर्यावरणीय पर्यटन का कोई तोड़ है, तो इसका कारण है सामुदायिक भागीदारी। नागालैंड के खोनोमा गाँव ने पर्यावरण के अनुकूल कार्य करने का निर्णय लिया और जानवरों का शिकार करने और जंगल से लकड़ी इकट्ठा करने की अपनी पारंपरिक गतिविधियों को त्यागने का फैसला किया है, जो पर्यावरणीय संरक्षण और पर्यावरणीय पर्यटन उद्यम को बढ़ावा देता है। ग्रीन गांव परियोजना की योजना और कार्यान्वयन में समुदाय के सदस्यों ने नेतृत्व किया है। सरकार की सहायता और समुदाय के प्रयास के कारण नागालैंड में पर्यावरणीय पर्यटन फल–फूल रहा है (किन्नी और लानूसोसंग 2016: 158)।

हार्मन (2003 से उद्धृत,वेस्ट 2016) गुजरात में संरक्षित क्षेत्रों से प्राप्त अमूर्त मूल्यों जैसे : 'मनोरंजक, चिकित्सीय, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, पहचान, अस्तित्व, कलात्मक, सौंदर्य, शैक्षिक, शांति और वैज्ञानिक अनुसंधान और निगरानी' पर चर्चा करते हैं। इन मूल्यों को ईको–पार्क में आने वाले लोगों और उनमें रहने वाले लोगों के सामाजिक जीवन और भलाई को बदलने की क्षमता के रूप में देखा जाता है।

9.6 सारांश

पर्यावरणीय पर्यटन को प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों पर आधारित पर्यटन के रूप में माना जाता है, जो स्थायी अथवा सत है, संरक्षण को बढ़ावा देता है, सार्थक सामुदायिक भागीदारी और पर्यावरण के अनुकूल है। केस स्टडी के रूप में चुने गए सभी चार राज्य एक दूसरे से अलग हैं। उदाहरण के लिए, नागालैंड और केरल में समुदाय की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है, जो अन्य राज्यों में लागू नहीं हो सकता है, जबकि केरल और असम में राष्ट्रीय उद्यानों और जल निकायों की सुविधा नागालैंड में अनुपस्थित है। कुछ पर्यटक गुजरात में होटल के साथ–साथ आवास को रखना पसंद कर सकते हैं, जबकि कुछ अलग अनुभव के लिए नागालैंड में घर में रहना पसंद कर सकते हैं। इन सभी चार राज्यों असम, नागालैंड, गुजरात और केरल में पर्यावरणीय पर्यटन की बहुत बड़ी संभावनाएं हैं क्योंकि राज्य और समुदाय दोनों एक ही समय में पर्यावरणीय व्यवस्था को बचाने में समान रूप से रुचि रखते हैं और अपने स्वदेशी या देशज लोगों की संस्कृति और विरासत को भी संरक्षित करते हैं। भारत की विविध संस्कृतियों और भौगोलिक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक राज्य को पर्यावरणीय पर्यटन का ढांचा तैयार करते समय अलग रणनीति की आवश्यकता हो सकती है।

9.7 संदर्भ

एकॉट, टी.जी., ला ट्रोब, एच. एल. एंड हॉवर्ड, एस.एच. (1998). एन इवोल्युशन ऑफ़ डीप ईकोटूरिज्म एंड शैलो इकोटूरिज्म.*जर्नल ऑफ़ सस्टेनेबल टूरिज्म.* 6 (3): 238–253.

कैरियर, जेम्स जी. एंड डोनाल्ड वी. एल. मैकलोड. (2005). बर्सटिंग द बबलः द सोशियो–कल्चरल कान्टेक्स्ट ऑफ इकोटूरिज्म. *द जर्नल ऑफ़ द रॉयल एंथ्रोपोलॉजिकल इंस्टीट्यूट*, 11 (2): 315–334.

कैटर ई. (1993). ईकोटूरिज्म इन द थर्ड वर्ल्ड : प्रॉब्लम्स फॉर सस्टेनबल डेवलपमेंट. *टूरिज्म मैनेजमेंट* 24, 85–90.

सेबलोस लैस्स्कुरेन, एच. (1987). द फ्यूचर ऑफ इकोटूरिज्म, *मेक्सिको जर्नल.* 13–14.

दास, डी,एंड हुसैन, आई. (2016). डज इकोटूरिज्म एफेक्ट इकोनॉमिक वेल्फेयर ? एविडेंस फ्रॉम काजीरंगा नेशनल पार्क, इंडिया.*जर्नल ऑफ़ इकोटूरिज्म* 15 (3), 241–260. https://doi.org/10.1080/14724049.2016.

दास, एस. (2011). "ईकोटूरिज्म, सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड द इंडियन स्टेट". इकोनोमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 46.37 (2011): 60–67. *इकोनोमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, xlvi -

देवी, मीना कुमारी. (2012). इकोटूरिज्म इन असमः ए प्रॉमिसिंग ऑपर्चुनिटी फॉर डेवलपमेंट. SAJTH 5 (1): 179–192.

गवर्नमेंट ऑफ गुजरात (जी.ओ.जी) (2017). *डेवलपमेंट ऑफ वाइल्ड लाइफ एंड इकोटूरिज्म सर्किट.* 8 वीं ग्लोबल सम्मिट.

ग्रिव्स, मैगी, मरीना एडलर एंड रॉबिन किंग (2014). 'टु प्रिजर्व द माउंटेन्स एंड द कम्युनिटी : इन्डिजिनीयस ईकोटूरिज्म एज ए सस्टेनबल डेवलपमेंट स्ट्रेटजी'. *सोशल थॉट एंड रिसर्च*, 33: 83–111.

हिगम, जेम्स (संपा).(2007). *क्रिटिकल इश्यूज़ इन इकोटूरिज्मः अंडरस्टैंडिंग ए कॉम्प्लेक्स टूरिज्म फिनोमेनन.* बटरवर्थ–हिनमैन

किनी, ए, एंड टी. लानूसोसंग.(2016). एक्सप्लोरिंग द पोटेंशिअल फॉर ईकोटूरिज्म एंड सस्टेनबल टूरिज्म डेवलपमेंट इन नागालैंड ,इंडिया. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च* 2016; 2 (9): 156–160.

मैनस्पर्गर, एम. सी. (1995). टूरिज्म एंड कल्चर चेंज इन स्मॉल स्केल सोसाइटीज. *ह्युमन ऑर्गेनाइजेशन*, 54 (1), 87–94.

सीवेंस, रेजिना. (1999). इकोटूरिज्म एंड द एम्पावरमेंट ऑफ लोकल कम्युनिटीज. *टूरिज्म मैनेजमेंट* 20: 245–249.

रसेल,एंड्रयू और गिलियन वालेस (2004). इर्रिस्पोन्सीबल इकोटूरिज्म. *एंथ्रोपोलॉजी टुडे* , 20 (3): 1–2.

स्ट्रोन्जा, अमांडा ली. (2001). एंथ्रोपोलॉजी ऑफ टूरिज्मः फोर्जिंग न्यू ग्राउंड फॉर इकोटूरिज्म एंड अदर अल्टरनेटिव्स. *एनुअल रिव्यु ऑफ एंथ्रोपोलॉजी* , 30: 261–283.

स्ट्रोन्जा, अमांडा ली. (2010). कॉमन्स मैनेजमेंट एंड इकोटूरिज्म एथ्नोग्राफीक एविडेंस फ्रॉम द अमेजन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कॉमन्स*, 4 (1): 56–77.

सुब्रमण्यम, पी.(2008). आउटलुक फॉर ईकोटूरिज्म इन इंडिया. *द इन्टरनेशनल फ़ोरेस्ट्री रिव्यु* , 10 (2): 245–255. स्पेशल इश्युः द इंडियन फॉरेस्ट सेक्टर–करेंट ट्रेंड्स एंड फ्यूचर चैलेंजेस.

विनोदन, ए, एंड मैनलेल, जेम्स. (2011). "*लोकल इकोनोमिक बेनिफीट्स ऑफ इकोटूरिज्मः ए केस स्टडी ऑन परंबिकुलम टाइगर रिजर्व इन केरल,इंडिया* ". *साउथ एशियन जर्नल ऑफ़ टूरिज्म एंड हेरिटेज.* वॉल्यूम 4. नं.2,93–109.

वीवर, डेविड बी. (संपा). (2001). द इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इकोटूरिज्म. यूकेः सीएबीआई पब्लिकेशन.

वेस्ट, पैज एंड जेम्स जी. कैरियर. (2004). ''इकोटूरिज्म एंड औथेंटिसीटी : गेटींग अवे फ्रॉम इट ऑल?'' *करेंट एंथ्रोपोलॉजी.* 45 (4): 483–498

वर्ल्ड कमिशन ऑन एन्वायरोंमेंट एंड डेवलपमेंट (डब्लयूसीईडी) (1987).*अवर कॉमन फ्यूचर.* ऑक्सफोर्ड, यूकेः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

9.8 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर/संकेत

1. कृपया उत्तर हेतु अनुभाग 9.1 देखें
2. सही।
3. सही।
4. कृपया उत्तर हेतु अनुभाग 9.2 का संदर्भ लें।
5. कृपया उत्तर हेतु अनुभाग 9.3 देखें।
6. सही।
7. केरल।
8. अनुभाग 9.4.3 देखें।
9. मानस राष्ट्रीय उद्यान।

इकाई 10 पर्यटन मानवविज्ञान में नई दिशाएँ *

इकाई की रूपरेखा

10.1 परिचय

10.2 वैश्वीकरण, समकालीन पर्यटन और सतत विकास

10.3 पर्यटन मानवविज्ञान की नई दिशाएँ

10.4 सारांश

10.5 संदर्भ

10.6 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के अंत में, आप निम्नलिखित बातों को समझने में सक्षम होंगेः

- पर्यटन के मानवविज्ञान के उप–विषयों के बारे में;
- पर्यटन पर मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण; तथा
- आज की वैश्वीकृत दुनिया में पर्यटन की बदलती प्रकृति और उभरते रुझान।

10.1 परिचय

पर्यटन का इतिहास बहुत लम्बा और सभी संस्कृतियों में व्यापक है यह समकालीन लोगों के जीवन में भी एक महत्वपूर्ण सामाजिक तत्व है। यह दुनिया के प्रमुख उद्योगों में से एक है और विकसित और विकासशील दोनों देशों ने इसके महत्व को स्वीकारा है। पर्यटन की मौलिक अवधारणा में लोगों के अपने निवास स्थान और काम के लिए बाहरी गंतव्यों में आवाजाही शामिल है, इन गतिविधियों में अपने गंतव्य में रहने के दौरान वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रदान की गई सुविधाओं और सेवाओं को शामिल करते हैं। एक तरह से पर्यटन पर अध्ययन न केवल यात्री और उसकी अपेक्षाओं पर बल्कि गंतव्य (यानी, भौतिक पर्यावरण) और मेजबान समुदाय के आर्थिक पर्यावरण और सामाजिक कल्याण पर पड़ने वाले प्रभावों पर भी केंद्रित है।

पर्यटन से जुड़ी सांस्कृतिक प्रक्रियाओं को समझने के प्रयास एवं समर्पित और प्रभावशाली अध्ययनों की बढ़ती संख्या ने पर्यटन की जटिल प्रकृति को समझने के लिए एक नई अंतर्दृष्टि प्रदान की है।

पर्यटन में मानवशास्त्रीय रुचि ने 1970 के बाद गति प्राप्त की, अब यह भविष्य के विकास और उसके सकारात्मक संकेतों के साथ अच्छी तरह से स्थापित एक उप–विषय है। मानवविज्ञानी हर उस चीज में रुचि रखते हैं जो मानव जाति की चिंता करती है और संस्कृति के संपर्क और सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ–साथ मानवशास्त्रीय चिंता से उभरने वाले पर्यटन के प्रश्नों का अध्ययन करती है। मानवविज्ञानियों ने पर्यटक को एक विजेता, गवर्नर या मिशनरियों के रूप में देखना प्रारम्भ कर दिया, जो कि संस्कृतियों के बीच

***योगदानकर्ता:** डॉ. गुंजन अरोड़ा, पोस्ट–डॉक्टोरल फैलो, सेंटर फार सोशल मेडिसिन एंड क्यूनिटी हेल्थ, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, जेएनयू, नई दिल्ली.

सम्पर्क के एजेंट के रूप में कार्य करते हैं तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों, विशेष रूप से कम विकसित क्षेत्रों में परिवर्तन के कारण है (नैश 1989: 37)। पर्यटकों के व्यवहार के अनेक कारण है जिससे सिद्धांतों में विविधता है। यह हमें पर्यटक के संघर्ष में समाज और सांस्कृतिक जटिलता तथा पर्यटकों की प्रेरणाओं को समझने में हमारी मदद करते हैं। पर्यटन के अत्यधिक नकारात्मक आकलन से इस विषय में एक अधिक संतुलित दृष्टिकोण उभरा है।

मानवविज्ञानी पर्यटन विषय क्षेत्र में उनके देर से आगमन को स्वीकार करने में संकोच नहीं करते हैं और अब वे अध्ययन की इस शाखा में महत्वपूर्ण योगदान देने में भी कामयाब हैं। सामाजिक मानवविज्ञानी अपनी विभिन्न कार्यप्रणाली, नृवंशविज्ञान (एथनोग्राफिक) क्षेत्रकार्य का उपयोग करते हुए, कई अंतर्संबधी विषयों को उजागर करते हुए एक महत्त्वपूर्ण और मजबूत स्थिति में पहुँच चुके हैं। पर्यटन ने समय के साथ समाजों में हुए बदलाव, अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव, मेजबान समुदाय के पर्यावरणीय और सामाजिक ताने–बाने और मेजबान सरकार के लिए बनाए गए व्यावहारिक निहितार्थ के अध्ययन में भी योगदान दिया है। पर्यटन के अच्छे और बुरे दोनों प्रभावों को विभिन्न विद्वानों ने उजागर किया है। वैश्वीकरण और तीव्र संचरण के संदर्भ में एक बदली हुई दुनिया ने पर्यटन को प्रभावित किया है। समय के साथ इसका चरित्र भी बदल रहा है, पहले यात्रा में कई महीने और साल लगते थे और यात्रियों का अपने घर और समुदाय के साथ बहुत कम संचार था। पर्यटन की बदलती प्रकृति में योगदान करने के लिए मानवविज्ञान के पास बहुत कुछ है क्योंकि दुनिया जटिल तरीकों से बदल जाती है।

10.2 वैश्वीकरण, समकालीन पर्यटन, और सतत विकास

आज की वैश्वीकृत दुनिया में समकालीन पर्यटन पर चर्चा आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक क्षेत्र की परस्परता को पहचानकर, स्थानीय और वैश्विक दोनों चिंताओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं। वैश्वीकरण, अक्सर एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जाता है जिसके द्वारा दुनिया के एक हिस्से में घटनाओं, निर्णयों और गतिविधियों के कारण दुनिया के काफी दूर के हिस्सों में व्यक्तियों और समुदायों के लिए महत्वपूर्ण परिणाम हो सकते हैं (गिडेंस 1990)। नब्बे के दशक में वैश्विक संबद्धता में जो वृद्धि देखी गई, उसे एंथोनी गिडेंस (1990: 64) ने पर्याप्त रूप से 'विश्व–व्यापी सामाजिक संबंधों की गहनता के रूप में अभिव्यक्त किया है, जो दूर के इलाकों को इस तरह से जोड़ता है कि कई मील की दूरी पर होने वाली घटनाओं को स्थानीय घटनाओं के विपरीत आकार दिया जाता है'। (आप अपने पड़ोसी को न जानते हो,पर विश्व में क्या हो रहा है उससे भली–भांति अवगत हैं।)

वैश्वीकरण को एक प्रक्रिया के रूप में समझा जा रहा है, जो हमारे जीवन के हर पहलू पर यह आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक को प्रभावित करती है। रॉबर्टसन (1992:166) ने इसे 'दुनिया का संपीड़न' कहा, क्योंकि लोगों, वस्तुओं, परिसंपत्तियों, विचारों और संस्कृतियों के सीमा पार विनिमय में वृद्धि हुई है। इंटरनेट और बढ़े हुए संचार के परिणामस्वरूप उल्लेखनीय 'समय – स्थान संपीड़न 'आया क्योंकि दुनिया भर के लोगों को विभिन्न तकनीकी सहायता प्राप्त विकासों के माध्यम से करीब आये हैं।

बर्न्स एंड होल्डन (1995: 75) ने वैश्वीकरण को 'उन तरीकों के रूप में संदर्भित किया है जिनमें एक स्तर पर (यानी, व्यापार और उपभोग के स्तर पर) राष्ट्रों के बीच आर्थिक और राजनीतिक संबंध एक तरह से 'सांस्कृतिक अभिसरण' द्वारा बनाए जाते हैं, जहां एक मूल्यों का समुच्चय 'सांस्कृतिक समरूपता' की प्रवृत्ति वाले देशों की सीमा में उभरता है। माइकल

कर्नी (1995) और जॉर्ज मार्कस (1995) पहले मानवविज्ञानी थे जिन्होंने वैश्विकता और प्रभाववाद को पहचाना, जिसका प्रभाव व्यक्तिगत/सामुदायिक पहचान, विराष्ट्रीकरण और प्रवास जैसे मुद्दों पर पड़ा है। मार्कस ने आगे तर्क दिया है कि वैश्वीकरण न केवल स्थानीय समुदायों का चेहरा बदल रहा है, बल्कि मानवविज्ञान के अध्ययन को भी बदल रहा है। अन्य मानवविज्ञानी और समाजशास्त्रियों जैसे, अप्पादुराई (1996), बॉमन (1998), एरिकसेन (2003), रॉबर्टसन (1992), इंदा और रोजाल्डो (2002) ने वैश्वीकरण के सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं को प्रमाणित किया है। उन्होंने देखा है कि बढ़ती वैश्विक परस्परता और अन्योन्याश्रयता की स्थिति ने विभिन्न समूहों और व्यक्तियों के विशिष्ट जीवन के स्थानीय अर्थों, स्व–छवियों, प्रतिनिधित्व और तौर–तरीकों के विविध–सांस्कृतिक उत्पत्ति को खोल दिया है (अप्पादुराई 1996) इस तरह 'स्थानीय' की धारणा को विद्वानों के विश्लेषण में सबसे आगे रखा जाता है। यहां 'स्थानीय' न केवल एक विशेष स्थान को दर्शाता है, बल्कि उस स्थान पर रहने वाले लोगों के लिए भी है, जिनके पास जीवन का एक विशेष तरीका और एक विशेष विश्वदृष्टि है। 'स्थानीय' की यह धारणा पर्यटन अध्ययन में अधिक स्पष्ट है।

वैश्वीकरण ने उन स्थलों और गंतव्यों को खोल दिया है जिनका कभी पर्यटन गंतव्य बनना कठिन था। इस सिकुड़ते हुए दुनिया में लोगों को करीब लाया गया है और जैसा कि केयर्नक्रॉस (1997) ने इसे, 'दूर की मौत' कहा है जिसमें, राष्ट्रीय सीमाओं के पार एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने वाले लोगों/यात्रियों का तेजी से प्रवाह होता है। सभी समाज जो पहले दूरस्थ गंतव्य थे, अब वहाँ पर्यटकों का आना जाना शुरु हो गया है। पहले जो व्यक्ति दूरस्थ गन्तव्य पर जाते थे उन्हें 'खोजी' और 'साहसी' कहा जाता था, जो खतरे और अनिश्चितता का सामना करते थे, लेकिन अब एक ऐसी दुनिया में जहां यात्रा और संचार तकनीकी अत्यधिक रूप से विकसित हुई है, यहां तक कि बहुत दूरदराज के स्थानों की यात्रा भी सामान्य पर्यटन का हिस्सा बन गई है, यह कुछ ऐसा है जो किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। चूंकि यात्रा और दूर के स्थानों पर अब जाना अपने ग्लैमर के साथ–साथ रोमांच को खो देता है, इसलिए यह पर्यटन एजेंसियों के लिए रोमांच के भ्रम को पुनर्जीवित करने के साधन के रूप में उभरा है। मानवविज्ञानी यात्रा के प्रतीकात्मक पहलुओं और प्रेरणाओं के साथ–साथ दुनिया की राजनीतिक अर्थव्यवस्था के बारे में पर्यटन के अन्तराफलक के अध्ययन में शामिल हैं ।

पर्यटन पहचान, अपनेपन और व्यक्तित्व की धारणाओं को भी उजागर करता है। उदाहरण के लिए ब्रिटिश भारत में म्यांमार, भारत के किसी भी हिस्से से यात्रा करने वाले व्यक्ति बताने के लिए कलकत्ता कहते हैं, वे खुद को पर्यटकों के रूप में नहीं मानते हैं; जब वे अपने देश के भीतर यात्रा कर रहे थे। लोगों को काम, व्यापार या प्रशासन के लिए भी यात्रा करनी पड़ती है। आनंद के लिए यात्रा वैश्विक दुनिया की एक घटना है जिसमें सुरक्षा के साथ यात्रा, समय की कमी और संचरण होता है। उसी समय, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की दुनिया में, पहचान का विखंडन और सुधार हुआ है; नए राष्ट्रों का निर्माण हुआ है और अपनेपन की अलग भावना उत्पन्न हुई है।

पर्यटन के संदर्भ में, पर्यटन उद्योग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और नए स्थानों को लगातार पर्यटन प्रक्रिया में शामिल किया जा रहा है। न केवल पूंजी और वस्तुओं को सीमाओं के पार स्थानांतरित किया जा रहा है, बल्कि पर्यटकों को भी स्थानांतरित किया जा रहा है। दुनिया भर में सबसे बड़े विकास उद्योग, नियोक्ता और राजस्व के स्रोत के रूप में तीसरी दुनिया के कई देशों ने जल्द ही महसूस किया कि वे अपनी पर्यटन क्षमता को बढ़ाकर विदेशी मुद्रा की कमाई और अपनी प्रगति कर सकते हैं। पर्यटन किसी देश की राजनीतिक

स्थिति और इसके दूसरे देशों के साथ संबंध से भी काफी हद तक प्रभावित होती है। पर्यटन निर्णय लेना एक पहलू है जिसे मानवविज्ञानी वैश्विक शक्ति क्षेत्रों के दायरे में अध्ययन कर सकते हैं। लोग केवल एक मानदंड के आधार पर विशेष स्थानों की यात्रा करने का निर्णय नहीं लेते हैं,अपितु वे उस स्थान के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सहित कई पहलुओं के आधार पर निर्णय लेते हैं। गहन संग्रह विधियों के माध्यम से प्राप्त आँकड़ों के माध्यम से, जिसे मानवविज्ञानियों द्वारा उपयोग किया जाता है, पर्यटन की घटना में एक अति सूक्ष्म और यथार्थवादी अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। कई ऐसे देश हैं जो यदि दूसरे देशों के यात्रियों को अपने देश में यात्रा के लिए प्रोत्साहित नहीं करते। किसी देश में किसी पर्यटक को यात्रा की अनुमति है या नहीं है, यह उस देश की वैश्विक शक्ति पदानुक्रम में स्थिति पर निर्भर करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिकों को कई देशों के लिए वीजा की आवश्यकता नहीं है। एक देश और दूसरे देश के बीच राजनीतिक संबंध भी महत्वपूर्ण हैं, पर्यटन के लिए वित्तीय बाधाएं भी महत्वपूर्ण मानदंड हैं। यही कारण है कि तीसरी दुनिया के देशों को पर्यटन के लिए पसंदीदा स्थान माना जाता है क्योंकि पहली (विकसित) दुनिया के देशों के आगंतुकों के लिए वहां सब कुछ सस्ता है।

प्रौद्योगिकी और पर्यटन

प्रौद्योगिकी संस्कृति का एक अभिन्न पहलू है और तकनीकी परिवर्तन संस्कृति परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। मानवविज्ञानी बहुत लंबे समय से संस्कृति और तकनीकी परिवर्तनों के अध्ययन में लगे हुए हैं। तकनीकी परिवर्तन केवल यांत्रिक परिवर्तन नहीं होते हैं, बल्कि सामाजिक संबंधों और सामाजिक व्यक्तियों के व्यवहार की पद्धति में काफी परिवर्तन से होते हैं। इसी तरह इंटरनेट प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ, दुनिया भर के समाजों में बहुत कुछ बदल गया है। बढ़ते शहरीकरण के साथ, मानवीय संबंध समाप्त हो गए हैं और लोग अधिक व्यक्तिवादी भी हो गए हैं। हालांकि, ऐसा सभी संस्कृतियों में नहीं हुआ हैं। पहले अधिकांश जीवन परिवारों के भीतर सन्निहित थे और लोग अपना अधिकांश जीवन घरेलू कर्तव्यों को ध्यान रखते हुए बिताते थे। प्रौद्योगिकियों के समग्र परिवर्तन और अधिक शहरीकरण के साथ, लोग अब समुदाय और परिवार के साथ गहन भागीदारी से मुक्त हो गए हैं। शहरों में लोगों को एकांकी जीवन शैली अपनाने, व्यक्तिगत निर्णय लेने और उनके स्थानान्तरण के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। पति, पत्नी और बच्चों का परिवार, अपने बुजुर्गों से अनुमति लिए बिना कहीं भी घूमने जाने के लिए एक स्वतंत्र निर्णय ले सकता है। कुछ संस्कृतियों में लोग विशाल परिवार के साथ समूहों में भी यात्रा करते हैं। दूसरी ओर, एकल व्यक्ति भी व्यक्तिगत रूप से यात्रा कर सकते हैं। ट्रैवल एजेंटों को यात्रा के लिए सभी प्रकार की मांगों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। उनके पास परिवार समूहों, बड़े परिवार समूहों, व्यक्तियों और समूह के साथ बिना संबंध की यात्रा से निपटने के भी विभिन्न तरीके होने चाहिए। वैश्वीकरण की वर्तमान स्थितियों में यह बहुत हद तक संभव है कि असंबंधित यात्रियों के समूह में लोग विभिन्न राष्ट्रीयताओं और संस्कृतियों के हो सकते हैं।

इंटरनेट और मीडिया संचरण ने न केवल लोगों को जोड़ा है, इसने दुनिया को एक घर में ला दिया है। मीडिया ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों के बारे में जागरूकता बढ़ाई है। पर्यटकों के दौरे का एक व्यापक प्रभाव भी होता है, क्योंकि कुछ क्षेत्र लोकप्रियता में लाभ प्राप्त करना शुरू कर देते हैं, जिससे पर्यटक की आवाजाही में तेजी से वृद्धि होती है, क्योंकि अधिक लोगों का किसी विशेष स्थान पर जाने का अर्थ है कि अनौपचारिक नेटवर्क का उपयोग शब्द को फैलाने के लिए किया जाता है और अधिक से अधिक लोग इसमें रुचि प्राप्त करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन और आतिथ्य उद्यम लोगों को वैश्विक स्तर पर अपने कार्यों का विस्तार करने के लिए पर्यटन बहुत सारे प्रोत्साहन देता हैं। इंटरनेट प्रौद्योगिकी के उपयोग ने पर्यटन उद्योग को अपना विस्तार देने में सक्षम बनाया है। इंटरनेट प्रौद्योगिकी द्वारा सहायता प्राप्त नए पर्यटन के इस चेहरे के दो मुख्य आयाम हैं:

1. अधिक सूचनायुक्त नए पर्यटक और उपभोक्ता– सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसार ने संभावित पर्यटकों को अधिक सूचित किया है, जिन्हें न केवल पैसे के लिए मूल्य की आवश्यकता होती है बल्कि, समय के लिए भी मूल्य की आवश्यकता होती है। इंटरनेट उपकरण उपभोक्ताओं को गंतव्य के बारे में जानकारी के लिए ऑनलाइन खोज करने में सक्षम बनाता है और आरक्षण भी करता है। इंटरनेट उपभोक्ता को विश्वसनीय और सटीक जानकारी तक पहुंचने और समय के हिसाब से आरक्षण करने की अनुमति देता है। उपभोक्ता की मांग के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी गुणवत्ता के माध्यम से सेवा की गुणवत्ता भी सुनिश्चित की जा सकती है, जिससे पर्यटकों की संतुष्टि अधिक होगी। यह एक अधिक अनुकूलित पर्यटन उत्पाद भी सुनिश्चित करता है। नए उपभोक्ता सांस्कृतिक और पर्यावरणीय रूप से अधिक जागरूक हैं और वे अक्सर स्थानीय समाज के साथ अधिक भागीदारी पसंद करते हैं।

2. बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा और पर्यटन प्रोत्साहन में बदलाव– आपूर्तिकर्ता के सामने लक्ष्य आबादी के साथ संवाद करने का अवसर प्रदान करता है अर्थात् जैसे पर्यटक, ट्रैवल एजेंसियों और अन्य मध्यस्थ संगठनों को उपभोक्ता के साथ सीधा संबंध रखने में सक्षम बनाता है। उपभोक्ता जरूरतों की त्वरित पहचान करते हैं और कुछ ही समय में एक व्यापक, व्यक्तित्व युक्त और नवीनतम जानकारी उपलब्ध करा दी जाती है।

इंटरनेट ने उपभोक्ता की पसंद और सेवा वितरण की प्रक्रिया के लचीलेपन में क्रांति ला दी है। इस प्रकार, इंटरनेट ने नए प्रकार के पर्यटकों को ज्ञानवान बनने और पैसे और समय के लिए मूल्य प्राप्त करने का अधिकार दिया। तद्नुकूल पर्यटन उत्पादों की पेशकश न केवल ग्राहकों की संतुष्टि सुनिश्चित करती है बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि पर्यटक संगठन भविष्य में भी पर्यटकों को आकर्षित करेंगे। पर्यटक संगठन संभावित पर्यटक की मांगों और चिंताओं को देखने के लिए व्यापक बाजार अनुसंधान में खुद को शामिल करते हैं। संबंध विपणन (रिलेशनशीप मार्केटिंग) विकसित करने से पर्यटन संगठनों को उपभोक्ताओं के साथ घनिष्ठ साझेदारी स्थापित करने और उपभोक्ता प्रतिधारण और वफादारी बनाए रखने की अनुमति मिलती है। शमलेगर और कार्सन (2008) ने पर्यटन में प्रचार, उत्पादन वितरण, संचार, प्रबंधन और अनुसंधान के भीतर इंटरनेट कैसे महत्वपूर्ण है, इस पर प्रकाश डाला है। इंटरनेट ने एक नेटवर्क अर्थव्यवस्था बना दी है, जहां पर्यटन आपूर्तिकर्ता वैश्विक स्तर पर काम कर सकते हैं और पारंपरिक मध्यस्थों पर निर्भरता कम होती है, जैसे ट्रैवल एजेंसियां, जिससे पर्यटन उत्पाद अधिक विशिष्ट और लचीला हो जाता है।

इस प्रकार यह देखा गया है कि विश्व भर में स्थानों का एक सर्वव्यापी उत्पादन और खपत है और समकालीन वैश्विक संस्कृति के मुख्य घटक अब एक होटल बुफे, पूल, कॉकटेल, समुद्र तट, हवाई अड्डे के लाउंज और ब्रान्ज्ड टैन शामिल हैं (उरी और लार्सन 2011: 24)। 'पर्यटन संवेदनशीलता' की यह वृद्धि, जो अपने पर्यटन क्षमता की निगरानी, मूल्यांकन और विकास करने के लिए एक स्थान को सक्षम बनाती है, जिसके परिणामस्वरूप अलास्का, अंटार्कटिका, नाजी व्यवसाय स्थल, मंगोलिया आदि जैसे पर्यटन स्थलों का विकास हुआ है।

समकालीन पर्यटन की एक और विशेषता यह है कि कई पर्यटक एशियाई क्षेत्र से आ रहे हैं जो पहले पश्चिमी यात्रियों द्वारा उपभोग किए गए क्षेत्र थे। एशियाई मध्यम वर्ग की बढ़ती आय ने पश्चिम में उन स्थानों की यात्रा करने की तीव्र इच्छा पैदा की है जो वैश्विक संस्कृति को परिभाषित करते दिखाई देते हैं। विदेशों में शिक्षा, नौकरी या छुट्टियों के लिए मध्यम वर्ग की संख्या में वृद्धि हुई है। अपनी पुस्तक *द टूरिस्ट गेज़ 3.0* (2011) में बॉर्डियू डिस्ट्रिक्शंस ने (1984), उरी और लार्सन के बाद चर्चा की है कि किस तरह सामाजिक वर्ग लगातार संघर्ष करते हैं और शिक्षा, व्यवसाय, वस्तुओं के माध्यम से दूसरों (वर्ग के ऊपर और नीचे के) से स्वयं को अलग करने का प्रयत्न करते हैं और इस तरह दूसरों से अलग जीवन शैली का निर्माण करते हैं। सांस्कृतिक श्रेष्ठता के विभेद के लक्षणों में से एक पर्यटन का समावेश, पर्यटन के लिए निरंतर प्रोत्साहन प्रदान करता है। जैसे उत्तरी भारत पंजाब में , 'विदेशी दौरा' दुल्हन होने के लिए एक अतिरिक्त योग्यता के रूप में मानी जाती है। लोग अपनी सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक उपलब्धि के लिए एक तरह के मूल्य के रूप में उन स्थानों की संख्या की गणना करते हैं, जिसका उन्होंने दौरा किया है। उनके पास जो वस्तुएं हैं वे कार, फर्नीचर जैसी वस्तुएं भी हो सकती हैं और छुट्टियों जैसे अनुभव भी। छुट्टियों का उपभोग एक विशेषता है जिसने इस वर्ग और सांस्कृतिक भेदभाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह कहा जा सकता है कि समकालीन पर्यटन ने एक प्रतीकात्मक मूल्य प्राप्त किया था। इयान मुंट और मार्टिन मावफोर्थ (2016: 125) ने अपनी पुस्तक *टूरिज्म एंड सस्टेनेबिलिटीः डेवलपमेंट, ग्लोबलाइजेशन एंड न्यू टूरिज्म इन द थर्ड वर्ल्ड* में दिखाया है कि विभिन्न सामाजिक वर्ग कैसे पर्यटन का उपभोग करते हैं जो कि एक शोध का क्षेत्र है।

इसके अतिरिक्त, एक और महत्वपूर्ण पहलू है, जिसे आज के वैश्वीकृत दुनिया में पर्यटन अध्ययन में ध्यान देने की आवश्यकता है, वह **निरंतरता और सतत विकास** का मुद्दा है। पर्यावरण और विकास 1987 पर ब्रुन्डलैंड आयोग के बयानों के बाद से, सतत विकास को विकास के रूप में परिभाषित किया गया है जो वर्तमान पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए भावी पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा किए बिना उनकी जरूरतों को पूरा करता है। यह एक दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार किया गया है जो पर्यावरणीय गुणवत्ता के साथ–साथ आर्थिक भलाई के सह–अस्तित्व को दर्शाता है।

जब हम निरंतर (दीर्घकालिक) पर्यटन की बात करते हैं, तो यह सुझाव देता है कि पर्यटन को बनाए रखना चाहिए, लेकिन यह एक बहुत ही संकीर्ण दृष्टिकोण है। इसलिए, यह प्रस्तावित है कि पर्यटन को सतत विकास की दिशा में योगदान देना चाहिए। सतत विकास की सोच यह है कि पर्यटन को मौजूदा अर्थव्यवस्था में डाला जाना चाहिए, ना कि अर्थव्यवस्था को विस्थापित करना चाहिए यानी पर्यटन को अर्थव्यवस्था में विविधता लाने में मदद करनी चाहिए, ना कि एक क्षेत्र को दूसरे द्वारा प्रतिस्थापित करना चाहिए। सतत विकास और पर्यटन नियोजन पर काफी चर्चा के बावजूद यह देखा गया है कि सिद्धांत और व्यवहार के बीच पर्याप्त अंतर है।

पर्यटन योजना और प्रबंधन

अधिकांश पर्यटन योजनाएं आगंतुकों की संख्या बढ़ाने या पर्यटकों को इस विश्वास के साथ आकर्षित करने के लिए लक्ष्य निर्धारित करती हैं कि पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने पर स्थानीय समुदाय को लाभ होगा। भारत जैसे विकासशील देशों में, विकास की दिशा तय करने वाले मास्टर प्लान पर निरंतर जोर दिया जा रहा है। ये योजनाएं अक्सर बाहरी सलाहकारों द्वारा बनाई जाती हैं और किसी विशेष क्षेत्र के पर्यटन उद्योग की क्षमता के बहाने बाहरी निवेशों को आकर्षित करती हैं।

लाभ–लागत विश्लेषण, जो अक्सर पर्यटन नियोजन परियोजनाओं में नियोजित होता है, जो किसी विशेष क्षेत्र में पर्यटन परियोजना के निहितार्थ तय करता है, को आदर्श रूप से आर्थिक, सामाजिक–सांस्कृतिक और पर्यावरणीय लाभों को जोड़ना चाहिए और स्थिरता का आकलन करना चाहिए। उदाहरण के लिए, आर्थिक लाभों का मूल्यांकन मात्रात्मक रूप से किया जा सकता है लेकिन पर्यावरणीय प्रभावों या सामाजिक चिंताओं को एक गुणात्मक मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। परियोजना का मूल्यांकन पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के लिए बढ़ती चिंताओं के समाधान पर केंद्रित होना चाहिए। जैसा कि अधिक से अधिक विकासशील /तीसरी दुनिया के देशों को पर्यटन के क्षेत्रों में लाया जाता है, वैश्विक पर्यावरण पर चिंता बढ़ रही है। पर्यावरण, विकास और पर्यटन की स्थिरता पर चर्चा को महत्व मिला है। इसके लिए कुछ कदम उठाए जाने चाहिए और पर्यटन विकास की योजना को ऐसे तरीकों से तैयार किया जाना चाहिए ताकि यह नकारात्मक प्रभावों को कम कर सके और साथ ही साथ सकारात्मक प्रभावों को बढ़ा सके। सतत विकास तब तक नहीं होगा जब तक कि कुछ मानदंडों का ध्यान नहीं रखा जाता है अर्थात् न्यायसंगतता और दक्षता, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक अखंडता और पारंपरिक संस्थानों की निरंतरता। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि, स्थायी पर्यटन और इसके विकास और नियोजन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिएः

1. *पारिस्थितिक अखंडता* – पर्यटन गतिविधियों को क्षेत्र की पर्यावरणीय क्षमताओं के अनुकूल होना चाहिए और भूमि, जल, वायु और वनस्पति जैसी जीवन समर्थन प्रणालियों को बनाए रखने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए।

2. *सांस्कृतिक अखंडता* – पर्यटन को पर्यटन की नीति के माध्यम से धर्म, कला और संस्थानों में व्यक्त संस्कृति को विकसित करने, बढ़ाने और संरक्षित करने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए।

3. *समुदाय* – प्रत्यक्ष रूप से या परोक्ष रूप से पर्यटन व्यवसायों में भाग लेने के लिए और साथ ही साथ शिल्प उद्योग और कृषि गतिविधियों का समर्थन करने के लिए स्थानीय समुदाय को अवसर प्रदान किए जाने चाहिए ।

4. *संतुलन* – कृषि और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में अर्थवयवस्था और पर्यावरण के बीच सन्तुलन बनाये रखना चाहिए। पर्यटक क्षेत्रों की सावधानीपूर्वक स्थानीय योजना उनके संसाधन आधार के अनुरूप होनी चाहिए।

5. *जीवन की गुणवत्ता में समानता और वृद्धि* – पर्यटन का लाभ स्थानीय समाज तक पहुंचना चाहिए और जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

1. पर्यटन अध्ययन में चर्चा किए गए 'स्थानीय' शब्द का अर्थ बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. आज की वैश्वीकृत दुनिया में समकालीन पर्यटन के स्वरूप को रेखांकित करें।

.....

.....

.....

3. सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने पर्यटन उद्योग को कैसे प्रभावित किया है ?

.....

.....

.....

4. उन पहलुओं को संक्षेप में बताएं जो स्थायी पर्यटन और इसके विकास और नियोजन को ध्यान में रखते हैं।

.....

.....

.....

10.3 पर्यटन मानवविज्ञान की नई दिशाएँ

आज की वैश्वीकृत दुनिया में पर्यटन के बदलते स्वरूप पर उपरोक्त चर्चा से पता चलता है कि पर्यटन की मांग 1990 के दशक से तेजी से विकसित हुई है और पर्यटन उद्योग को प्रभावित करने वाले कारकों की पूरी श्रृंखला को अभूतपूर्व तरीके से बदल रही है। पिछली आधी सदी में पर्यटन काफी बढ़ा है और यह दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग बन गया है। इस उद्योग का गतिशील और बहुआयामी चरित्र और वैश्वीकरण का अनुभव जब एक साथ लिया जाता है तो एक नए विश्लेषण की मांग करता है।

यह देखा गया है कि पर्यटन के प्रभाव जटिल और विरोधाभासी हैं। विशेष रूप से विकासशील देशों में आर्थिक विकास को प्राप्त करने के लिए एक विधि के रूप में पर्यटन की वांछनीयता ने कई प्रश्न उठाए हैं जिसके परिणामस्वरूप मानवविज्ञानी और सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा प्रभाव का मूल्यांकन अध्ययन किया गया है। मानवविज्ञानी द्वारा पूछा गया मुख्य प्रश्न था, *'किसके लिए विकास? '* रिसॉर्ट्स या लक्जरी होटल या गोल्फ कोर्स जो बनाए गए हैं, *'वे कैसे स्वदेशी /स्थानीय आबादी को लाभान्वित करेंगे? '*। एक और सवाल जो उठाया जाता है, वह यह है कि *'स्थानीय समुदाय पर्यटन उद्योग को कैसे देखते हैं?* इन चर्चाओं से कुछ प्रमुख बदलाव आए और स्थानीय भागीदारी, पारिस्थितिक सतत्ता, सांस्कृतिक अखंडता और पर्यावरण शिक्षा के मुद्दों को सबसे आगे रखा गया।

मानवविज्ञानी तेजी से अकादमिक पक्ष से अधिक व्यवहारिक पक्ष में चले गए हैं और पर्यटन के बारे में अधिक बारीक दृष्टिकोण सामने ला रहे हैं, जिसमें इसे एक रणनीति के रूप में देखा जाता है जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम होते हैं। नया दृष्टिकोण उन तरीकों को भी प्रदर्शित करता है जिसमें उद्योग की क्षमता पर समझौता किए बिना अपने सैद्धांतिक ज्ञान और क्षेत्र के अनुभव के साथ मानवविज्ञानी पर्यटन विकास परियोजनाओं के नकारात्मक प्रभावों को बेअसर करने में योगदान कर सकते हैं। स्थानीय मानव सदस्यों, पर्यटकों, ट्रैवल एजेंटों और सामुदायिक योजनाकारों के विभिन्न दृष्टिकोणों को व्यवहारिक मानवविज्ञानी द्वारा लाया गया है। ये नए परिप्रेक्ष्य न केवल एक नया

दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, बल्कि पर्यटन अध्ययन और स्थायी पर्यटन प्रथाओं को भी गति प्रदान करते हैं।

व्यावहारिक मानवविज्ञानी दृढ़ता से मानते हैं कि कोई भी लागू परियोजना स्थानीय समुदाय की भागीदारी के बिना सफल नहीं हो सकती है। स्थानीय निवासियों को एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करने की अनुमति देकर, मानवविज्ञानी विशिष्टताओं अर्थात्, स्थानीय क्षेत्रों के अनुकूलित मूल्यांकन और विश्लेषण की बात करते हैं। वे स्थानीय आबादी के विशिष्ट इतिहास, राजनीतिक और सामाजिक तत्वों की पहचान करने में योजनाकारों की मदद करते हैं और सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में पर्यटन योजना और विकास की पहल को निर्देशित करने में मदद कर रहे हैं। व्यावहारिक मानवविज्ञानी सरकारी एजेंसियों के सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे हैं और वैकल्पिक पर्यटन के नए रूपों की शुरुआत भी की है जहां पारिस्थितिक और सांस्कृतिक अखंडता से समझौता नहीं किया जाता है और आर्थिक लाभ भी समुदाय में प्रवाहित होते हैं।

आम तौर पर परिभाषित रूप से वैकल्पिक पर्यटन में 'पर्यटन के रूप शामिल होते हैं जो प्राकृतिक, सामाजिक और सामुदायिक मूल्यों के अनुरूप होते हैं और जो मेजबान और मेहमानों दोनों को सकारात्मक और सार्थक बातचीत और साझा अनुभवों का आनंद लेने की अनुमति देते हैं '(ईडिंगटन और स्मिथ 1992: 3)। पर्यटन के इस नए रूप ने उन शोधकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है जो संरक्षण और विकास को जोड़ने के मुद्दे को लेकर चिंतित हैं।

वैकल्पिक पर्यटन और भविष्य की संभावनाएं

'ग्रीन टूरिज्म','कॉटेज टूरिज्म','कल्चर टूरिज्म', 'इकोटूरिज्म', 'सस्टेनेबल टूरिज्म' के अतरिक्त पर्यटन में अनेक धाराएं उभर रही है जिनमें मेडिकल टूरिज्म, जेलियो टूरिज्म (अफ्रिका,अमेजन क्षेत्र में),सेक्स टूरिज्म, अंतरिक्ष पर्यटन, ग्रामीण एवं अनुभवजन्य पर्यटन के साथ रोमांचयुक्त, क्रूज, स्वास्थ्य, खेल, फिल्म, भोजन, जादू , युद्ध तथा आपदा पर्यटन जैसी नई शब्दावली का प्रयोग जर्नल्स, टूरिस्ट ब्रोशर और विज्ञापनों में नए सूचना संपन्न उपभोक्ताओं से अपील करने के लिए किया जाता है। पहले ही पर्यटन के वैकल्पिक रूपों को प्रोत्साहित किया गया था और यह दावा किया गया था कि ये वैकल्पिक रूप उन समस्याओं के लिए एक उत्तर थे जो पारंपरिक जन पर्यटन के परिणामस्वरूप होने वाली अस्थिर गतिविधियों के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई थीं। हालांकि, पर्यटन के प्रभावों के अध्ययनों से पता चला है कि पर्यटन के ये वैकल्पिक रूप समुदाय पर आधारित हैं और प्राकृतिक स्थलों और मेजबान आबादी की सांस्कृतिक परंपराओं की रक्षा करते हैं, फिर भी हमारे पास इस पर पर्याप्त मानवशास्त्रीय अध्ययन का अभाव है। पर्यटन के वैकल्पिक रूपों को प्रोत्साहित किया जा रहा है जो प्राकृतिक, सामाजिक और सामुदायिक मूल्यों के अनुरूप हैं जो मेजबान और मेहमानों दोनों को एक आकर्षक अनुभव का आनंद लेने की अनुमति देता है। *द जर्नल ऑफ इकोटूरिज्म* और *द जर्नल ऑफ सस्टेनबल टूरिज्म* ने वैकल्पिक पर्यटन की संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया है। उदाहरण के लिए, इकोटूरिज्म जिसने आज व्यापक रूप से ध्यान आकर्षित किया है उसे पर्यटन के रूप में देखा जाता है जो कि एक क्षेत्र के प्राकृतिक इतिहास से प्रेरित है जिसमें इसकी स्वदेशी संस्कृतियां शामिल हैं। एक क्षेत्र के प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के लिए इकोटूरिस्ट की सराहना न केवल स्थानीय संरक्षण प्रयासों के लिए राजस्व में योगदान करती है, बल्कि स्थानीय निवासियों को आर्थिक अवसर भी प्रदान करती है। इसका अर्थ है कि मानवविज्ञानी द्वारा किया गया अनुप्रयुक्त अनुसंधान पर्यटन परियोजनाओं की योजना और कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण हो गया है।

पर्यावरण विशेषज्ञ और संरक्षणवादी (जैसे हनी 1999, लिंडबर्ग 1991, व्हेलन 1991) इस बात को लेकर आशान्वित हैं कि स्थानीय निवासियों की आर्थिक जरूरतों को पूरा करते हुए पारिस्थितिकी संरक्षण प्रकृति की रक्षा करने में मदद कर सकता है। पर्यटन में बुनियादी ढांचे की बढ़ी हुई स्थानीय भागीदारी और स्थानीय स्वामित्व को महत्व मिला है और स्थानीय समुदाय पर्यटन रणनीतियों की योजना बनाने और नए पर्यटन आकर्षण विकसित करने के लिए सरकारी एजेंसियों, गैर–सरकारी संगठनों और निजी टूर कंपनियों के साथ साझेदारी कर रहे हैं। पर्यटन के क्षेत्र में स्थानीय भागीदारी का भविष्य में मानवविज्ञानी द्वारा विश्लेषण किया जाना चाहिए।

मानवविज्ञानी इस भूमिका में कुशल हैं और पर्यटक विकास को एक समुदाय–आधारित परियोजना बना सकते हैं। वे शोध रूपरेखा बना सकते हैं, मोटे तौर पर रूपरेखा, जिसके भीतर नीति निर्माता और विकास विशेषज्ञ काम कर सकते हैं। समुदाय के दृष्टिकोण और मूल्यांकन के आधार पर, व्यावहारिक मानवविज्ञानियों की भूमिका समुदाय के मुद्दों को सबसे आगे रखना है। एक बार समुदाय की स्थिति स्थापित हो जाने के बाद योजना और नीतियों को अधिक स्थायी और सतत पर्यटन के लिए रखा जा सकता है। मानवविज्ञानियों से प्राप्त निरंतर मार्गदर्शन जो मध्यस्थों के रूप में कार्य कर सकते हैं, उन्हें सामूहिक व्यवसायों के उद्देश्य से रचनात्मक समूहों को उत्पन्न करने के लिए स्थानीय कौशल और ऊर्जा लगाने की मांग की जानी चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

5. वर्तमान में पर्यटन का वर्णन करने में उपयोग होने वाली कुछ शब्दावली को सूचीबद्ध करें।

.....

.....

.....

.....

6. ऐसे कौन से कारक हैं जो स्थायी (सतत) पर्यटन प्रथाओं को विकसित करने में मदद कर सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

7. पर्यटन की बदलती प्रकृति स्पष्ट करें और व्यावहारिक मानवविज्ञानी इसके लिए कैसे योगदान कर सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

10.4 सारांश

इस इकाई में हमने उन सिद्धान्तों पर गौर करने का प्रयत्न किया है जो अब पर्यटन अध्ययन पर केंद्रित हैं। पर्यटन और विकास के लिए ऐसे बहुत सारे क्षेत्र हैं जहाँ मानवविज्ञानिकों को ध्यान देने की आवश्यकता है। हमने देखा है कि कई नई शब्दावली सामने आ रही हैं, इसलिए दीर्घकालिक परियोजना के रूप में पर्यटन को बनाए रखने और विकसित करने के लिए वर्तमान समय के विचारों को भी जोड़ना महत्वपूर्ण हैं।

10.5 संदर्भ

अप्पादुरै , ए. (1996). *मोडर्नीटी एट लोर्ज : कल्चरल डाईमेन्शन ऑफ ग्लोबलाईजेशन.* मिनियापोलिसः युनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस.

बाऊमन,जेड (1998). *ग्लोबलाईजेशन : द ह्युमन कन्सीक्वेंसेज.* कैम्ब्रिजः पॉलिटी प्रेस.

बॉर्डियू, पी. (1984). *डिस्टिंक्शन.* लंदनः रूटलेज एंड केगन पॉल.

बर्न्स, पी. एंडहोल्डन, ए. (1995). *टूरिज्म : ए न्यू पर्स्पेक्टीव.* न्यू जर्सीः प्रेंटिस हॉल, एंगल वुड क्लिफ्फ.

केयर्नक्रॉस, एफ. (1997). *द डेथ ऑफ़ डिस्टेंसः हाउ द कम्यूनिकेशंस रिवोल्यूशन चेंज आवर लाईव्स.* यूएसएः हार्वर्ड बिजनेस स्कूल प्रेस.

ईडिंगटन, डब्ल्यू.आर. एंड स्मिथ, वीएल (1992). (संपा). *टूरिज्म आल्टर्नेटीव्सः पोटेंशिअल एंड प्रोब्लम्स इन द डेवलोप्मेंट ऑफ़ टूरिज्म.* फिलाडेल्फियाः युनिवर्सिटी पेन. प्रेस.

एरिकसेन, टी.एच. (2003). 'क्रियोलाइज़ेशन एंड क्रिएटिविटी'. *ग्लोबल नेटवर्क,* 3.3, 223–37.

गिडेंस,ए. (1990). *द कन्सीक्वेंसेज ऑफ़ मोडर्नीटी.* स्टैनफोर्ड,सी ए : स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

हनी, एम. (1999). *इको टूरिज्म एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट : हू ऑन पेराडाइस ?* वाशिंगटन डीसीः आईलैंड प्रेस.

इन्डा, जे. एंड रोज़ालडो, आर. (2002). *द एंथ्रोपोलॉजी ऑफ़ ग्लोबलाइज़ेशनः ए रीडर.* माल्डेनः ब्लैकवेल पब्लिशर्स.

केर्नी, एम. (1995). 'द लोकल एंड द ग्लोबलः द एंथ्रोपोलॉजी ऑफ़ ग्लोबलाइज़ेशन एंड ट्रांसनेशनलिज़्म'. *एनुअल रिव्यू ऑफ़ एंथ्रोपोलॉजी,* वॉल्यूम.24, पृ.सं. 547–565.

लिंडबर्ग, के. (1991). *ईकोनोमिक पोलिसीस फॉर मेक्सिमाईजिंग नेचर टूरिज्म कांस्टीट्यूशन टू सस्टेनेबल डेवलपमेंट इन बेलीज.*वाशिंगटन डीसीः वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड.

मार्कस, जी. (1995). 'एथनोग्राफी इन / ऑफ़ द वर्ल्ड सिस्टमः द इमर्जेंस ऑफ़ मल्टी–साइडेड एथ्नोग्राफ़ी '. *एनुअल रिव्यू ऑफ़ एंथ्रोपोलॉजी,* 24: 95–117.

मुंट, आई. एंड मोवफर्थ, एम. (2016). *टूरिज्म एंड सस्टेनेबिलिटी,डेवलपमेंट,ग्लोबलाईजेशन एंड न्यू टूरिज्म इन द थर्ड वर्ल्ड*(चौथा संस्करण). न्यूयॉर्कः रूटलेज.

नैश, डी (1989). 'टूरिज्म इन द फोर्म ऑफ इम्पेरिलीज्म' इन वी.एल. स्मिथ (संपा) *होस्ट्स एंड गेस्ट्सः द एंथ्रोपोलॉजी ऑफ टूरिज्म.* फिलाडेल्फियाः युनिवर्सिटी ऑफ पेंसिल्वेनिया, पृ.सं 39–52.

रॉबर्टसन, आर. (1992). *ग्लोबलाईजेशन : सोशल थ्योरी एंड ग्लोबल कल्चर.* लंदनः सेज.

शमलेगर, डी.एंड कार्सन डी. (2008). 'ब्लॉग्स इन टूरिज्मः चेंजिंग अप्रोच टू इन्फॉर्मेशन एक्सचेंज'. *जर्नल ऑफ़ वेकेशन मार्केटिंग,* 14 (2): 99–110.

उर्री, जे. (1990). *द टूरिस्ट गेज़ः लेजर एंड ट्रेवल इन कंटेंपररी सोसाइटीज़.* लंदनः सेज पब्लिकेशंस.

उर्री, जे. एंड लार्सन, जे (2011). *द टूरिस्ट गेज़ 3.0.* लंदनः सेज पब्लिकेशंस.

व्हेलन, टी.(संपा) (1991). *नेचर टूरिज्म : मैनेजिंग फॉर द एनवायरोंमेंट.* वाशिंगटनः आईलैंड प्रेस.

10.6 आपकी प्रगति जांचने के लिए उत्तर/संकेत

1. उत्तर हेतु अनुभाग 10.2 देखें।
2. अनुभाग 10.2 देखें।
3. अनुभाग 10.2 देखें।
4. उत्तर हेतु अनुभाग 10.2 देखें।
5. अनुभाग 10.3 देखें।
6. उत्तर हेतु अनुभाग 10.3 देखें।
7. अनुभाग 10.3 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सुझावित अध्ययन

बरनार्ड, एलन. (2007). *सोशल एंथ्रोपोलाजी : इंवेस्टीगेटिंग ह्यूमन सोशल लाईफ.* नई दिल्ली: वीवा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड.

बर्नर, ई. (2005).*कल्चर आन टूअर.* शिकागो : शिकागो युनिवर्सिटी प्रेस.

क्रिक, एम. (1995). 'द एंथ्रोपोलॉजिस्ट विद टूरिस्ट: एन आइडेंटिटी इन क्वेश्चन' एम. एफ. लैनफैंट, जे.बी.एलकॉक एंड ई.एम. ब्रूनर(संपा)इंटरनेशनल टूरिज्म: आइडेंटिटी एंड चेंज. लंदन:सेज प्रकाशन.पृ.सं 205–223.

कोहेन, ई. (1974).'हू इज टूरिस्ट ?': अ कॉसेप्चुअल क्लासिफिकेशन', *सोशियोलॉजिकल रिव्यू.* 22: 527–55.

(1979). 'सोशियोलॉजी आफ टूरिज्म'. स्पेशल इश्यू. *एनल्स आफ टूरिज्म रिसर्च,* 6 (1 एंड 2)

ईडिंगटन, डब्ल्यू. आर.एंड वी.एल.स्मिथ. (1992). *टूरिज्म अल्टरनेटिव्स: पोटेंशियल एंड प्रॉब्लम इन द डेवलपमेंट आफ टूरिज्म.* (संपा). फिलाडेल्फिया: यूनिवर्सिटी पेंसिल्वेनिया प्रेस.

एरिकसेन, थॉमस हायलैंड. (2015). *स्मॉल प्लेसेज,लार्ज इश्यूज: एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंड कल्चरल एंथ्रोपोलाजी* (चौथा संस्करण). प्लूटो प्रेस.

ग्रबर्न, एन. (1983). ''एंथ्रोपोलॉजी ऑफ टूरिज्म''. *एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च.* 10: 9–33.

इंगोल्ड, टिम. (2018). *एंथ्रोपोलाजी : वाय इट मैटर्स.* कैम्ब्रिज, यूके: पॉलिटी प्रेस.

लेइट एन., स्वैन एम.बी. (2014) ''एंथ्रोपोलाजी, टूरिज्म.'' इन: जाफरी जे., जिओ एच. (संपा) *एनसाइक्लोपीडिया ऑफ टूरिज्म.* स्प्रिंगर, चाम.

लेइट, एन., एंड एन. ग्रबर्न. (2009).''*एथ्रोंपोलॉजिकल इटंरवेंशन इन टूरिज्म स्टडीज. इन द सेज हैंडबुक ऑफ टूरिज्म स्टडीज,''* टी. जमाल एंड एम. रॉबिन्सन,(संपा),पृ.सं.33–64. लंदन:सेज.

स्मिथ, वी.(संपा), (1977). *होस्ट्स एंड गेस्ट्सः द एंथ्रोपोलॉजी आफ टूरिज्म.* फिलाडेल्फिया यूनिवर्सिटी आफ पेंसिल्वेनिया प्रेस.